राष्ट्र नायकः प्रो. डॉ. के. पी. यादव

प्रोफे. डॉ. एस. मोहन कुमार

राष्ट्र नायक: प्रो. डॉ. के. पी. यादव

(एक दूरदर्शी की यात्रा की गहन दृष्टि)

प्रोफे. डॉ. एस. मोहन कुमार

JUPITER PUBLICATIONS CONSORTIUM INDIA

कॉपीराइट कथन:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग की प्रतिलिपि, वितरण या प्रसारण किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा — जिसमें फोटोकॉपी करना, रिकॉर्डिंग करना या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक विधियाँ शामिल हैं — बिना प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के नहीं की जा सकती, सिवाय उन संक्षिप्त उद्धरणों के जो आलोचनात्मक समीक्षाओं और कुछ अन्य गैर-व्यावसायिक उपयोगों के अंतर्गत कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत हैं।
अनुमति प्राप्त करने के लिए कृपया निम्नलिखित पते पर प्रकाशक को लिखें:

Jupiter Publications Consortium

22/102, द्वितीय स्ट्रीट, विरुगाम्बक्कम

चेन्नई - 600 092. www.jpc.in.net

ईमेल: director@jpc.in.net

कॉपीराइट पंजीकरण:

इस पुस्तक और इसकी सामग्री को भारत के कॉपीराइट कार्यालय में पंजीकृत करने का उद्देश्य है। इस प्रकाशन या इसके किसी भी भाग का अनधिकृत उपयोग, पुनरुत्पादन या वितरण गंभीर नागरिक और आपराधिक दंड के लिए उत्तरदायी हो सकता है, और कानून के तहत अधिकतम सीमा तक अभियोजन किया जाएगा।

आभार:

किसी भी ट्रेडमार्क, सेवा चिह्न, उत्पाद नाम या नामित विशेषताओं को उनके संबंधित मालिकों की संपत्ति माना गया है और केवल संदर्भ के उद्देश्य से उपयोग किया गया है। यदि इनमें से किसी शब्द का उपयोग किया गया है, तो उसका कोई निहित समर्थन नहीं माना जाना चाहिए।

प्रकाशित:

Jupiter Publications Consortium

25 मार्च, 2025

राष्ट्र नायक: प्रो. डॉ. के. पी. यादव

प्रोफेसर डॉ. एस. मोहन कुमार

कॉपीराइट 2025
© मैजेस्टिक टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस (प्रा.) लिमिटेड
सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN: 978-93-86388-96-4
प्रथम प्रकाशन: 25 मार्च 2025
DOI: www.doi.org/10.47715/978-93-86388-96-4

मूल्य: ₹375/-
पृष्ठों की संख्या: 188

प्रकाशक:
ज्यूपिटर पब्लिकेशन्स कंसोर्टियम
चेन्नई, तमिलनाडु, भारत
ईमेल: director@jpc.in.net
वेबसाइट: www.jpc.in.net

पुस्तक का नाम:
राष्ट्र नायक: प्रो. डॉ. के. पी. यादव

लेखक:
प्रोफे. डॉ. एस. मोहन कुमार

आईएसबीएन: 978-93-86388-96-4
खंड: I
संस्करण: प्रथम

मुद्रित एवं प्रकाशित द्वारा:
ज्यूपिटर पब्लिकेशन्स कंसोर्टियम, चेन्नई, भारत
ईमेल: director@jpc.in.net | **वेबसाइट:** www.jpc.in.net

कॉपीराइट ©2025. सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस प्रकाशन का कोई भी भाग, बिना प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक विधियाँ शामिल हैं, पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता, सिवाय उन संक्षिप्त उद्धरणों के जो आलोचनात्मक समीक्षाओं और कुछ विशिष्ट गैर-व्यावसायिक उपयोगों में कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत हैं।
अनुमति के लिए, कृपया निम्नलिखित पते पर "Attention: Permissions Coordinator" के नाम से प्रकाशक को लिखें:

ज्यूपिटर पब्लिकेशन्स कंसोर्टियम
22/102, सेकेंड स्ट्रीट, विरुगम्बक्कम, चेन्नई – 600092
ईमेल: director@jpc.in.net, **वेबसाइट:** www.jpc.in.net

समर्पण

ज्ञान के प्रकाश वाहकों, सपनों के निर्माताओं और शिक्षा के उन महान योद्धाओं को समर्पित, जो सत्य, ज्ञान और प्रगति की खोज में अपने जीवन को समर्पित करते हैं।

यह पुस्तक **प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव** को समर्पित है—एक दूरदर्शी नेता, एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और एक प्रेरणादायक मार्गदर्शक, जिनकी अटूट निष्ठा ने शिक्षा, अनुसंधान और शैक्षणिक उत्कृष्टता को एक नई ऊंचाई तक पहुंचाया है। उनके विनम्र प्रारंभ से लेकर ज्ञान के प्रकाशस्तंभ बनने तक की यात्रा दृढ़ संकल्प, ईमानदारी और शिक्षा के प्रति अथक प्रतिबद्धता का प्रमाण है। उन्होंने न केवल छात्रों और शोधकर्ताओं बल्कि संपूर्ण संस्थानों के भविष्य को संवारने में अत्यन्त अहम भूमिका निभाई है।

हर उस विद्यार्थी को, जो बड़े सपने देखने का साहस करता है, हर उस शिक्षक को, जो ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करता है, और हर उस नेता को, जो ज्ञान पर आधारित एक समृद्ध विश्व की कल्पना करता है—यह पुस्तक एक अर्पण है, शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास रखने वालों के अडिग संकल्प को समर्पित एक श्रद्धांजलि। यह कृति उभरते हुए बुद्धिजीवियों के लिए एक प्रेरणा बने और यह स्मरण कराए कि सच्चा नेतृत्व शक्ति से नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों पर छोड़ी गई विरासत से परिभाषित होता है।

गहरी कृतज्ञता और सम्मान के साथ,

प्रोफेसर डॉ. एस. मोहन कुमार

- लेखक

भूमिका

शिक्षा वह आधारशिला है, जिस पर समाज का भविष्य निर्मित होता है। यह एक प्रकाशस्तंभ की भांति है, जो प्रगति के मार्ग को आलोकित करता है, बुद्धिमत्ता को पोषित करता है और नवाचार को प्रोत्साहित करता है। ज्ञान की इस महान खोज में शिक्षकों, शोधकर्ताओं और शैक्षणिक नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। ऐसे ही दूरदर्शी नेताओं में से एक **प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव** हैं, जिनका योगदान शिक्षा, अनुसंधान और संस्थागत उत्कृष्टता में अत्यंत प्रशंसनीय है।

यह पुस्तक केवल उनके शैक्षणिक सफर की गाथा नहीं है, बल्कि उच्च शिक्षा प्रणाली पर उनके गहरे प्रभाव का दर्पण भी है। यह उनकी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान उत्कृष्टता और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को प्रस्तुत करती है। मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति के रूप में उनकी नेतृत्व क्षमता, विभिन्न शैक्षणिक और प्रशासनिक भूमिकाओं में उनके योगदान ने शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति को जन्म दिया है।

अपने जीवन के कई दशक उन्होंने शिक्षण, मार्गदर्शन, अनुसंधान और नीति-निर्माण को समर्पित किए हैं, जिससे हजारों छात्रों और शिक्षकों के करियर को संवारने में उनकी अहम भूमिका रही है। उनकी विशेषज्ञता विभिन्न विषयों तक फैली हुई है, और उनकी अकादमिक दृढ़ता ने उन्हें भारत ही नहीं, बल्कि वैश्विक मंचों पर भी सम्मान और प्रतिष्ठा दिलाई है। उनकी लिखी पुस्तकें, शोध प्रकाशन और शैक्षणिक नीतियां विश्वभर के विद्वानों को प्रेरित और मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

उनके नेतृत्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि उन्होंने पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक नवाचारों के साथ जोड़ने की उत्कृष्ट क्षमता दिखाई है। तकनीक-आधारित शिक्षा के पक्षधर होने के नाते, उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग और डेटा साइंस को शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल करने पर बल दिया है। इसके साथ ही, नैतिक नेतृत्व और सुशासन के प्रति उनकी गहरी निष्ठा यह सुनिश्चित करती है कि ज्ञान को ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ वितरित किया जाए।

यह पुस्तक, जो अत्यंत सूक्ष्मता से लिखी गई है, उनके शैक्षणिक दर्शन, उपलब्धियों और दृष्टिकोण का एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत करती है। यह शिक्षा में नेतृत्व के सिद्धांतों, शैक्षिक ढांचे के विकास, और एक सच्चे विद्वान एवं प्रशासक को परिभाषित करने वाले गुणों पर गहन दृष्टि डालती है। यह सिर्फ एक जीवनी मात्र नहीं, बल्कि छात्रों, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक प्रेरणादायक मार्गदर्शिका भी है, जो शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं।

जैसे-जैसे हम तेजी से बदलते तकनीकी युग की ओर बढ़ रहे हैं, प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव जैसे विद्वानों द्वारा सिखाए गए सबक और मूल्य आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में काम करेंगे। उनका शिक्षा के प्रति अडिग समर्पण यह स्मरण कराता है कि जब ज्ञान को सत्यनिष्ठा और उद्देश्य के साथ प्रदान किया जाता है, तो यह न केवल व्यक्तियों को, बल्कि पूरी पीढ़ी को आकार देने की शक्ति रखता है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इस पुस्तक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है कि यह प्रेरित करेगी, शिक्षित करेगी और आजीवन सीखने के प्रति एक नई ऊर्जा का संचार करेगी।

प्राक्कथन

शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है; यह एक परिवर्तनकारी साधन है जो व्यक्तियों, समाजों और राष्ट्रों के भविष्य को आकार देता है। जैसे-जैसे हम तेजी से तकनीकी प्रगति और वैश्विक परिवर्तनों के युग में आगे बढ़ रहे हैं, शिक्षा जगत में दूरदर्शी नेताओं की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। इस संदर्भ में, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव के योगदान शैक्षणिक समुदाय के लिए एक प्रेरणा के रूप में स्थापित हैं। अपने दशकों लंबे विशिष्ट करियर के माध्यम से, प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव ने शैक्षणिक नेतृत्व, अनुसंधान उत्कृष्टता और नवीन शिक्षाशास्त्र के मूल तत्वों को आत्मसात किया है। उनका योगदान उच्च शिक्षा, नीति विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के क्षेत्रों में व्यापक रूप से देखा जाता है। उनकी "सीमाओं से परे शिक्षा" (Education Beyond Boundaries) की विचारधारा ने विश्वभर के छात्रों और विद्वानों को सशक्त बनाया है, जिससे एक निरंतर सीखने और बौद्धिक जिज्ञासा की संस्कृति को बढ़ावा मिला है।

यह पुस्तक उनकी अटूट प्रतिबद्धता, विद्वत्तापूर्ण योगदान और परिवर्तनकारी नेतृत्व का प्रमाण है। एक पोस्ट डॉक्टरेट स्कॉलर के रूप में, जिन्हें उनके सान्निध्य और मार्गदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मैंने स्वयं उनकी दूरदर्शिता, ज्ञान की गहराई और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति उनकी अथक निष्ठा को अनुभव किया है। तकनीक, नवाचार और बहु-अनुशासनिक अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी अंतर्दृष्टि ने शैक्षणिक संस्थानों के लिए नए मानदंड स्थापित किए हैं।

प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव का योगदान सिर्फ पारंपरिक शिक्षा तक सीमित नहीं है। वे नीति निर्माण, प्रत्यायन मानकों और पाठ्यक्रम के आधुनिकीकरण में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं, जो शिक्षा के भविष्य को आकार देने के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनके नेतृत्व में मैट्स विश्वविद्यालय,

रायपुर एक नवाचार, अनुसंधान और उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में उभरा है, जहां छात्र वैश्विक प्रतिस्पर्धी वातावरण में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सशक्त किए जाते हैं।

यह पुस्तक सिर्फ उनकी उपलब्धियों का एक संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह शिक्षकों, छात्रों और नीति-निर्माताओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी है। यह उच्च शिक्षा प्रशासन, अनुसंधान पद्धतियों और 21वीं सदी में विश्वविद्यालयों की बदलती भूमिका पर मूल्यवान दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। आकांक्षी शिक्षाविदों और नेताओं के लिए, यह पुस्तक एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है, जो दूरदर्शी नेतृत्व और शैक्षणिक परिवर्तन के सिद्धांतों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

इस प्राक्कथन को लिखते हुए, मैं प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने न केवल मेरे शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है, बल्कि अपने मार्गदर्शन और नेतृत्व से अनगिनत छात्रों और शोधकर्ताओं को प्रेरित किया है। उनका प्रतिभाओं को निखारने, बदलाव को प्रेरित करने और शिक्षा के मानकों को ऊंचाई देने की क्षमता वास्तव में प्रशंसनीय है।

यह मेरे लिए गर्व और सम्मान की बात है कि मैं इस पुस्तक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ, यह आशा करते हुए कि यह ज्ञान, प्रेरणा और बौद्धिक समृद्धि का स्रोत बने। शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने की दिशा में यह पुस्तक अनगिनत शिक्षकों, विद्वानों और विचारकों को प्रेरित करती रहे।

गहरी प्रशंसा और सम्मान के साथ,

प्रोफेसर डॉ. एस. मोहन कुमार

पोस्ट डॉक्टरेट स्कॉलर - प्रो. डॉ. के. पी. यादव

कुलपति, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर

प्रस्तावना

ज्ञान की यात्रा एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है, जो सभ्यताओं को आकार देती है, दृष्टिकोण को परिष्कृत करती है और मानवता की प्रगति को प्रेरित करती है। शिक्षा के व्यापक क्षेत्र में कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व परिवर्तन के निर्माता के रूप में उभरते हैं, जो संस्थानों का मार्गदर्शन करते हैं, नीतियों को आकार देते हैं और शिक्षा के भविष्य को प्रभावित करते हैं। ऐसे ही एक दूरदर्शी नेता हैं प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव, जिनके उच्च शिक्षा, अनुसंधान और प्रशासन में योगदान ने आधुनिक अकादमिक उत्कृष्टता को नए आयाम दिए हैं।

यह पुस्तक सिर्फ उपलब्धियों का संकलन नहीं है, बल्कि यह लगन, समर्पण और अटूट ज्ञान-साधना की कहानी है। यह एक विद्वान, गुरु और नेता की दृष्टि, दर्शन और अथक प्रयासों को समाहित करती है, जिन्होंने पारंपरिक शिक्षा और आधुनिक वैश्विक आवश्यकताओं के बीच सेतु का निर्माण किया। अपने शैक्षणिक जीवन के माध्यम से, प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव ने उच्च शिक्षा के परिदृश्य में क्रांति ला दी है, जिससे इसे अधिक समावेशी, अनुसंधान-आधारित और तकनीकी रूप से सशक्त बनाया गया है।

एक विद्वान के रूप में उनके शुरुआती दिनों से लेकर मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति के रूप में उनकी भूमिका तक, उनकी कहानी संघर्ष, बौद्धिक परिश्रम और सीखने की अथाह जिज्ञासा का प्रमाण है। उनका डेटा माइनिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, शैक्षणिक सुधार और संस्थागत प्रत्यायन में किया गया कार्य न केवल छात्रों और शिक्षकों के लिए नए मार्ग प्रशस्त कर रहा है बल्कि शिक्षा जगत में अभूतपूर्व मानदंड भी स्थापित कर रहा है। युवा मस्तिष्कों को सशक्त बनाने, अंतःविषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने और

वैश्विक सहयोग बढ़ाने की उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित स्थान दिलाया है।

लेकिन सम्मानों और उपाधियों से परे, यह पुस्तक उनकी नेतृत्व क्षमता का वास्तविक सार प्रस्तुत करती है—एक ऐसा नेतृत्व जो ईमानदारी, नवाचार और शिक्षा की शक्ति में अटूट विश्वास पर आधारित है। यह उनके शिक्षण दर्शन, रणनीतिक पहलों और दूरदर्शी दृष्टिकोण को उजागर करती है, जिन्होंने शैक्षणिक संस्थानों को ज्ञान सृजन और प्रसार के केंद्रों में बदल दिया है।

जब पाठक इस पुस्तक के पृष्ठों में इस यात्रा को अन्वेषित करेंगे, तो वे केवल प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव के जीवन और कार्यों में अंतर्दृष्टि प्राप्त नहीं करेंगे, बल्कि वे यह भी समझेंगे कि कैसे सच्चा नेतृत्व शिक्षा को प्रेरित कर सकता है, नवाचार को बढ़ावा दे सकता है और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को आकार दे सकता है।

यह प्रस्तावना उन सभी को आमंत्रण देती है जो शिक्षा की शक्ति में विश्वास रखते हैं, जो ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाना चाहते हैं, और जो एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जो सीखने, खोज और नवाचार से समृद्ध हो।

आइए, इस पुस्तक को एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में अपनाएं और इसे एक मार्गदर्शक बनाएँ, जिससे हम शिक्षा, अनुसंधान और नीति-निर्माण में नए कीर्तिमान स्थापित कर सकें।

- **प्रोफे. डॉ. एस. मोहन कुमार**

अनुक्रमणिका

1. **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा**
    - बचपन और पालन-पोषण
    - शिक्षा की यात्रा
2. **व्यावसायिक यात्रा**
    - प्रारंभिक शिक्षण वर्ष
    - क्रांतिकारी अनुसंधान योगदान
    - अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन
3. **समाज और राष्ट्र में योगदान**
    - नीति समर्थन और राष्ट्रीय विकास
    - नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा
    - सामाजिक पहल और मानवतावादी प्रयास
4. **व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि और विरासत**
    - शिक्षा और नेतृत्व पर दृष्टिकोण
    - चुनौतियाँ और विजय
    - युवाओं के लिए संदेश
5. **एक जीवंत विरासत**
    - उपलब्धियों का दृश्य दस्तावेज़
    - पुरस्कार और सम्मान
    - चिंतन और भविष्य की दिशा
6. **ग्रंथ सूची**

अध्याय 1: प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

"ज्ञान केवल अर्जन का विषय नहीं, यह आत्म-विकास और समाज-निर्माण का साधन है।"
("Knowledge is not merely about acquisition; it is a tool for self-growth and societal transformation.")

"संघर्षों से घबराने वाले कभी इतिहास नहीं रचते, बल्कि वे उन्हें अवसर में बदलते हैं।"
("Those who fear struggles never create history; they transform them into opportunities.")

अध्याय 1: महानता की जड़ें – बचपन और पालन-पोषण

परिचय

हर महान व्यक्ति का निर्माण उसके प्रारंभिक जीवन के अनुभवों, संघर्षों और सीखों से होता है। **प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव** के लिए भी यही सच था। उनका असाधारण सफर एक विनम्र लेकिन बौद्धिक रूप से समृद्ध वातावरण में प्रारंभ हुआ। **20 सितंबर 1972** को भारत में जन्मे, उन्होंने बचपन से ही अनुशासन, परिश्रम और ज्ञान के प्रति अटूट जिज्ञासा के मूल्यों को आत्मसात किया।

बचपन और प्रारंभिक शिक्षा

एक ऐसे समय में जब शिक्षा को विशेषाधिकार माना जाता था, **करुणेश प्रताप यादव** बचपन से ही एक अलग प्रतिभा के रूप में पहचाने गए। उनकी जिज्ञासा, सीखने की लालसा और समस्याओं को हल करने की प्रवृत्ति ने उन्हें अपने समकालीनों से अलग बना दिया। उनके परिवार ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

उनका बचपन ग्रामीण भारत की चुनौतीपूर्ण लेकिन जीवंत पृष्ठभूमि में बीता। संसाधनों की कमी के बावजूद, उनकी महत्वाकांक्षा कभी कमजोर नहीं पड़ी। आधुनिक शैक्षिक उपकरणों की सीमित उपलब्धता के बीच भी वे किताबों में डूबे रहते थे, अपने आयु वर्ग से कहीं अधिक उन्नत विषयों को पढ़ने और समझने की कोशिश करते थे। उनके शिक्षकों ने उनकी इस विलक्षण प्रतिभा को जल्दी ही पहचान लिया और अक्सर उनकी तार्किक सोच, अवधारणाओं की गहरी पकड़ और स्पष्ट अभिव्यक्ति की क्षमता की प्रशंसा करते थे।

ज्ञान की तलाश और प्रेरणाएँ

बचपन में ही वे ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रंथों से बहुत प्रभावित हुए। **प्राचीन भारतीय ग्रंथों की ज्ञान परंपरा, महान नेताओं की संघर्षपूर्ण यात्रा, वैज्ञानिकों और दार्शनिकों की क्रांतिकारी सोच** – इन सभी ने उनके भीतर एक अलग ही ऊर्जा भर दी। विशेष रूप से, विज्ञान और समाज के परस्पर संबंध ने उन्हें आकर्षित किया, जो उनके आगे के शैक्षणिक सफर की दिशा निर्धारित करने वाला था।

कम उम्र से ही उन्होंने अवलोकन की गहरी समझ और समस्याओं के समाधान की स्वाभाविक प्रवृत्ति प्रदर्शित की। कभी घर के उपकरणों को खोलकर उनकी संरचना को समझने की कोशिश करते तो कभी बड़े-बुजुर्गों के साथ विचार-विमर्श में शामिल होते। उनकी विश्लेषणात्मक सोच उनके भविष्य के शोधकर्ता और शिक्षाविद् बनने की पूर्वसूचना थी।

परिवार का सहयोग और मूल्यों की शिक्षा

हालाँकि उनके परिवार को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, फिर भी उनके माता-पिता ने उनकी शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उन्होंने बचपन से ही यह सिखाया कि **ज्ञान ही सबसे बड़ी संपत्ति है और दृढ़ निश्चय से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है**। उनके पिता, जो सिद्धांतों के पक्के थे, हमेशा महान दूरदर्शियों की कहानियाँ सुनाकर उन्हें प्रेरित करते। उनकी माता का स्नेह और नैतिक समर्थन उनके आत्मविश्वास को बनाए रखने में सहायक रहा।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा समर्पण और कठोर परिश्रम का प्रमाण थी। वे हमेशा किताबों में डूबे रहते, जटिल विषयों को समझने और विश्लेषण करने में अपनी रुचि दिखाते। **गणित, भौतिकी, साहित्य और इतिहास** जैसे विषयों में उनकी विशेष रुचि थी। उनकी विलक्षण स्मरणशक्ति और जटिल समस्याओं को हल करने की क्षमता ने उन्हें अपने शिक्षकों और सहपाठियों के बीच सम्मान दिलाया।

एक प्रेरणादायक क्षण: ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का प्रभाव

उनके बचपन के सबसे प्रेरणादायक क्षणों में से एक था **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम** के कार्यों से परिचित होना। भारत के इस महान वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति की सोच ने उनके भीतर यह विश्वास पैदा किया कि **विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए**। इस प्रेरणा ने उनके मन में यह दृढ़ संकल्प जगा दिया कि वे शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देंगे।

प्रतिभा का प्रदर्शन और आत्मविकास

स्कूल की पढ़ाई के दौरान उन्होंने **प्रतियोगिताओं, वाद-विवाद और विज्ञान प्रदर्शनियों** में सक्रिय भागीदारी निभाई। इन आयोजनों से उन्हें न केवल अपनी प्रस्तुति कौशल को निखारने का अवसर मिला, बल्कि वे कक्षा के बाहर बौद्धिक चर्चाओं में भी संलग्न हुए। वे केवल ज्ञान अर्जन तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि अपने सहपाठियों के साथ भी अपने विचार साझा करने और उनके बौद्धिक विकास में योगदान देने लगे।

निष्कर्ष: एक दूरदर्शी व्यक्तित्व का निर्माण

प्रोफेसर डॉ. के. पी. यादव के प्रारंभिक जीवन की यह कहानी **महत्वाकांक्षा, दृढ़ संकल्प और ज्ञान के प्रति अटूट समर्पण** का प्रतीक है। अनुशासन, जिज्ञासा और संघर्ष की नींव पर टिका उनका यह सफर, आने वाले वर्षों में उनकी असाधारण उपलब्धियों का आधार बना।

एक छोटे से गाँव से निकलकर शिक्षा जगत के शीर्ष पदों तक की उनकी यात्रा **इस बात का प्रमाण है कि सही दृष्टिकोण और समर्पण के साथ कोई भी व्यक्ति असंभव को संभव बना सकता है**। इस अध्याय ने उनकी बचपन की जड़ों को उजागर किया, अब अगले अध्याय में हम देखेंगे कि कैसे उनके शिक्षा के प्रति जुनून ने उन्हें एक उल्लेखनीय अकादमिक यात्रा की ओर अग्रसर किया।

अध्याय 2: शैक्षणिक उत्कृष्टता – शिक्षा के सफर की यात्रा

परिचय

शिक्षा केवल एक लक्ष्य प्राप्त करने का साधन नहीं थी; **प्रोफेसर डॉ. के. पी.** यादव के लिए यह एक अभूतपूर्व जुनून और आजीवन समर्पण था। उनके स्कूली जीवन की विशेषता थी निरंतर मेहनत, उत्कृष्टता की भूख और ज्ञान के प्रति अटूट समर्पण। प्रारंभ से ही वे एक प्रतिभाशाली छात्र थे, जिन्होंने हमेशा अपनी कक्षाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया और अपने शिक्षकों और सहपाठियों के बीच सम्मान अर्जित किया।

शिक्षा के प्रारंभिक चरण

1987 में उन्होंने हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की, जहां उन्होंने गणित और विज्ञान में असाधारण क्षमता का प्रदर्शन किया। उनकी जटिल समस्याओं को आसानी से हल करने की क्षमता ने उन्हें दूसरों से अलग बना दिया और वे अपने सहपाठियों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शक बन गए।

1989 में, उन्होंने इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की, जिससे तार्किक सोच और विश्लेषणात्मक क्षमताओं की उनकी नींव और मजबूत हुई। ये कौशल आगे चलकर उनके शोध और अकादमिक करियर के सबसे बड़े स्तंभ बने।

तकनीकी शिक्षा में प्रवेश

उनकी उच्च शिक्षा की यात्रा उतनी ही सहज थी, जितनी प्रभावशाली। उन्होंने एक प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थान में प्रवेश प्राप्त किया और 1996 में कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग (B.Tech.) में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। यह उनके

जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण था, जहां उन्होंने नई तकनीकों, एल्गोरिदम और संगणन सिद्धांतों में गहन विशेषज्ञता विकसित की।

उस समय कंप्यूटर साइंस तेजी से विकसित हो रही थी, और वे इसके असीम संभावनाओं की ओर आकर्षित हुए। उन्होंने देखा कि यह क्षेत्र उद्योगों और समाजों को पूरी तरह से बदलने की शक्ति रखता है, और उन्होंने इस दिशा में अपने ज्ञान को और विकसित करने का निर्णय लिया।

पी जी डी बी एम, एम.टेक. और गहन शोध

2000 में पी. जी. डी. बी. एम., **और** 2004 में उन्होंने मास्टर ऑफ टेक्नोलॉजी (M.Tech.) की डिग्री पूरी की। उनके परास्नातक अध्ययन की विशेषता थी कंप्यूटर इंजीनियरिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वायरलेस संचार में व्यापक शोध।

इसी अवधि में उन्होंने क्रांतिकारी विचारों का निर्माण शुरू किया, जो बाद में विभिन्न तकनीकी अनुप्रयोगों में क्रांति लाने वाले सिद्ध हुए।

पीएच.डी. और अनुसंधान में उत्कृष्टता

2008 में इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग तथा 2012 में उन्होंने कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (Ph.D.) की प्रतिष्ठित डिग्री प्राप्त की। यह शोध उन्होंने प्रो. रघुराज सिंह और प्रो. यशपाल सिंह के मार्गदर्शन में पूरा किया।

उनके डॉक्टरेट शोध का मुख्य विषय जटिल एल्गोरिदम और सिस्टम अनुकूलन था, जिसने कम्प्यूटेशनल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डी.एससी. और वैश्विक पहचान

वे यहाँ भी नहीं रुके। 2017 में, उन्होंने कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग में डॉक्टर ऑफ साइंस (D.Sc.) की प्रतिष्ठित डिग्री प्राप्त की। यह शोध उन्होंने प्रो. एम.सी. गोविल (तत्कालीन प्रोफेसर मालवीय नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी जयपुर) और प्रो. दलैल सिंह, कुलपति के मार्गदर्शन में पूरा किया।

उनके वायरलेस संचार (Wireless Communication) पर किए गए अनुसंधान ने उन्हें इस क्षेत्र में एक अग्रणी वैज्ञानिक के रूप में स्थापित किया और उन्हें वैश्विक पहचान दिलाई।

अंतरविषयक शिक्षा और डी.लिट. सम्मान

उनकी शैक्षणिक उत्कृष्टता केवल कंप्यूटर विज्ञान तक ही सीमित नहीं रही। उनकी बुद्धिजीविता और ज्ञान का विस्तार उन्हें प्रबंधन क्षेत्र की ओर भी ले गया।

2021 में, उन्होंने सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका, बोलिविया से मानद डॉक्टरेट (D.Litt.) प्राप्त की। यह सम्मान उनकी अंतरविषयक विशेषज्ञता और तकनीक व प्रबंधन के बीच पुल बनाने की उनकी क्षमता का प्रमाण था।

ज्ञान का प्रचार और अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन

पूरी शिक्षा यात्रा में, प्रो. डॉ. के. पी. यादव केवल ज्ञान अर्जित करने तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने इसे अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं थीं; उन्होंने छात्रों का मार्गदर्शन किया, क्रांतिकारी अनुसंधान किए और कंप्यूटर साइंस शिक्षा के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनकी अखंडता, विभिन्न विषयों में गहराई से शोध करने की क्षमता और अंतःविषयक दृष्टिकोण ने उन्हें अकादमिक और पेशेवर क्षेत्रों में एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व बना दिया।

निष्कर्ष: विद्वान और दूरदर्शी नेता

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की शैक्षणिक यात्रा अटूट समर्पण, ज्ञान की भूख और शोध की उत्कृष्टता का प्रमाण है।

अपने प्रारंभिक शिक्षा में उत्कृष्टता से लेकर कई डॉक्टरेट डिग्रियों तक की उनकी उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि वे निरंतर नवाचार और अनुसंधान में अग्रणी रहे हैं। उन्होंने अनेक विषयों में मानद डॉक्टरेट भी प्राप्त किया ।

उनकी शैक्षणिक सफलता ने न केवल उनके पेशेवर करियर की नींव रखी, बल्कि कंप्यूटर साइंस, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वायरलेस संचार के क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अब, अगले अध्याय में, हम देखेंगे कि उनका शोध कैसे क्रांतिकारी योगदान, अनुसंधान पेटेंट और अभिनव समाधानों में परिवर्तित हुआ, जिसने दुनिया पर एक अमिट प्रभाव छोड़ा।

अध्याय 3: एक विद्वान का निर्माण – उच्च शिक्षा और अनुसंधान

परिचय

प्रो. डॉ. के. पी. यादव के लिए उच्च शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम नहीं थी, बल्कि अनुसंधान और तकनीकी प्रगति में नए मार्ग प्रशस्त करने का एक संकल्प थी। उनका अटूट ज्ञान समर्पण और विज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाने की उनकी लगन ने उन्हें उच्च अध्ययन के लिए प्रेरित किया, जिसने उनके उज्ज्वल कैरियर की नींव रखी।

उनकी शैक्षणिक यात्रा कंप्यूटर विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वायरलेस संचार के क्षेत्र में निरंतर नवाचार और उत्कृष्टता की कहानी है।

उच्च शिक्षा की खोज

अपने प्रारंभिक शिक्षा जीवन में असाधारण शैक्षणिक प्रतिभा प्रदर्शित करने के बाद, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने उन्नत अध्ययन के माध्यम से अपने ज्ञान को गहराई देने की कोशिश की।

उनकी उच्च शिक्षा यात्रा की शुरुआत कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग (B.Tech.) से हुई, जिसे उन्होंने 1993 में पूरा किया। उनके स्नातक वर्ष कठोर शैक्षणिक प्रशिक्षण से भरे थे, जहां उन्होंने सॉफ़्टवेयर विकास, एल्गोरिदम और उभरती प्रौद्योगिकियों में विशेषज्ञता विकसित की।

इसी अवधि में उनकी शोध प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आई, क्योंकि वे जटिल समस्याओं को हल करने में रुचि दिखाने लगे और अक्सर प्रोफेसरों के शोध परियोजनाओं में सक्रिय रूप से योगदान देते थे।

इस क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता को और विकसित करने के लिए, उन्होंने 1996 में बेचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (B.Tech.) की डिग्री प्राप्त की। यह अवधि वायरलेस संचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और संगणना सिद्धांतों में उनके विस्तृत शोध के लिए जानी जाती है।

उनके एम.टेक. शोध प्रबंध (Thesis) ने नेटवर्क सुरक्षा और वायरलेस सिस्टम में क्रांतिकारी शोध के लिए आधारशिला रखी।

डॉक्टरेट शोध और क्रांतिकारी योगदान

2008 and 2012 में, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने Electronics Engineering and कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (Ph.D.) की डिग्री प्राप्त की।

यह शोध उन्होंने प्रो. रघुराज सिंह और प्रो. यशपाल सिंह के मार्गदर्शन में पूरा किया। उनका डॉक्टरेट शोध प्रबंध जटिल एल्गोरिदम और सिस्टम अनुकूलन पर केंद्रित था, जो कम्प्यूटेशनल इंटेलिजेंस (Computational Intelligence) को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण था।

उनके शोध ने मशीन लर्निंग मॉडल, न्यूरल नेटवर्क्स और सिस्टम दक्षता में नवीन समाधान प्रदान किए, जो वैश्विक कंप्यूटर विज्ञान अनुसंधान में प्रभावी साबित हुए।

लेकिन उनका ज्ञान प्राप्त करने का जुनून यहां भी नहीं रुका।

डी.एससी. और वायरलेस संचार में क्रांतिकारी योगदान

वायरलेस तकनीकों (Wireless Technologies) के तेजी से विकास को देखते हुए, उन्होंने डॉक्टर ऑफ साइंस (D.Sc.) की डिग्री प्राप्त करने का निर्णय लिया और 2017 में इसे पूरा किया।

यह शोध उन्होंने प्रो. एम.सी. गोविल और प्रो. दलैल सिंह के मार्गदर्शन में किया।

उनका वायरलेस संचार प्रणालियों (Wireless Communication Systems) पर किया गया पथप्रदर्शक अनुसंधान अत्यंत महत्वपूर्ण था।

उनके कार्य ने आधुनिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर (Digital Infrastructure) के लिए सुरक्षित और कुशल वायरलेस संचार प्रोटोकॉल (Wireless Communication Protocols) विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अंतरविषयक उत्कृष्टता (Interdisciplinary Excellence)

यद्यपि उनका प्राथमिक ध्यान कंप्यूटर विज्ञान और वायरलेस संचार पर केंद्रित था, लेकिन उन्होंने कभी भी खुद को एक ही क्षेत्र तक सीमित नहीं किया।

उनकी व्यापक बुद्धिजीविता और ज्ञान के विविधीकरण की क्षमता ने उन्हें 2021 में सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका, बोलिविया से मैनेजमेंट में मानद डॉक्टरेट (D.Litt.) प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

यह सम्मान उनकी तकनीकी नवाचारों के प्रबंधन, रणनीतिक नेतृत्व, और उच्च शिक्षा में नीति-निर्माण (Policy-Making) में उनके योगदान को मान्यता देने के लिए प्रदान किया गया।

उनका अंतरविषयक (Interdisciplinary) दृष्टिकोण उन्हें तकनीक और प्रबंधन के बीच संबंध स्थापित करने की क्षमता प्रदान करता था, जिससे उन्होंने व्यवसायों और संगठनों में निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को प्रभावी बनाने में मदद की।

शोध प्रकाशन और वैश्विक पहचान

अपने शैक्षणिक करियर के दौरान अब तक, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने 200 से अधिक शोध-पत्र प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं, सम्मेलनों और अनुक्रमित प्रकाशनों (Indexed Publications) में प्रकाशित किए।

उनके शोध योगदान विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग** – भविष्यवाणी विश्लेषण (Predictive Analytics) के लिए बुद्धिमान प्रणालियों का विकास।
- **वायरलेस संचार** – मोबाइल और सैटेलाइट नेटवर्क में सुरक्षा और दक्षता बढ़ाना।
- **क्लाउड कंप्यूटिंग और साइबर सुरक्षा** – डेटा सुरक्षा के लिए नवीन फ्रेमवर्क विकसित करना।
- **बिग डेटा एनालिटिक्स** – वास्तविक समय में बड़े पैमाने पर डेटा संसाधित करने के लिए मॉडल तैयार करना।

उनके शोध ने उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार दिलाए, जिनमें सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार और वैज्ञानिक योगदान के लिए उत्कृष्टता सम्मान शामिल हैं।

उनकी शोध खोजों को व्यापक रूप से उद्धृत किया गया है और उन्होंने कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग में समकालीन अनुसंधान को गहराई से प्रभावित किया है।

मार्गदर्शन और अकादमिक नेतृत्व

अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों से परे, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने युवा शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने 22 से अधिक पीएच.डी. शोधार्थियों और चार पोस्ट-डॉक्टरेट फेलोज़ का मार्गदर्शन किया, जिनमें से कई प्रभावशाली शोधकर्ता बन चुके हैं।

इसके अलावा, वे कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे, जहां उन्होंने नई तकनीकों, अनुसंधान पद्धतियों और अकादमिक नेतृत्व पर व्याख्यान दिए।

उनके राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में दिए गए भाषणों ने अनगिनत छात्रों और शोधकर्ताओं को उत्कृष्टता प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

निष्कर्ष: एक विद्वान जो सीखना कभी नहीं छोड़ता

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की उच्च शिक्षा और अनुसंधान यात्रा बौद्धिक कठोरता, नवाचार और ज्ञान के प्रति अटूट समर्पण की प्रेरणादायक गाथा है।

उनकी शुरुआती दिनों की जिज्ञासा से लेकर वैश्विक कंप्यूटर विज्ञान और वायरलेस संचार में अग्रणी विद्वान बनने तक की यात्रा ने शिक्षा जगत और उद्योग दोनों में अमिट छाप छोड़ी है।

इस पुस्तक के अगले अध्याय में, हम देखेंगे कि कैसे उनकी पेशेवर यात्रा विकसित हुई, जिसमें शैक्षिक नेतृत्व, नीति निर्माण और क्रांतिकारी तकनीकी नवाचार शामिल थे।

अध्याय 2:
पेशेवर यात्रा

"एक शिक्षक का असली योगदान किताबों में नहीं, बल्कि उन विद्यार्थियों में होता है जो समाज को बदलते हैं।"

("A teacher’s true contribution is not in books but in students who transform society.")

"शोध केवल प्रयोगशालाओं में नहीं होता, यह सोच, दृष्टिकोण और खोज की निरंतर प्रक्रिया है।"

("Research is not confined to laboratories; it is a continuous process of thinking, exploring, and discovering.")

अध्याय 4: अकादमिक क्षेत्र में प्रवेश: प्रारंभिक शिक्षण वर्ष

छात्र से शिक्षक बनने का परिवर्तन किसी भी अकादमिक करियर में एक महत्वपूर्ण चरण होता है। प्रो. डॉ. के. पी. यादव के लिए, अकादमिक क्षेत्र में प्रवेश केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं था, बल्कि शिक्षा की धारणा और उसके वितरण के तरीके को क्रांतिकारी रूप से बदलने का एक अवसर था। उनके प्रारंभिक शिक्षण वर्ष उनके प्रतिष्ठित करियर के लिए एक मजबूत आधार बने, जिसमें वे एक प्रोफेसर, शोधकर्ता और मार्गदर्शक के रूप में उभरे।

एक अकादमिक विरासत की शुरुआत

उच्च शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बाद, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने 1990 के दशक के उत्तरार्ध में एक शिक्षक के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। उनके शुरुआती अकादमिक वर्ष शिक्षण के प्रति उनके गहरे जुनून और नवाचार-आधारित शिक्षण दृष्टिकोण से परिभाषित थे। उन्होंने एक प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थान में कार्यभार संभाला, जहाँ उन्होंने कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को आकार देने की जिम्मेदारी निभाई।

एक व्याख्याता के रूप में, उन्होंने शीघ्र ही अपनी प्रभावशाली शिक्षण शैली और जटिल अवधारणाओं को सरल बनाने की क्षमता के लिए पहचान प्राप्त की। उनके कक्षाएं केवल सैद्धांतिक व्याख्यान नहीं थीं, बल्कि संवादात्मक सत्र थे जो सकारात्मक -आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान को प्रोत्साहित करते थे। उनका मानना था कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं होनी

चाहिए, बल्कि व्यावहारिक अनुप्रयोगों और वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने की तकनीकों को भी शामिल करनी चाहिए।

शिक्षा और पाठ्यक्रम विकास में नवाचार

अपने प्रारंभिक शिक्षण वर्षों के दौरान, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने पाठ्यक्रम विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी को ध्यान में रखते हुए एक उद्योग-समर्थित पाठ्यक्रम को बढ़ावा दिया जो अकादमिक और व्यावसायिक दुनिया के बीच की खाई को पाट सके। उनके योगदानों में शामिल थे:

- **परियोजना-आधारित शिक्षण को प्रोत्साहित करना** – छात्रों को व्यावहारिक परियोजनाओं में शामिल करना जो वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों का अनुकरण करती हैं।
- **अंतर-अनुशासनिक विषयों का समावेश** – कंप्यूटर साइंस को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा साइंस और साइबर सुरक्षा जैसे उभरते क्षेत्रों के साथ जोड़ना।
- **स्नातक स्तर पर शोध को बढ़ावा देना** – छात्रों को लघु शोध परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करना जिससे उनकी जिज्ञासा और नवाचार की भावना विकसित हो।
- **आधुनिक शिक्षण पद्धतियों को लागू करना** – फ्लिप्ड क्लासरूम, केस स्टडी और संवादात्मक कार्यशालाओं को शामिल करके सीखने के अनुभव को बेहतर बनाना।

उनका छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण उन्हें छात्रों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय बना गया। उन्होंने शिक्षा को ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया से अधिक एक बौद्धिक खोज के रूप में देखा, जिसमें विश्लेषणात्मक कौशल, जिज्ञासा और स्वतंत्र सोच को विकसित करना आवश्यक था।

शोध और प्रारंभिक प्रकाशन

शिक्षण में उत्कृष्टता प्राप्त करने के साथ ही, प्रो. डॉ. के. पी. यादव शोध में भी गहराई से संलग्न रहे। उन्होंने मशीन लर्निंग, एल्गोरिदमिक अनुकूलन और नेटवर्क सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में अग्रणी शोध परियोजनाओं पर सहयोग करना शुरू किया। उनके प्रारंभिक शोध में शामिल थे:

- **कंप्यूटिंग दक्षता को बढ़ाना** – कंप्यूटर प्रदर्शन और डेटा प्रसंस्करण की गति में सुधार के लिए एल्गोरिदम विकसित करना।
- **नेटवर्क सुरक्षा में सुधार** – साइबर खतरों के खिलाफ वायरलेस संचार प्रणालियों को मजबूत बनाने के लिए अनुसंधान।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुप्रयोग** – निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और स्वचालन में एआई की भूमिका की जांच करना।

उनके शोध पत्रों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुत किया गया और व्यापक रूप से सराहा गया, जिससे उनके लिए आगे की शोध संभावनाओं के द्वार खुले।

युवा मस्तिष्कों को मार्गदर्शन देना

शिक्षण और अनुसंधान के अलावा, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने युवा शोधकर्ताओं को मार्गदर्शन देने में भी विशेष रुचि ली। उन्होंने प्रतिभाओं को विकसित करने की आवश्यकता को महसूस करते हुए, छात्रों के शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके मार्गदर्शन में, छात्रों ने:

- **शोध परियोजनाओं को आगे बढ़ाया** – हैकाथॉन, कोडिंग प्रतियोगिताओं और नवाचार चुनौतियों में भाग लिया।
- **छात्रवृत्ति और शैक्षणिक निधि प्राप्त की** – छात्रों को अनुसंधान अनुदानों और फैलोशिप के लिए आवेदन करने में सहायता की।
- **नेतृत्व और संचार कौशल विकसित किए** – उन्हें उद्योग भूमिकाओं, अकादमिक करियर और उद्यमशीलता प्रयासों के लिए तैयार किया।

उनके मार्गदर्शन का प्रभाव उनके छात्रों की सफलता की कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जिनमें से कई ने अकादमिक, अनुसंधान और उद्योग में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।

प्रारंभिक वर्षों की चुनौतियाँ और उपलब्धियाँ

किसी भी परिवर्तनकारी शिक्षक की तरह, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने अपने प्रारंभिक अकादमिक करियर में कई चुनौतियों का सामना किया, जैसे:

- **उन्नत शोध सुविधाओं तक सीमित पहुँच** – अग्रणी अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग करके इस कमी को पूरा किया।

- **आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रति संदेह** – प्रौद्योगिकी-संचालित शिक्षण तकनीकों को एकीकृत करने की वकालत की।
- **शिक्षण और अनुसंधान प्रतिबद्धताओं का संतुलन** – दोनों क्षेत्रों में सार्थक योगदान देने के लिए अपने समय का प्रभावी प्रबंधन किया।

इन बाधाओं के बावजूद, उनके समर्पण, नवाचार और उत्कृष्टता की प्रतिबद्धता ने उन्हें एक प्रतिष्ठित शिक्षक और शोधकर्ता के रूप में स्थापित किया।

शैक्षणिक नेतृत्व की ओर बढ़ते कदम

शिक्षण, शोध और मार्गदर्शन में उनकी असाधारण प्रदर्शन को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। कुछ वर्षों के भीतर, उन्हें वरिष्ठ शैक्षणिक भूमिकाओं में पदोन्नति मिली, जहाँ उन्होंने अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ निभाईं, जैसे:

- **शोध विद्वानों का पर्यवेक्षण** – कई पीएच.डी. और एम.टेक. छात्रों को क्रांतिकारी शोध में मार्गदर्शन दिया।
- **विश्वविद्यालय नीतियों का विकास** – शैक्षिक मानकों को बढ़ाने के लिए अकादमिक सुधारों और नीति-निर्माण में योगदान दिया।
- **शोध सहयोग स्थापित करना** – उच्च शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और निजी संगठनों के साथ साझेदारी की।

एक भावुक व्याख्याता से एक प्रभावशाली शैक्षणिक नेता तक उनकी यात्रा निरंतर सीखने, समर्पण और शिक्षा की शक्ति में अटूट विश्वास से चिह्नित रही।

निष्कर्ष: प्रभावशाली विरासत की नींव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव के प्रारंभिक शिक्षण वर्ष उनके शैक्षिक और अनुसंधान दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण रहे। उन्होंने अपने भविष्य के योगदानों के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया, जिसमें वे वैश्विक अकादमिक नेता, अनुसंधान अग्रणी, और हजारों छात्रों के प्रेरणास्रोत बने। उनकी शिक्षण शैली, नवाचार के प्रति समर्पण और शिक्षाशास्त्र को एक नए स्तर तक ले जाने की प्रतिबद्धता ने उन्हें एक असाधारण शिक्षक के रूप में स्थापित किया।

अध्याय 5: अनुसंधान के प्रति जुनून: क्रांतिकारी योगदान

अनुसंधान अकादमिक जगत की जीवनरेखा है, जो प्रगति, नवाचार और ज्ञान के विकास को प्रेरित करता है। प्रो. डॉ. के. पी. यादव के लिए, अनुसंधान केवल एक अकादमिक दायित्व नहीं था, बल्कि एक गहरी जड़ें जमाए हुए जुनून था। उनके अग्रणी कार्यों ने कंप्यूटर विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नेटवर्क सुरक्षा और शैक्षिक प्रौद्योगिकी सहित कई क्षेत्रों पर अमिट छाप छोड़ी है। उनके क्रांतिकारी अनुसंधान प्रयासों ने राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

प्रारंभिक अनुसंधान प्रयास

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की अनुसंधान यात्रा उनकी स्नातक एवं स्नातकोत्तर पढ़ाई के दौरान शुरू हुई, जहाँ उन्होंने संगणन सिद्धांतों और एल्गोरिदमिक अनुकूलन का गहन अध्ययन किया। उनके प्रारंभिक कार्यों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा-संचालित निर्णय लेने के क्षेत्र में उनकी आगे की खोज के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया।

उनके शुरुआती अनुसंधान परियोजनाएँ निम्नलिखित क्षेत्रों में केंद्रित थीं:

- **एल्गोरिदमिक दक्षता** – संगणन गति और सटीकता को बढ़ाने के लिए अनुकूलित कोडिंग संरचनाएँ विकसित करना।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल** – भविष्यवाणी विश्लेषण के लिए मशीन लर्निंग तकनीकों की खोज।

- **वायरलेस संचार प्रगति** – डेटा ट्रांसमिशन के लिए नेटवर्क सुरक्षा प्रोटोकॉल को मजबूत करना।

उनकी क्षमता ने सैद्धांतिक अवधारणाओं को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में बदल दिया, जिससे वे अपने करियर के प्रारंभिक चरण में ही एक दूरदर्शी शोधकर्ता के रूप में पहचाने गए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग में नवाचार

उनके सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग (ML) के क्षेत्र में रहा है। उन्होंने निम्नलिखित विषयों में अग्रणी अनुसंधान किया:

- **न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर** – मानव संज्ञान की नकल करने वाले एआई फ्रेमवर्क विकसित करना।
- **नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP)** – भाषाई मॉडलिंग के माध्यम से मानव-कंप्यूटर इंटरैक्शन को बेहतर बनाना।
- **भविष्यवाणी विश्लेषण** – विभिन्न क्षेत्रों में सटीक पूर्वानुमान के लिए एमएल मॉडल लागू करना।

उनके शोध ने पेटेंट और उच्च-प्रभावशाली प्रकाशनों को जन्म दिया, जिससे वे बुद्धिमान संगणन के क्षेत्र में एक प्रमुख विचारक के रूप में स्थापित हुए। उनके कार्यों ने स्वास्थ्य सेवा, साइबर सुरक्षा और स्वचालन में एआई-आधारित समाधानों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

नेटवर्क सुरक्षा और वायरलेस संचार में नवाचार

डिजिटलीकरण की तीव्र गति के साथ, साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता बढ़ गई। इसे पहचानते हुए, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने नेटवर्क सुरक्षा और वायरलेस संचार प्रोटोकॉल पर गहन अनुसंधान किया।

उनके प्रमुख योगदानों में शामिल हैं:

- **सुरक्षित एन्क्रिप्शन विधियाँ** – डिजिटल लेन-देन में डेटा गोपनीयता और अखंडता को बढ़ाना।
- **साइबर खतरे की पहचान मॉडल** – एआई-संचालित एल्गोरिदम का उपयोग करके सुरक्षा उल्लंघनों की पूर्व पहचान।
- **वायरलेस सिग्नल अनुकूलन** – मोबाइल संचार नेटवर्क की दक्षता में सुधार करना।
- **मोबाइल प्रोटोकॉल** में ऊर्जा संरक्षण के लिए अनुसन्धान करना ।

उनके शोध ने डिजिटल अवसंरचना की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मदद की, नीति रूपरेखाओं को प्रभावित किया, और उद्योग के सर्वोत्तम प्रथाओं को मार्गदर्शित किया।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी और शिक्षण विधियों में सुधार

प्रौद्योगिकी नवाचारों के अलावा, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा को पुनर्परिभाषित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके

अनुसंधान ने ई-लर्निंग मॉडल, डिजिटल कक्षाओं और मिश्रित शिक्षण रणनीतियों को विकसित करने में मदद की।

उनके शैक्षिक अनुसंधान में उल्लेखनीय योगदान शामिल हैं:

- **अनुकूली शिक्षण प्रणाली का विकास** – एआई-आधारित प्लेटफार्म जो व्यक्तिगत शिक्षण सामग्री प्रदान करते हैं।
- **आभासी प्रयोगशालाओं का एकीकरण** – सिमुलेटेड वातावरण के माध्यम से व्यावहारिक सीखने के अनुभव को बढ़ाना।
- **ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियों में सुधार** – छात्र सगाई और अवधारण को अनुकूलित करने के लिए नवीन पद्धतियाँ लागू करना।

उनका क्रांतिकारी कार्य पारंपरिक शिक्षण और डिजिटल नवाचार के बीच की खाई को पाटने में सहायक रहा है।

नीति निर्माण और औद्योगिक सहयोग पर प्रभाव

शैक्षणिक हलकों से परे, उनके अनुसंधान ने सरकारी नीतियों और औद्योगिक सहयोगों पर व्यापक प्रभाव डाला है। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों के लिए परामर्श किया है।

उनके सहयोगों में शामिल हैं:

- **रक्षा और सुरक्षा एजेंसियों के साथ परामर्श** – साइबर लचीलापन और राष्ट्रीय सुरक्षा रूपरेखाओं पर मार्गदर्शन।

- **बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ साझेदारी** – दक्षता वृद्धि के लिए एआई-आधारित उद्यम समाधान विकसित करना।
- **सरकारी सलाहकार भूमिकाएँ** – शिक्षा, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान वित्त पोषण में नीति-निर्माण में योगदान।

उनकी क्षमता अनुसंधान को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों से जोड़ने में है, जिसने उन्हें अकादमिक और औद्योगिक क्षेत्रों दोनों में मूल्यवान संपत्ति बना दिया है।

मान्यता और वैश्विक प्रभाव

वैश्विक शैक्षणिक समुदाय ने प्रो. डॉ. के. पी. यादव के योगदानों को कई पुरस्कारों, फैलोशिपों और प्रतिष्ठित सम्मेलनों में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रण के माध्यम से मान्यता दी है।

उनका प्रभाव निम्नलिखित में स्पष्ट है:

- **उच्च उद्धरण सूचकांक और विद्वतापूर्ण प्रभाव** – उनके शोध को शीर्ष-पत्रिकाओं में व्यापक रूप से उद्धृत किया गया है।
- **प्रतिष्ठित प्रकाशनों में संपादकीय भूमिकाएँ** – सहकर्मी-समीक्षित शैक्षणिक विमर्श में योगदान देना।
- **अनुसंधान संघों में नेतृत्व** – अत्याधुनिक वैज्ञानिक क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।

उनके योगदान भावी शोधकर्ताओं को प्रेरित करते हैं, जो अगली पीढ़ी के तकनीकी नवाचारों को आकार दे रहे हैं।

निष्कर्ष: नवाचार की एक स्थायी विरासत

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की अनुसंधान यात्रा ज्ञान की अथक खोज, समस्या-समाधान की प्रतिबद्धता और वैश्विक प्रगति के प्रति अटूट समर्पण का प्रतीक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नेटवर्क सुरक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी और नीति प्रभाव में उनका क्रांतिकारी कार्य न केवल वैज्ञानिक विचारों को आगे बढ़ाता है, बल्कि भविष्य के नवाचारों के लिए भी मार्ग प्रशस्त करता है।

जैसे-जैसे उनका अनुसंधान अकादमिक, उद्योग और शासन को आकार देना जारी रखता है, उनकी विरासत विश्व भर के नवोदित विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा बनी रहेगी।

अध्याय 6: मार्गदर्शक और गुरु: भविष्य के नेताओं का निर्माण

किसी व्यक्ति की महानता केवल उसकी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि दूसरों पर पड़े उसके प्रभाव में भी निहित होती है। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने न केवल अपने शोध के माध्यम से बल्कि अपने मार्गदर्शन और मेंटरशिप के माध्यम से भी अकादमिक और औद्योगिक जगत में अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने अपने प्रतिष्ठित करियर में अनगिनत छात्रों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को शिक्षित, प्रेरित और प्रशिक्षित किया है, जिससे वे अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। उनकी प्रभावशाली शिक्षण शैली और नेतृत्व कौशल ने अकादमिक जगत में कई पीढ़ियों को आकार दिया है।

ज्ञान साझा करने की प्रतिबद्धता

अपनी अकादमिक यात्रा के प्रारंभिक दिनों से ही, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने शिक्षा और मार्गदर्शन की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचाना। वे हमेशा आलोचनात्मक सोच, बौद्धिक जिज्ञासा और समस्या-समाधान कौशल को प्रोत्साहित करते रहे हैं। उनकी मेंटरशिप ने छात्रों को अनुसंधान में उत्कृष्टता प्राप्त करने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने और वैश्विक अकादमिक समुदाय में सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित किया है।

उनकी शिक्षण पद्धति निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित रही है:

- **स्वतंत्र सोच को प्रोत्साहित करना** – छात्रों को मौजूदा सिद्धांतों को चुनौती देने और मूल विचार विकसित करने के लिए प्रेरित करना।

- **सिद्धांत और अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटना** – छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि व्यावहारिक समझ भी देना।
- **नेतृत्व कौशल विकसित करना** – छात्रों को नेतृत्वकारी भूमिका निभाने और नवाचार करने के लिए प्रेरित करना।

इन सिद्धांतों को अपनाकर उन्होंने दक्ष, नवोन्मेषी और सामाजिक रूप से जिम्मेदार पेशेवरों को तैयार किया है।

शोधकर्ताओं और अकादमिक विद्वानों का मार्गदर्शन

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की सबसे बड़ी विशेषता उनके द्वारा युवा शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों को दिए गए समर्थन में निहित है। एक शोध सलाहकार के रूप में, उन्होंने कई डॉक्टरेट और पोस्ट-डॉक्टरेट शोधार्थियों को उनके अनुसंधान कार्यों में मार्गदर्शन प्रदान किया है। उनके मार्गदर्शन में किए गए शोध कार्यों को शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया है और कई विद्वानों ने प्रतिष्ठित फैलोशिप प्राप्त की हैं।

उनकी मेंटरशिप के प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

- **डॉक्टरेट अनुसंधान का पर्यवेक्षण** – उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और संगणन विज्ञान में कई पीएचडी शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।
- **अनुसंधान अनुदान और वित्त पोषण** – युवा शोधकर्ताओं को अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने में मदद की।

- **अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी** – छात्रों को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में अपने शोध प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया।

इन प्रयासों के माध्यम से, उन्होंने कई क्षेत्रों में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भविष्य के उद्योग नेताओं का निर्माण

केवल अकादमिक जगत तक ही सीमित न रहते हुए, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने उद्यमियों, कॉर्पोरेट पेशेवरों और व्यावसायिक नेताओं को भी प्रशिक्षित किया है, जिससे वे नवाचार और प्रौद्योगिकी-संचालित उद्योगों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। उनके मार्गदर्शन में कई पेशेवर उच्च पदों पर पहुँचे हैं, जिन्होंने व्यावसायिक दुनिया में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उनके औद्योगिक मार्गदर्शन के योगदान में शामिल हैं:

- **कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम** – उन्होंने कॉर्पोरेट अधिकारियों और सरकारी अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किए।
- **स्टार्टअप इनक्यूबेशन में मार्गदर्शन** – नवाचार-संचालित स्टार्टअप शुरू करने वाले उद्यमियों का समर्थन किया।
- **शिक्षा और उद्योग के बीच समन्वय** – विश्वविद्यालयों और कंपनियों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया, जिससे छात्रों को वास्तविक औद्योगिक चुनौतियों से अवगत कराया जा सके।

उनके कई पूर्व छात्र अपने पेशेवर जीवन में उनकी शिक्षाओं को श्रेय देते हैं, जिसने उन्हें आत्मनिर्भर और नवोन्मेषी दृष्टिकोण विकसित करने में मदद की।

शैक्षिक सुधारों और संकाय विकास में योगदान

छात्रों के मार्गदर्शन के अलावा, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने शिक्षण पद्धतियों में सुधार लाने और संकाय विकास कार्यक्रमों को सशक्त बनाने के लिए भी अथक प्रयास किए हैं। उन्होंने शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण सत्र और अनुसंधान-आधारित पहल शुरू की हैं, जिससे उनकी शिक्षण क्षमताओं में सुधार हुआ है।

उनके योगदानों में शामिल हैं:

- **संकाय प्रशिक्षण कार्यक्रम** – शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन।
- **पाठ्यक्रम विकास** – समकालीन तकनीकी प्रगति को शामिल करने वाले आधुनिक पाठ्यक्रमों का निर्माण।
- **अनुसंधान-आधारित शिक्षण की वकालत** – कक्षा के शिक्षण को सक्रिय अनुसंधान कार्यों से जोड़ने के लिए शिक्षकों को प्रेरित करना।

शिक्षकों के प्रशिक्षण के माध्यम से, उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भविष्य की पीढ़ियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त हो।

भविष्य के लिए एक दूरदर्शी मेंटर

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की मेंटरशिप का सबसे परिभाषित पहलू उनका भविष्य के प्रति दृष्टिकोण है। वे शिक्षा को राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण साधन मानते हैं और शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

उनका दृष्टिकोण निम्नलिखित पहलुओं को शामिल करता है:

- **अंतर-अनुशासनात्मक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना** – विज्ञान, प्रबंधन और समाजशास्त्र के बीच सहयोग को बढ़ावा देना।
- **वैश्विक शिक्षा पहलों का समर्थन करना** – अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ साझेदारी कर वैश्विक सीखने के अवसर प्रदान करना।
- **नैतिक नेतृत्व को मजबूत करना** – छात्रों में जिम्मेदारी, ईमानदारी और सेवा भावना विकसित करना।

उनका प्रभाव अकादमिक, औद्योगिक और सामाजिक क्षेत्रों में व्यापक रूप से महसूस किया जाता है, जिससे उनकी विरासत उनके द्वारा प्रशिक्षित नेताओं की उपलब्धियों के माध्यम से जीवित रहेगी।

निष्कर्ष: मेंटरशिप और प्रेरणा की एक स्थायी विरासत

एक सच्चे मार्गदर्शक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं होती—यह प्रेरित करने, दिशा दिखाने और भविष्य को आकार देने में निहित होती है। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** की अटूट समर्पण भावना ने अनगिनत व्यक्तियों को अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। उनके प्रभाव को उनके छात्रों, शोधकर्ताओं और उद्योग जगत के नेताओं की सफलता की कहानियों में देखा जा सकता है, जो उनकी शिक्षाओं और मूल्यों को आगे बढ़ा रहे हैं।

अध्याय 7: शिक्षा में नेतृत्व: संस्थानों का रूपांतरण

शिक्षा में नेतृत्व केवल संस्थानों का प्रबंधन करने तक सीमित नहीं है—यह एक दृष्टि, परिवर्तन और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता से जुड़ा हुआ है। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने शिक्षण संस्थानों में क्रांतिकारी सुधार लागू किए हैं, नवाचार को बढ़ावा दिया है, और अकादमिक मानकों को फिर से परिभाषित किया है। उनके नेतृत्व में, जिन संस्थानों से वे जुड़े रहे, वहाँ उल्लेखनीय प्रगति हुई, जिससे शिक्षा जगत में नए कीर्तिमान स्थापित हुए।

शिक्षा में नेतृत्व की दूरदर्शी सोच

अपनी अकादमिक यात्रा की शुरुआत से ही, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने उच्च शिक्षा में संरचनात्मक और शैक्षणिक चुनौतियों को गहराई से समझा। उन्होंने महसूस किया कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, अनुसंधान-उन्मुख और उद्योग से जुड़ा होना चाहिए। इसलिए, उन्होंने कई प्रगतिशील नीतियाँ लागू कीं, जिनका उद्देश्य अकादमिक उत्कृष्टता, उद्योग सहयोग और शोध-आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना था।

उनके नेतृत्व की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **संस्थागत विकास** – अनुसंधान क्षमताओं, अवसंरचना और प्रशासनिक ढांचे को सशक्त बनाना।
- **नवाचार से भरपूर पाठ्यक्रम** – पारंपरिक और आधुनिक विषयों का समावेश करते हुए व्यावहारिक शिक्षण अनुभव को बढ़ावा देना।

- **संकाय और छात्रों को सशक्त बनाना** – पेशेवर विकास और नेतृत्व प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करना।

इन प्रयासों ने उनके नेतृत्व में कार्यरत संस्थानों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता और अकादमिक प्रतिष्ठा को मजबूत किया।

संस्थानों का रूपांतरण: उत्कृष्टता के केंद्रों का निर्माण

उनके नेतृत्व की एक अनूठी विशेषता यह रही है कि उन्होंने संस्थानों को नवाचार और ज्ञान निर्माण के केंद्रों में बदल दिया। **मेट्स यूनिवर्सिटी (MATS University) और संगम यूनिवर्सिटी** में उनकी भूमिका के दौरान, उन्होंने कई रणनीतिक सुधार किए, जिससे अकादमिक रैंकिंग, अनुसंधान उत्पादकता और छात्रों की सफलता दर में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त भी, प्रोफ. यादव जिन विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों से जुड़े रहे , वहां भी उल्लेखनीय सुधार तथा वृद्धि किया ।

उनके प्रमुख प्रयासों में शामिल हैं:

- **अनुसंधान केंद्रों की स्थापना** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में समर्पित अनुसंधान सुविधाओं का निर्माण।
- **वैश्विक भागीदारी को मजबूत बनाना** – विश्व स्तर पर अग्रणी विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संगठनों के साथ सहयोग।
- **शिक्षण पद्धति का आधुनिकीकरण** – स्मार्ट कक्षाओं और एआई-संचालित शिक्षण मंचों का उपयोग।
- **संस्थान की क्रिया प्रणाली में सुधार तथा रैंकिंग में वृद्धि करना** ।

उनके नेतृत्व में, इन संस्थानों ने अकादमिक उत्कृष्टता, नवीन शिक्षण विधियों और उद्योग से जुड़े कार्यक्रमों के लिए पहचान प्राप्त की।

उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने हमेशा शिक्षा के साथ अनुसंधान को एकीकृत करने पर जोर दिया है। उनके प्रयासों ने संकाय और छात्रों को शोध में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

उनके प्रमुख योगदानों में शामिल हैं:

- **अनुसंधान के लिए अधिक वित्त पोषण प्राप्त करना** – बहु-विषयी अनुसंधान परियोजनाओं के लिए अनुदान सुनिश्चित करना।
- **वैज्ञानिक प्रकाशनों को प्रोत्साहित करना** – राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और सम्मेलनों में शोध प्रस्तुतियों की सुविधा प्रदान करना।
- **उद्योग-संचालित अनुसंधान सहयोग** – वास्तविक समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न उद्योगों के साथ भागीदारी करना।

इन प्रयासों ने उनके नेतृत्व में कार्यरत संस्थानों को अनुसंधान में अग्रणी बना दिया, जिससे समाज को प्रभावशाली नवाचार प्राप्त हुए।

शिक्षा में डिजिटल क्रांति को लागू करना

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने आधुनिक शिक्षा में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए, शिक्षण और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को डिजिटल बनाने के

लिए कई पहल कीं। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, निम्नलिखित नवाचार लागू किए गए:

- **ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म** – डिजिटल माध्यमों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच का विस्तार।
- **एआई और मशीन लर्निंग का एकीकरण** – व्यक्तिगत शिक्षा के लिए बुद्धिमान प्रणालियों का उपयोग।
- **ब्लॉकचेन-आधारित प्रमाणन** – सुरक्षित और प्रमाणित शैक्षणिक रिकॉर्ड सुनिश्चित करना।

उनके इन प्रयासों ने संस्थानों को डिजिटल परिवर्तन के युग में प्रतिस्पर्धी बनाए रखा है।

भविष्य के नेताओं का निर्माण: छात्रों और संकाय पर प्रभाव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव का नेतृत्व छात्रों और संकाय सदस्यों दोनों के लिए एक प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करता है।

उनकी पहल में शामिल हैं:

- **संकाय के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण** – शिक्षण पद्धति और प्रशासनिक कौशल को बढ़ाने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन।
- **उद्यमिता कार्यक्रम** – छात्रों को स्टार्ट-अप और व्यावसायिक उपक्रम विकसित करने के लिए प्रेरित करना।

- **कैरियर-उन्मुख शिक्षा** – पाठ्यक्रम को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना और व्यावहारिक प्रशिक्षण देना।

इन प्रयासों से एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बना, जहाँ अकादमिक और व्यावसायिक विकास साथ-साथ चलते हैं, जिससे छात्र और संकाय वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार हो सकें।

प्रमुख नेतृत्व भूमिकाएँ और योगदान

उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी नेता के रूप में, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने कई प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया है, जिनमें शामिल हैं:

- **मेट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति (दूसरा कार्यकाल)** – शैक्षिक सुधारों को लागू करना और संस्थागत ढांचे को मजबूत करना।
- **IIIT तिरुचिरापल्ली और नागालैंड सेंट्रल यूनिवर्सिटी में भारत के राष्ट्रपति के नामांकित सदस्य** – राष्ट्रीय शैक्षणिक नीतियों को मजबूत बनाना।
- **महत्मा गांधी विश्वविद्यालय और अटल बिहारी बाजपेयी विश्वविद्यालय के लिए राज्यपाल के नामांकित सदस्य** – नवाचार-संचालित कृषि और व्यावसायिक शिक्षा पहलों का नेतृत्व करना।
- **यसबड यूनिवर्सिटी (भारत) के कंट्री हेड** – वैश्विक शैक्षिक सहयोग को बढ़ावा देना।
- **KLCU विश्वविद्यालय, साउथ कैरोलिना, यूएसए के सलाहकार** – अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक नेतृत्व में योगदान देना।

ये प्रतिष्ठित भूमिकाएँ उनके दूरदर्शी नेतृत्व और संस्थागत परिवर्तन को संचालित करने की उनकी क्षमता को दर्शाती हैं।

परिवर्तनकारी नेतृत्व की विरासत

प्रो. डॉ. के. पी. यादव के नेतृत्व का प्रभाव उनके द्वारा संचालित संस्थानों, संकाय सदस्यों और छात्रों की सफलता में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उनकी रणनीतिक सोच, शिक्षा प्रणाली में सुधार, और वैश्विक साझेदारी को मजबूत करने की क्षमता ने शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ स्थापित की हैं।

उनका नेतृत्व दर्शन निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है:

- **सतत संस्थागत विकास** – यह सुनिश्चित करना कि संस्थान नवाचार और उत्कृष्टता की दिशा में निरंतर बढ़ते रहें।
- **वैश्विक अकादमिक सहयोग** – भारतीय और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के बीच संबंधों को मजबूत करना।
- **आजीवन सीखने के प्रति प्रतिबद्धता** – सतत शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देना।

उनके परिवर्तनकारी नेतृत्व के माध्यम से, उन्होंने उच्च शिक्षा के वातावरण को फिर से परिभाषित किया है, जिससे उत्कृष्टता, नवाचार और दूरदर्शी नेतृत्व की एक स्थायी विरासत छोड़ दी है।

निष्कर्ष: शैक्षिक नेतृत्व में एक अग्रणी व्यक्तित्व

शैक्षिक संस्थानों को रूपांतरित करने में **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** की यात्रा उनके शिक्षा और नेतृत्व के प्रति अटूट समर्पण को दर्शाती है। उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण ने अकादमिक बुनियाद को मजबूत किया, नई शिक्षण पद्धतियों को प्रेरित किया, और भविष्य के नवाचारों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हम उनके शोध, विकास और राष्ट्र-निर्माण में योगदान को विस्तार से जानेंगे, जो शिक्षा और प्रौद्योगिकी के भविष्य को आकार देने में उनकी भूमिका को दर्शाएगा।

"नेतृत्व पदवी से नहीं, विचारधारा और कर्म से सिद्ध होता है।"

("Leadership is not defined by position, but by ideology and action.")

"शिक्षा का असली उद्देश्य जिज्ञासा को प्रज्वलित करना और नवाचार की भावना को पोषित करना है।"

("The true purpose of education is to ignite curiosity and nurture the spirit of innovation.")

अध्याय 3: समाज और राष्ट्र के प्रति योगदान

"राष्ट्र का भविष्य उसकी शिक्षा व्यवस्था में निहित होता है।"

("The future of a nation lies within its education system.")

"सिर्फ़ तकनीक का विकास ही नहीं, बल्कि उसका मानवता के हित में उपयोग ही सच्ची उन्नति है।"

("True progress is not just the advancement of technology, but its application for the welfare of humanity.")

अध्याय 8: नवाचार को बढ़ावा देना: अनुसंधान, विकास और पेटेंट

नवाचार प्रगति की नींव है और अकादमिक क्षेत्र में, यह समाजों और अर्थव्यवस्थाओं के परिवर्तन की प्रेरक शक्ति है। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने अनुसंधान, विकास और बौद्धिक संपदा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन पर एक स्थायी प्रभाव पड़ा है। उन्होंने इंजीनियरिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कृषि और स्वास्थ्य सेवा में अपने अग्रणी कार्यों के माध्यम से खुद को नवाचार के क्षेत्र में एक विचारशील नेता के रूप में स्थापित किया है।

अनुसंधान और विकास के प्रति एक दूरदर्शी दृष्टिकोण

प्रो. डॉ. के. पी. यादव का मानना है कि अनुसंधान को प्रभाव-उन्मुख, उद्योग-केंद्रित और राष्ट्रीय विकास नीतियों के साथ संरेखित होना चाहिए। उनके शोध का दर्शन जटिल सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए वास्तविक दुनिया के समाधान तैयार करने में निहित है। उनके नेतृत्व में, अकादमिक संस्थानों को नवाचार के केंद्रों में बदल दिया गया है, जो बहु-विषयक अनुसंधान, उद्योग सहयोग और स्टार्टअप नवाचार को बढ़ावा देते हैं।

उनके अनुसंधान योगदान विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग** – निर्णय लेने और स्वचालन के लिए कंप्यूटेशनल मॉडलों का अनुकूलन।
- **क्वांटम कंप्यूटिंग** – अगली पीढ़ी के कंप्यूटेशनल ढांचे की खोज।

- **नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरण विज्ञान** – हरित ऊर्जा और स्थिरता में नवाचार।
- **बायोमेडिकल इंजीनियरिंग और स्वास्थ्य सेवा** – चिकित्सा इमेजिंग और एआई-संचालित नैदानिक उपकरणों में प्रगति।
- **कृषि इंजीनियरिंग** – डेटा-संचालित कृषि तकनीकों और स्मार्ट सिंचाई प्रणालियों का कार्यान्वयन।

इन पहलों के माध्यम से, **प्रो. डॉ. यादव** ने भारत के अनुसंधान पर्यावरण को आकार देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रौद्योगिकी नवाचार को पेटेंट के माध्यम से आगे बढ़ाना

उनके योगदानों में पेटेंट और बौद्धिक संपदा का प्रभावशाली रिकॉर्ड शामिल है। उनकी क्रांतिकारी अनुसंधान परियोजनाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में पेटेंट किए गए नवाचारों को जन्म दिया है। उनके पेटेंट औद्योगिक प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने, स्वास्थ्य सेवा प्रौद्योगिकियों को उन्नत करने और कृषि कार्यों को सुव्यवस्थित करने में सहायक रहे हैं।

उनके कुछ प्रमुख पेटेंटों में शामिल हैं:

- **मैट्स ऑर्थो ऑयल** – जोड़ों के दर्द से राहत देने के लिए एक क्रांतिकारी चिकित्सीय तेल।
- **मधुमेह रोगियों के लिए ओरल गम** – रक्त शर्करा को नियंत्रित करने के लिए एक विशेष रूप से तैयार किया गया गम।

- **एआई-संचालित स्मार्ट सिंचाई प्रणाली** – कृषि में जल उपयोग को अनुकूलित करने के लिए डेटा-आधारित समाधान।
- **नवीकरणीय ऊर्जा संग्रहण उपकरण** – सौर और पवन ऊर्जा से संबंधित नवाचार।

उनके पेटेंट यह दर्शाते हैं कि उन्होंने अनुसंधान और व्यावसायीकरण के बीच की खाई को कैसे पाटा है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वैज्ञानिक सफलताएँ व्यावहारिक अनुप्रयोगों में परिवर्तित हो सकें।

अनुसंधान सहयोग और वित्तपोषण को बढ़ावा देना

अनुसंधान में सहयोग के महत्व को पहचानते हुए, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने अकादमिक संस्थानों, उद्योगों और सरकारी निकायों के बीच साझेदारी को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है। उनके नेतृत्व में, कई पहलें की गई हैं:

- **अनुसंधान अनुदानों को सुरक्षित करना** – अत्याधुनिक अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सरकारी एजेंसियों और निजी संगठनों से धन प्राप्त करना।
- **उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करना** – एआई, नैनो टेक्नोलॉजी और नवीकरणीय ऊर्जा के लिए समर्पित अनुसंधान केंद्र बनाना।
- **उद्योग-अकादमिक सहयोग** – कंपनियों के साथ साझेदारी कर बाजार-उन्मुख समाधान विकसित करना।
- **अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग** – वैश्विक विश्वविद्यालयों और अनुसंधान निकायों के साथ ज्ञान साझा करने के प्रयास।

उनकी इन पहलों ने अनुसंधान के अवसरों का विस्तार किया है और भारतीय अनुसंधान संस्थानों को वैश्विक मंच पर खड़ा किया है।

कृषि और सतत विकास में नवाचार

भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि है। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने तकनीकी हस्तक्षेपों के माध्यम से कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी अनुसंधान परियोजनाओं ने सटीक कृषि, मिट्टी की गुणवत्ता निगरानी, और जैविक खेती तकनीकों में नवाचार किए हैं।

उनके प्रमुख योगदानों में शामिल हैं:

- **स्मार्ट फार्मिंग समाधान** – फसल निगरानी के लिए IoT और AI का एकीकरण।
- **मिट्टी और जल गुणवत्ता प्रबंधन** – जैव-अपघटनशील मिट्टी संवर्धन प्रणाली विकसित करना।
- **पोस्ट-हार्वेस्ट कृषि-वानिकी पहल** – सरकारी समर्थित कृषि अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करना।

इन नवाचारों ने किसानों को उत्पादकता बढ़ाने, अपशिष्ट कम करने और स्थिरता को बढ़ावा देने में सहायता की है।

स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा नवाचारों पर प्रभाव

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने प्रारंभिक रोग पहचान, व्यक्तिगत चिकित्सा, और चिकित्सा प्रौद्योगिकी एकीकरण में क्रांतिकारी अनुसंधान किया है।

उनके कुछ प्रमुख नवाचारों में शामिल हैं:

- **एआई-संचालित मेडिकल इमेजिंग** – रेडियोलॉजी डायग्नॉस्टिक्स को मशीन लर्निंग एल्गोरिदम के माध्यम से उन्नत करना।
- **वियरेबल हेल्थ मॉनिटरिंग डिवाइसेस** – वास्तविक समय में स्वास्थ्य निगरानी के लिए बायोमेट्रिक सेंसर विकसित करना।
- **नैनोपार्टिकल-आधारित ड्रग डिलीवरी सिस्टम** – लक्षित दवा वितरण के लिए उन्नत अनुसंधान।

उनकी अनुसंधान परियोजनाओं ने न केवल चिकित्सा विज्ञान में सुधार किया है बल्कि रोग की शीघ्र पहचान और निवारक देखभाल में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

शिक्षा को अनुसंधान से जोड़ना

एक **कुलपति और अकादमिक नेता** के रूप में, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने अनुसंधान को उच्च शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया है।

उनकी प्रमुख पहलें शामिल हैं:

- **अनुसंधान-आधारित शिक्षण की शुरुआत** – छात्रों को प्रारंभिक स्नातक स्तर से ही अनुसंधान में संलग्न करना।

- **अनुसंधान फेलोशिप की स्थापना** – युवा शोधकर्ताओं और पीएचडी छात्रों के लिए वित्त पोषण की व्यवस्था करना।
- **उद्योग-नेतृत्व वाली कैपस्टोन परियोजनाएँ** – अकादमिक अनुसंधान को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के साथ संरेखित करना।

इन प्रयासों ने अनुसंधान-उन्मुख अकादमिक संस्कृति को बढ़ावा दिया है, जिससे आलोचनात्मक सोच और नवाचार को बढ़ावा मिला है।

अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए मान्यताएँ और पुरस्कार

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को अनुसंधान और विकास में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **विश्व गुरु / ग्लोबल गुरु अवार्ड (2021, यूएसए और नेपाल)** – वैश्विक अनुसंधान में योगदान के लिए।
- **अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक पुरस्कार (2020)** – इंजीनियरिंग और चिकित्सा विज्ञान में उनकी प्रगति को मान्यता देने के लिए।
- **नेतृत्व उत्कृष्टता पुरस्कार (2024, द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया)** – वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षा पर प्रभाव के लिए।
- **इंडो-अमेरिकन मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एक्सीलेंस अवार्ड (2024)** – अंतर-अनुशासनात्मक अनुसंधान में उनके प्रभाव को उजागर करने के लिए।

- येसबड विश्वविद्यालय द्वारा विश्व प्रतिष्ठित **नोबल लॉरेट पुरस्कार** 2024 प्राप्त किया ।

निष्कर्ष: अनुसंधान के माध्यम से भविष्य का निर्माण

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की नवाचार और अनुसंधान उत्कृष्टता की यात्रा उनके बौद्धिक विकास और राष्ट्रीय प्रगति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उनके योगदान विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग में भविष्य की प्रगति के लिए मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। अगले अध्याय में, हम यह पता लगाएंगे कि उनकी नीति-निर्माण और राष्ट्रीय विकास के प्रति प्रतिबद्धता ने भारत की शैक्षिक और आर्थिक संरचना को कैसे सुदृढ़ किया।

अध्याय 9: राष्ट्र सर्वोपरि: नीति और राष्ट्रीय विकास में योगदान

शिक्षा, अनुसंधान और नीतियों की भूमिका राष्ट्रीय विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** एक दूरदर्शी शिक्षाविद और नीति-निर्माता हैं, जिन्होंने शैक्षिक नीतियों, अनुसंधान ढाँचों और राष्ट्रीय विकास रणनीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका योगदान केवल अकादमिक जगत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सार्वजनिक नीति, शासन और सतत विकास पर भी गहरा प्रभाव डालता है। उनकी नेतृत्व क्षमता और विशेषज्ञता ने उन्हें शिक्षा, नवाचार और नीति-निर्माण के माध्यम से भारत के राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने में एक प्रमुख हस्ती बना दिया है।

शैक्षिक नेतृत्व और नीति-निर्माण में योगदान

उच्च शिक्षा की राष्ट्रीय प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए, प्रो. डॉ. के. पी. यादव शैक्षिक नीतियों, संस्थागत प्रशासन और प्रत्यायन प्रक्रियाओं के निर्माण में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं। मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति और भारतीय राष्ट्रपति द्वारा नामित प्रतिनिधि (IIIT तिरुचिरापल्ली और नागालैंड केंद्रीय विश्वविद्यालय) के रूप में, उन्होंने शैक्षिक नीति से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णयों को प्रभावित किया है।

उनके प्रमुख योगदानों में शामिल हैं:

- **गुणवत्ता आश्वासन को सुदृढ़ करना** – भारतीय विश्वविद्यालयों में शैक्षिक मानकों को बढ़ाने के लिए NAAC, NBA, ABET, TIMES

HIGHER RANKING, और NIRF प्रत्यायन प्रक्रियाओं को मजबूत करना।

- **रणनीतिक नीति कार्यान्वयन** – AICTE, UGC और राज्य विश्वविद्यालयों के लिए अनुसंधान-संचालित शैक्षिक सुधारों को आगे बढ़ाना।
- **उद्योग और अकादमिक जगत के बीच की खाई को पाटना** – छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कौशल से लैस करने के लिए अकादमिक-उद्योग साझेदारी विकसित करना।
- **बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देना** – उच्च शिक्षा में प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और मानविकी को एकीकृत करना।

इन पहलों ने भारत के उच्च शिक्षा तंत्र को मजबूत किया है, जिससे नवाचार, अनुसंधान और समग्र सीखने के लिए एक अनुकूल माहौल बना है।

आर्थिक और तकनीकी विकास में भूमिका

प्रो. डॉ. यादव ने भारत की अनुसंधान और विकास नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे आर्थिक विकास रणनीतियों के साथ संरेखित हों। उनकी आर्थिक और तकनीकी विकास में योगदान निम्नलिखित क्षेत्रों में रहा है:

- **अनुसंधान केंद्रों की स्थापना** – कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कृषि और क्वांटम कंप्यूटिंग में अत्याधुनिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना।

- **सार्वजनिक नीति में नवाचार** – सतत ऊर्जा नीतियों और नवीकरणीय ऊर्जा अनुसंधान में योगदान।
- **तकनीकी-संचालित विकास** – स्मार्ट अवसंरचना, डिजिटल परिवर्तन और **इंडस्ट्री 4.0 /5.0** पहलों की वकालत।
- **स्टार्टअप और उद्यमशीलता विकास** – **'आत्मनिर्भर भारत'** जैसी सरकारी पहलों का समर्थन करते हुए नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना।

उनका दूरदर्शी दृष्टिकोण भारत की नीतिगत प्रगति को दिशा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कृषि और ग्रामीण विकास में नीति योगदान

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, और इसका सतत विकास कृषि नीतियों में सुधारों पर निर्भर करता है। **प्रो. डॉ. यादव** ने आधुनिक खेती तकनीकों, सटीक कृषि और फसल कटाई उपरांत प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हुए कृषि नीति सुधारों में सक्रिय रूप से योगदान दिया है।

उनके प्रमुख योगदानों में शामिल हैं:

- **सतत कृषि पहल** – स्मार्ट सिंचाई प्रणालियों और डेटा-संचालित कृषि समाधानों का कार्यान्वयन।
- **किसानों को सशक्त बनाना** – वित्तीय समावेशन और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों की वकालत।

- **सरकारी सहयोग** – ग्रामीण आर्थिक सुधारों को बढ़ावा देने के लिए राज्य और केंद्रीय एजेंसियों के साथ साझेदारी।

उनकी पहलों ने कृषि उत्पादकता को बढ़ाने, नुकसान को कम करने और स्थायी खेती प्रथाओं को बढ़ावा देने में मदद की है।

राष्ट्रीय मान्यता और शासन पर प्रभाव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को नीति निर्माण और राष्ट्रीय विकास में उनके योगदान के लिए उच्चतम स्तरों पर मान्यता प्राप्त हुई है। उनके प्रमुख भूमिकाओं में शामिल हैं:

- **सरकारी एजेंसियों के सलाहकार** – उच्च शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार नीतियों पर परामर्श देना।
- **सरकारी समितियों में भागीदारी** – शैक्षिक और आर्थिक सुधारों के लिए विशेषज्ञ पैनलों में सेवा देना।
- **नीति योगदान के लिए पुरस्कार** – शासन और शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करना।

उनकी रणनीतिक नीति हस्तक्षेपों ने भारत की शिक्षा और शासन पारिस्थितिकी तंत्र पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है।

भविष्य के राष्ट्रीय विकास के लिए दृष्टि

राष्ट्र निर्माण के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के साथ, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** एक ऐसे भविष्य की कल्पना करते हैं जहां शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार भारत के वैश्विक नेतृत्व को आगे बढ़ाएं। उनकी भारत के लिए प्रमुख आकांक्षाएँ हैं:

- **डिजिटल और एआई-संचालित शिक्षा को बढ़ाना** – कक्षाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्रौद्योगिकी अपनाने को सुनिश्चित करना।
- **भारत की अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना** – अंतर-अनुशासनात्मक अनुसंधान और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना।
- **सतत और समावेशी विकास** – हरित पहलों और समावेशी आर्थिक नीतियों की वकालत।

उनकी नीतिगत दृष्टि और प्रतिबद्धता भारत के भविष्य के विकास को वर्षों तक प्रभावित करती रहेगी।

निष्कर्ष: दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से भारत का भविष्य गढ़ना

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की नीति और राष्ट्रीय विकास में योगदान की यात्रा उनकी देश की प्रगति के प्रति अद्वितीय प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने शिक्षा, अनुसंधान और रणनीतिक नीति-निर्माण के माध्यम से भारत की वैश्विक मंच पर स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से मजबूत किया है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, उनकी दृष्टि और नेतृत्व भावी पीढ़ी के नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और नेताओं के लिए एक प्रेरणा बनी रहेगी।

अगले अध्याय में, हम प्रो. डॉ. के. पी. यादव के अकादमिक क्षेत्र से परे व्यापक सामाजिक प्रभावों का अन्वेषण करेंगे।

अध्याय 10: कक्षा से परे – समाज पर प्रभाव

शिक्षा और अनुसंधान अलग-थलग नहीं होते, बल्कि वे सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक होते हैं। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने न केवल अकादमिक और नीति-निर्माण में योगदान दिया है, बल्कि समाज को आकार देने, समुदायों को सशक्त बनाने और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके प्रयासों ने विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है, यह सिद्ध करते हुए कि शिक्षा समग्र राष्ट्रीय विकास का एक शक्तिशाली माध्यम है। उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता, परामर्श और सशक्तिकरण पहलों ने देशभर में समुदायों पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

शिक्षा सभी के लिए: समावेशी शिक्षा के पक्षधर

प्रो. डॉ. यादव हमेशा से समावेशी शिक्षा के कट्टर समर्थक रहे हैं और विशेष रूप से वंचित समुदायों के लिए शैक्षिक पहुंच का विस्तार करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उनकी प्रमुख पहलें शामिल हैं:

- **ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा देना** – ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्कूलों और शैक्षिक कार्यक्रमों की स्थापना में योगदान, जिससे हाशिए पर रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके।
- **छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता कार्यक्रम** – मेधावी लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं की शुरुआत, जिससे वे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें।

- **महिलाओं को STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) में प्रोत्साहन** – विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए विशेष परामर्श कार्यक्रमों की शुरुआत।

इन प्रयासों के माध्यम से उन्होंने शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का माध्यम बनाया, जिससे भविष्य की पीढ़ियाँ सामाजिक-आर्थिक बाधाओं को तोड़ने में सक्षम हो सकें।

सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सामाजिक उत्थान

प्रो. डॉ. यादव ने यह समझा कि समाज के विकास के लिए केवल औपचारिक शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है। इसलिए उन्होंने विभिन्न सामुदायिक पहलों में सक्रिय भूमिका निभाई, जो सतत विकास, स्वास्थ्य सेवा और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देती हैं। उनके प्रमुख योगदान हैं:

- **कौशल विकास कार्यक्रम** – युवाओं को तकनीकी और रोजगारपरक कौशल से लैस करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों के साथ साझेदारी।

- **स्वास्थ्य और कल्याण जागरूकता** – ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में चिकित्सा शिविर, स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों और कल्याणकारी पहलों का आयोजन।

- **पर्यावरण संरक्षण प्रयास** – जलवायु परिवर्तन, वनीकरण और सतत जीवनशैली पर जागरूकता अभियान, जिससे युवाओं में पर्यावरणीय जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न हो।

इन पहलों ने शिक्षा और समाज के वास्तविक मुद्दों के बीच की खाई को पाटने में मदद की है, जिससे शिक्षा की सार्थकता कक्षा से बाहर भी नजर आई।

अगली पीढ़ी के नेताओं का मार्गदर्शन

एक शिक्षक का प्रभाव केवल कक्षा तक सीमित नहीं होता। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने हमेशा युवा मस्तिष्क, उद्यमियों और शोधकर्ताओं को मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित रहे हैं। उनके प्रयासों का प्रभाव निम्नलिखित तरीकों से देखा जा सकता है:

- **व्यक्तिगत मार्गदर्शन कार्यक्रम** – छात्रों, शोधकर्ताओं और युवा पेशेवरों को अकादमिक और करियर संबंधी मार्गदर्शन प्रदान करना।
- **स्टार्टअप और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना** – छात्रों को नवाचार आधारित व्यावसायिक विचार विकसित करने के लिए प्रेरित करना और उन्हें फंडिंग तथा विस्तार में सहायता करना।
- **युवा नेतृत्व प्रशिक्षण** – नेतृत्व, नैतिकता और व्यावसायिक विकास पर कार्यशालाएँ आयोजित कर छात्रों को जिम्मेदार और सक्षम नेता बनाना।

उनके मार्गदर्शन ने ऐसे व्यक्तियों को तैयार किया है जो अपने-अपने क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और राष्ट्र की बौद्धिक तथा आर्थिक प्रगति में सहायक बन रहे हैं।

सामाजिक उत्थान के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना

प्रो. डॉ. यादव का दृढ़ विश्वास है कि वैज्ञानिक अनुसंधान का प्रत्यक्ष लाभ समाज को मिलना चाहिए। उन्होंने समाज के उत्थान के लिए अनेक तकनीकी समाधान प्रस्तुत किए हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **एआई-संचालित स्वास्थ्य सेवा समाधान** – प्रारंभिक रोग पहचान के लिए एआई-आधारित नैदानिक उपकरणों का विकास, जिससे स्वास्थ्य सेवाएँ अधिक सुलभ और किफायती बनीं।
- **स्मार्ट कृषि पहल** – डेटा एनालिटिक्स और IoT समाधानों का उपयोग कर किसानों को फसल उत्पादन में सुधार, संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन और जलवायु चुनौतियों से निपटने में सहायता करना।
- **साइबर सुरक्षा जागरूकता** – डिजिटल सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोग पर सार्वजनिक व्याख्यान और राष्ट्रीय अभियान आयोजित करना।

ये नवाचार दर्शाते हैं कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रभाव केवल अनुसंधान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में वास्तविक परिवर्तन ला सकता है।

मानवीय पहल और परोपकार कार्य

अकादमिक और शोध कार्यों से इतर, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने कई परोपकारी पहलुओं में सक्रिय भूमिका निभाई है, जिनमें गरीबी उन्मूलन, आपदा राहत और सामाजिक न्याय शामिल हैं। उनके मानवीय योगदानों में शामिल हैं:

- **प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत सहायता** – प्रभावित समुदायों के लिए राहत अभियानों, खाद्य वितरण योजनाओं और पुनर्वास प्रयासों का आयोजन।
- **अनाथालयों और वृद्धाश्रमों को सहायता** – हाशिए पर रहने वाले समूहों को आवश्यक संसाधन, देखभाल और शिक्षा प्रदान करना।
- **सामाजिक न्याय आंदोलनों का समर्थन** – शिक्षा, रोजगार और शासन में समान अवसरों की वकालत कर वंचितों को सशक्त बनाना।

उनके परोपकारी प्रयास समाज की प्रगति और सामूहिक कल्याण के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

सामाजिक प्रभाव के लिए सम्मान और मान्यताएँ

प्रो. डॉ. के. पी. यादव के गहरे सामाजिक योगदानों को कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनके प्रतिष्ठित सम्मानों में शामिल हैं:

- **ग्लोबल ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड (2023)** – शिक्षा और सामाजिक न्याय में योगदान के लिए।
- **सामाजिक सेवा में उत्कृष्टता पुरस्कार (2024)** – सामुदायिक विकास पर प्रभाव के लिए।
- **युवा सशक्तिकरण के चैंपियन (2022)** – छात्रों, शोधकर्ताओं और उद्यमियों को मार्गदर्शन देने के लिए।

ये पुरस्कार न केवल उनके पिछले योगदानों को सम्मानित करते हैं, बल्कि भविष्य के परिवर्तनकर्ताओं के लिए भी प्रेरणा का कार्य करते हैं।

एक स्थायी विरासत: ज्ञान और कार्यों के माध्यम से समाज का रूपांतरण

प्रो. डॉ. के. पी. यादव का प्रभाव केवल अकादमिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। शिक्षा, प्रौद्योगिकी, सामाजिक कल्याण और नीति-निर्माण में उनके बहुआयामी योगदान उनके समग्र राष्ट्र-निर्माण दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। उनका यह दृढ़ विश्वास कि **शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की कुंजी है**, उन्हें एक प्रगतिशील और समावेशी भविष्य की दिशा में प्रेरित करता रहता है।

निष्कर्ष: एक बेहतर कल की दिशा में अग्रसर

शिक्षा को सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़कर, अनुसंधान को नवाचार से मिलाकर, और नेतृत्व को करुणा के साथ एकीकृत करके **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने एक ऐसी विरासत स्थापित की है जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। जैसे-जैसे हम अगले अध्याय की ओर बढ़ते हैं, हम उनके पुरस्कारों, उपलब्धियों और उस असाधारण यात्रा का अन्वेषण करेंगे जिसने उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता दिलाई है।

अध्याय 11: पुरस्कार और सम्मान – एक विशिष्ट जीवन

सफलता का सही मापदंड समाज पर छोड़ी गई अमिट छाप होती है। **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने शिक्षा, अनुसंधान, नेतृत्व और समाज सेवा में अपनी अमूल्य योगदान से प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया है। उनकी शिक्षा, नीति-निर्माण, तकनीकी प्रगति और मानवीय प्रयासों के प्रति अटूट समर्पण को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। ये सम्मान उनकी उत्कृष्टता, नवाचार और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं।

शैक्षणिक उत्कृष्टता और नेतृत्व में सम्मान

एक प्रख्यात शिक्षाविद और अकादमिक नेता के रूप में, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** को उच्च शिक्षा और अनुसंधान में उनके परिवर्तनकारी योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **सबसे प्रभावशाली कुलपति पुरस्कार (2021)** – शिक्षा और संस्थागत विकास में उनके असाधारण नेतृत्व को मान्यता।
- **वर्ष के सर्वश्रेष्ठ कुलपति पुरस्कार (2022)** – उनके रणनीतिक प्रयासों के लिए, जिससे MATS विश्वविद्यालय की वैश्विक रैंकिंग में वृद्धि हुई।
- **लीडरशिप एक्सीलेंस अवार्ड (2024)** – इंजीनियरिंग शिक्षा और अकादमिक नेतृत्व में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारतीय इंजीनियर्स संस्थान द्वारा सम्मानित।

- **अंतर्राष्ट्रीय ग्लोबल एक्सीलेंस अवार्ड (2024)** – उच्च शिक्षा नीतियों और अंतःविषय अनुसंधान को आकार देने में उनके प्रभाव को मान्यता।
- येसबड विश्वविद्यालय ज़ाम्बिया द्वारा विश्व प्रतिष्ठित नोबल लॉरिएट पुरस्कार 2024 एवं सम्मान ।

ये पुरस्कार उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने, अनुसंधान मानकों को ऊंचा करने और विश्व स्तरीय शैक्षणिक ढांचे के विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

अनुसंधान और तकनीकी नवाचारों में योगदान के लिए सम्मान

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की कंप्यूटर विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), वायरलेस संचार और क्वांटम कंप्यूटिंग में क्रांतिकारी योगदान को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें शामिल हैं:

- **लाइफटाइम रिसर्च अचीवमेंट अवार्ड** – बहुविषयक अनुसंधान और तकनीकी प्रगति में उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता।
- **IEEE इंटरनेशनल एलीट अकादमिक अवार्ड (2022)** – इंजीनियरिंग और तकनीकी अनुसंधान में उनके प्रभाव के लिए सम्मानित।
- **इंडो-अमेरिकन मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एक्सीलेंस अवार्ड (2024)** – एआई-संचालित अनुसंधान और साइबर सुरक्षा समाधानों में उनके क्रांतिकारी योगदान के लिए मान्यता।

- **ASSOCHAM शिक्षा और अनुसंधान नवाचार उत्कृष्टता पुरस्कार (2022)** – उभरती प्रौद्योगिकियों में उनके दूरदर्शी अनुसंधान को सम्मानित किया गया।

ये पुरस्कार विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई सीमाएँ पार करने और अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

शासन और नीति-निर्माण में योगदान के लिए सम्मान

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार में राष्ट्रीय नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके नीति-निर्माण में योगदान को निम्नलिखित प्रतिष्ठित पुरस्कारों से मान्यता मिली है:

- **राष्ट्रीय शिक्षा उत्कृष्टता पुरस्कार (2022)** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के कार्यान्वयन और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में उनके योगदान के लिए सम्मानित।
- **विश्व गुरु / ग्लोबल गुरु अवार्ड (2021, अमेरिका और नेपाल)** – वैश्विक शिक्षा और अनुसंधान पहलों में उनके दूरदर्शी योगदान के लिए।
- **विशिष्ट नीति सलाहकार पुरस्कार** – शिक्षा, नवाचार और शासन से संबंधित नीतियों के निर्माण में उनकी सलाहकार भूमिका के लिए सम्मान।

- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल (PPP) में विशेष आमंत्रित सदस्य (2022)** – शिक्षा, उद्योग और सरकारी निकायों के बीच सहयोग बढ़ाने में उनके योगदान को मान्यता।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्यवन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय समिति में सदस्य ।

उनका नीति-निर्माण में प्रभाव भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली को सशक्त बनाने, वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने और अनुसंधान-आधारित नवाचार को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण रहा है।

सामाजिक सेवा और मानवीय योगदान के लिए सम्मान

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने शिक्षा, ग्रामीण विकास और कौशल विकास को आगे बढ़ाने के लिए उल्लेखनीय योगदान दिया है, जिसे निम्नलिखित प्रतिष्ठित पुरस्कारों से मान्यता मिली है:

- **ग्लोबल ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड (2023)** – सामाजिक न्याय, गरीबी उन्मूलन और समावेशी शिक्षा में उनके योगदान को मान्यता।
- **युवा सशक्तिकरण पुरस्कार (2022)** – युवा नेताओं, उद्यमियों और शोधकर्ताओं के लिए उनके परामर्श कार्यक्रमों के लिए सम्मानित।
- **सामाजिक सेवा में उत्कृष्टता पुरस्कार (2024)** – आपदा राहत, ग्रामीण विकास और परोपकार के क्षेत्र में उनके प्रयासों को मान्यता।

ये सम्मान समाज में उनके समर्पण, सतत विकास और सामुदायिक उत्थान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय संस्थानों से मान्यता

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की प्रभावशीलता राष्ट्रीय सीमाओं से परे फैली हुई है, जिससे वह एक वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित शिक्षाविद और नीति-निर्माता बन गए हैं। उनके अंतरराष्ट्रीय सम्मान में शामिल हैं:

- **अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों से मानद उपाधियाँ** – इंजीनियरिंग, प्रबंधन, मानविकी , स्वास्थ्य Health Science, और विधि अध्ययन में उनके योगदान को मान्यता।
- **सलाहकार, किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, यूएसए** – वैश्विक शिक्षा और नीति-निर्माण में उनके योगदान को मान्यता।
- **कंट्री हेड (भारत), यसबड यूनिवर्सिटी, जाम्बिया, दक्षिण अफ्रीका** – वैश्विक शिक्षा नेटवर्क और अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका को सम्मानित।

ये मान्यताएँ अंतरराष्ट्रीय शिक्षा पहलों को बढ़ावा देने, सीमा-पार सहयोग को सशक्त बनाने और वैश्विक शैक्षणिक उत्कृष्टता में योगदान देने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

एक उत्कृष्ट जीवन की विरासत

29 वर्षों से अधिक के अपने शानदार करियर में, **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** ने शिक्षा, अनुसंधान, नीति-निर्माण और सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनके व्यापक पुरस्कार और मान्यताएँ उनकी **निरंतर उत्कृष्टता की खोज, नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता और एक प्रगतिशील समाज की उनकी दृष्टि** का प्रमाण हैं।

निष्कर्ष: एक सच्चे नेता की पहचान

पुरस्कार और सम्मान किसी व्यक्ति की यात्रा में महत्वपूर्ण पड़ाव होते हैं, लेकिन **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** के लिए ये सिर्फ व्यक्तिगत उपलब्धियाँ नहीं, बल्कि उनके शिक्षा, प्रौद्योगिकी, शासन और सामाजिक परिवर्तन में उनके गहरे प्रभाव का प्रमाण हैं। वह अगली पीढ़ी के शिक्षकों, शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं को प्रेरित करते हुए शिक्षा की दुनिया में एक स्थायी विरासत छोड़ रहे हैं।

जैसे-जैसे हम इस जीवनी के अंतिम खंड की ओर बढ़ते हैं, हम उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण, संघर्षों और उस स्थायी प्रभाव को खोजेंगे जो आने वाले समय में शिक्षा और शासन को आकार देगा।

अनुभाग 4: व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि और विरासत

"एक व्यक्ति का योगदान तब पूर्ण होता है जब वह समाज के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बन जाता है।"

("A person’s contribution is complete when they become a source of inspiration for society.")

"असली सम्मान पुरस्कारों में नहीं, बल्कि उन जीवनों में होता है जिन्हें हमने छुआ है।"

("True recognition is not in awards but in the lives we have impacted.")

अध्याय 12: ज्ञान और दर्शन: शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण पर विचार

शिक्षा किसी भी समृद्ध समाज की आधारशिला होती है, और प्रो. डॉ. के. पी. यादव के लिए ज्ञान की खोज केवल व्यक्तिगत जुनून नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्तरदायित्व भी है। शिक्षा, अनुसंधान और नेतृत्व में उनके दशकों के योगदान ने न केवल संस्थानों को आकार दिया है, बल्कि राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियों को भी प्रभावित किया है। उनका शिक्षा, अनुसंधान और राष्ट्र-निर्माण पर दर्शन नवाचार, समावेशिता और सशक्तिकरण पर आधारित है—ऐसे सिद्धांत जो उनके अनुसार भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक हैं। यह भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए आवश्यक हैं ।

शिक्षा का उद्देश्य: एक परिवर्तनकारी शक्ति

प्रो. डॉ. यादव के अनुसार, शिक्षा केवल जानकारी प्राप्त करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए; यह एक ऐसा उपकरण होना चाहिए जो समाज और व्यक्तियों को सशक्त बनाए। उनका मानना है कि:

✔ शिक्षा को केवल जानकारी देने का माध्यम नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सकारात्मक - आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने का एक साधन होना चाहिए।

✔ शिक्षा की भूमिका कक्षा तक सीमित नहीं होनी चाहिए; इसे छात्रों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करना चाहिए और उनमें अनुकूलनशीलता और लचीलापन विकसित करना चाहिए।

✔ एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली को शिक्षाविदों और उद्योग के बीच की खाई को पाटना चाहिए ताकि छात्र व्यावहारिक रूप से तैयार हो सकें।

"शिक्षा केवल जीविका कमाने का साधन नहीं है; यह समाज में सार्थक योगदान देने का मार्ग भी होनी चाहिए।" — **प्रो. डॉ. के. पी. यादव**

वे एक ऐसी गतिशील शिक्षा प्रणाली की कल्पना करते हैं जो सैद्धांतिक शिक्षा को व्यावहारिक अनुप्रयोगों के साथ एकीकृत करती है, जिससे उद्योग-तैयार पेशेवर, विचारशील नेता और सामाजिक परिवर्तनकारी तैयार हो सकें।

ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण

प्रो. डॉ. यादव का मानना है कि किसी राष्ट्र की बौद्धिक संपदा उसकी सबसे मूल्यवान संपत्ति होती है, और शिक्षा को आर्थिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए संरचित किया जाना चाहिए। उनके विचार निम्नलिखित सिद्धांतों पर केंद्रित हैं:

11 अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना

वे शोध-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हैं, जहां छात्र और संकाय केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने में योगदान दें।

वे उद्योग-अकादमिक सहयोग को मजबूत करने की वकालत करते हैं ताकि शोध निष्कर्षों को व्यावहारिक समाधान में बदला जा सके।

2 **उद्यमशील मानसिकता को बढ़ावा देना**

शिक्षा को ऐसा बनाया जाना चाहिए जिससे छात्र केवल नौकरी तलाशने वाले न बनें, बल्कि नौकरी सृजित करने वाले बनें।
◦ विश्वविद्यालयों के भीतर स्टार्टअप संस्कृति को प्रोत्साहित करके वे एक आत्मनिर्भर आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना चाहते हैं।

3 **भविष्य-उन्मुख कौशल का विकास**

आधुनिक तकनीकी प्रगति को देखते हुए, पारंपरिक शिक्षा मॉडल को विकसित करने की आवश्यकता है।

वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और अन्य उभरती हुई तकनीकों को पाठ्यक्रम में शामिल करने का समर्थन करते हैं ताकि छात्र भविष्य के लिए तैयार हो सकें।

"एक वास्तविक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था वह होती है जहाँ विचार प्रगति को प्रेरित करते हैं, और शिक्षा नवाचार के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती है।" —
प्रो. डॉ. के. पी. यादव

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण

उनका दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा राष्ट्र-निर्माण की नींव होती है। उनके अनुसार, किसी देश का समग्र विकास उसकी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और व्यापक पहुंच पर निर्भर करता है। उनका दृष्टिकोण निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है:

सुलभ और समावेशी शिक्षा:

✔ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को विशेषाधिकार नहीं बल्कि हर नागरिक का अधिकार होना चाहिए।

✔ उन्होंने सरकारी और निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित किया है ताकि शिक्षा हर वर्ग तक पहुंचे।

◦ **मूल्य-आधारित शिक्षा और नैतिक नेतृत्व:**

✔ केवल तकनीकी ज्ञान पर्याप्त नहीं है; नैतिकता, मूल्यों और नेतृत्व गुणों का निर्माण भी आवश्यक है।

✔ उन्होंने विभिन्न पाठ्यक्रमों में नैतिकता और नैतिक दर्शन को शामिल किया है ताकि छात्रों में सत्यनिष्ठा और जिम्मेदारी की भावना विकसित हो।

◦ **राष्ट्र-निर्माण में शिक्षकों की भूमिका:**

✔ शिक्षकों को समाज के वास्तुकार के रूप में देखा जाना चाहिए।
✔ उन्होंने सतत संकाय विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया है ताकि शिक्षण पद्धतियाँ प्रभावी और आधुनिक बनी रहें।

"एक सशक्त राष्ट्र कक्षाओं में निर्मित होता है। शिक्षा की गुणवत्ता किसी देश की नियति को निर्धारित करती है।" — **प्रो. डॉ. के. पी. यादव**

पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा के बीच की खाई को पाटना

प्रो. डॉ. यादव परंपरागत शिक्षा का सम्मान करते हैं, लेकिन उनका मानना है कि इसे वैश्विक उन्नति के साथ विकसित करने की आवश्यकता है। वे एक हाइब्रिड मॉडल का समर्थन करते हैं, जिसमें:

✔ गुरुकुल प्रणाली की अनुशासन और नैतिकता आधारित शिक्षा को शामिल किया जाए।

✔ डिजिटल उपकरणों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वर्चुअल लैब्स जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाए।

स्व-निर्भर भारत के लिए युवाओं को सशक्त बनाना

उनके प्रमुख दर्शन में "आत्मनिर्भर भारत" की भावना शामिल है। उनका मानना है कि:

✔ युवाओं को तकनीकी और व्यावसायिक कौशल से सशक्त किया जाना चाहिए।

✔ उच्च शिक्षा को अनुसंधान-उन्मुख और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जाना चाहिए।

"किसी राष्ट्र की प्रगति उसके युवाओं के सशक्तिकरण पर निर्भर करती है। शिक्षा उन्हें सपने देखने, नवाचार करने और नेतृत्व करने का आत्मविश्वास देनी चाहिए।" — **प्रो. डॉ. के. पी. यादव**

निष्कर्ष: बौद्धिक और सामाजिक विकास की विरासत

प्रो. डॉ. के. पी. यादव का शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण पर दर्शन केवल शिक्षाविदों तक सीमित नहीं है। उन्होंने अपना जीवन यह सुनिश्चित करने के लिए समर्पित किया है कि शिक्षा समाज को बदलने वाली शक्ति बनी रहे—एक ऐसी शक्ति जो सामाजिक परिवर्तन, तकनीकी प्रगति और राष्ट्रीय प्रगति को आगे बढ़ाती है।

उनके दूरदर्शी नेतृत्व, नीति-निर्माण और नवाचार-आधारित शिक्षा पहल ने एक प्रगतिशील, ज्ञान-आधारित भारत की नींव रखी है। उनके विचार और योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बने रहेंगे।

आगे की राह: भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, चुनौती उनके दृष्टिकोण को बड़े पैमाने पर लागू करने की होगी। उनकी समावेशी शिक्षा, अनुसंधान-उन्मुख विकास और नैतिक नेतृत्व पर आधारित विचारधारा भारतीय शिक्षा और आर्थिक विकास के भविष्य को आकार देने के लिए एक स्थायी विरासत के रूप में कार्य करेगी।

अध्याय 13: चुनौतियाँ और विजय: यात्रा से मिली सीख

हर उल्लेखनीय यात्रा कठिनाइयों और सफलताओं से भरी होती है। प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने अपने शैक्षणिक उत्कृष्टता और नेतृत्व के सफर में अनेक बाधाओं का सामना किया, लेकिन अपनी अदम्य इच्छाशक्ति, संकल्प और अपने दृष्टिकोण के प्रति अटूट समर्पण के माध्यम से उन्हें सफलतापूर्वक पार किया। उनका जीवन केवल उपलब्धियों की कहानी नहीं है, बल्कि उन लोगों के लिए प्रेरणा भी है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सार्थक परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं।

प्रारंभिक संघर्ष और बाधाओं को पार करना

हर अग्रणी नेता की तरह, प्रो. डॉ. के. पी. यादव को अपने करियर के शुरुआती दिनों में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनकी शिक्षा-दीक्षा एक सामान्य परिवार में, दूरस्थ गाँव में हुई। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सीमित संसाधनों, अधोसंरचना की कमी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सीमित उपलब्धता के बावजूद, उन्होंने हार नहीं मानी और अपने सपनों को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम किया।

उन्नत अध्ययन सामग्री तक सीमित पहुंच

जब वे अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, उस समय अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाएँ और नवीनतम तकनीकी संसाधन सीमित थे। लेकिन उनकी ज्ञान-पिपासा ने उन्हें वैकल्पिक स्रोतों की तलाश करने, वैश्विक विद्वानों से नेटवर्क बनाने और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

उच्च शिक्षा और शोध में संघर्ष

पीएच.डी., डी.एस.सी. और डी.लिट. जैसी अनेक उच्चतम डिग्रियाँ प्राप्त करना आसान नहीं था। इन डिग्रियों के लिए कठोर अकादमिक अनुसंधान, वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता और आलोचनात्मक समीक्षा से गुजरना पड़ता था। लेकिन उन्होंने असीम धैर्य और समर्पण के साथ इन चुनौतियों का सामना किया।

शिक्षाविद् और नेतृत्वकर्ता की भूमिका के बीच संतुलन

एक शिक्षाविद् से शैक्षणिक संस्थानों का नेतृत्व करने तक का सफर आसान नहीं था। प्रशासनिक नीतियाँ बनाना, शिक्षकों का विकास करना और संस्थागत सुधारों को लागू करना, ये सब उनके शोध और शिक्षण कार्य के साथ संतुलित करना एक बड़ी चुनौती थी।

उद्योग और शिक्षा जगत के बीच अंतर को पाटना

एक प्रमुख चुनौती यह थी कि विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम उद्योग की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं थे। इस अंतर को दूर करने के लिए उन्होंने उद्योग-उन्मुख पाठ्यक्रम, इंटर्नशिप कार्यक्रम और शोध सहयोग की शुरुआत की।

चुनौतियों को अवसरों में बदलना

हर चुनौती को अवसर में बदलने की उनकी क्षमता ने उन्हें एक प्रभावशाली परिवर्तनकर्ता बना दिया। उन्होंने इन कठिनाइयों से सबक लेकर शिक्षा व्यवस्था में कई सुधार किए। डॉ. यादव इस बात का ध्यान रखते हैं कि किसी भी छात्र को उपरोक्त परेशानियों का सामना न करना पड़े।

भारतीय उच्च शिक्षा का पुनर्रचना

उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली की जटिलताओं को बाधा के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसमें सुधार लाने के लिए एक अवसर माना। उन्होंने एनएएसी, एनबीए , ABET और एनआईआरएफ जैसे संस्थागत मान्यताओं की प्रक्रिया को मजबूत किया।

अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के साथ साझेदारी कर भारतीय शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया।

शिक्षा में डिजिटल और तकनीकी प्रगति की वकालत

उन्होंने तकनीकी नवाचार को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने के लिए कई कदम उठाए, जैसे कि:

✔ एआई-संचालित शिक्षण प्रणाली जिससे छात्रों को व्यक्तिगत सीखने का अनुभव मिल सके।

✔ स्मार्ट क्लासरूम और डिजिटल पुस्तकालय जो आधुनिक ज्ञान संसाधनों तक पहुँच को आसान बनाए।

✔ साइबर सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर शोध कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर भारतीय संस्थानों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना।

वंचित समुदायों के लिए शिक्षा की बाधाएँ तोड़ना

उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि शिक्षा केवल कुछ विशेष वर्गों तक सीमित

न रहे, बल्कि हर तबके तक पहुँचे:

छात्रवृत्ति और परामर्श कार्यक्रमों की शुरुआत। अकादमिक दुनिया में समान अवसरों को बढ़ावा देना। व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लागू करके छात्रों को व्यावहारिक कौशल प्रदान करना।

संस्थागत प्रतिरोध को दूर करना

कई बार शैक्षिक संस्थाएँ बदलाव का विरोध करती हैं क्योंकि पारंपरिक

प्रणालियाँ गहराई से जड़ें जमा चुकी होती हैं। लेकिन उनकी दूरदर्शी नेतृत्वशैली और नवाचार समर्थक दृष्टिकोण ने इन बाधाओं को दूर करने में मदद की। उन्होंने परिणाम-आधारित शिक्षा (OBE) रूपरेखा को लागू किया।

उद्योगों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देकर छात्रों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

एआई, ब्लॉकचेन और सतत विकास जैसे उभरते हुए क्षेत्रों में बहु-विषयक अनुसंधान केंद्रों की स्थापना की।

विजय: उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

प्रो. डॉ. यादव के अथक प्रयासों ने कई मील के पत्थर स्थापित किए, जो उनके संकल्प और नवाचार-प्रधान दृष्टिकोण का प्रमाण हैं।

चार सरकारी सहायता प्राप्त कृषि-व्यवसाय कॉलेजों की स्थापना उन्होंने कृषि और सतत विकास की महत्ता को पहचानते हुए चार नए कॉलेजों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

25 से अधिक पीएच.डी. और पोस्ट-डॉक्टरल विद्वानों का मार्गदर्शन
उनके मार्गदर्शन में कई शोधार्थियों ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कीं, जो आज विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन लाने में योगदान दे रहे हैं।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करना

उनके शैक्षिक और प्रशासनिक योगदान को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया:

विश्व गुरु पुरस्कार – भारतीय शिक्षा में उनके योगदान के लिए।

इंजीनियर्स संस्थान से उत्कृष्ट नेतृत्व पुरस्कार – अकादमिक नेतृत्व में योगदान के लिए।

वर्ष का सर्वश्रेष्ठ शिक्षाविद् और प्रशासनिक नेता – उच्च शिक्षा में सुधारों के लिए।

IEEE द्वारा अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठित शिक्षाविद् पुरस्कार – तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए।

डॉ. यादव को अकादमिक अनुसंधान और प्रशासन में उनके योगदान के लिए 2024 का नोबेल लॉरिएट अवार्ड येसबड यूनिवर्सिटी, ज़ाम्बिया द्वारा प्रदान किया गया।

भारत की वैश्विक शैक्षिक प्रतिष्ठा को बढ़ावा देना

उन्होंने भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए अमेरिका, कनाडा, South Afica, और यूरोप के विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग को मजबूत किया।

उनकी यात्रा से मिली महत्वपूर्ण सीख

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की असाधारण यात्रा शिक्षाविदों, नेताओं और नीति-निर्माताओं के लिए कई महत्वपूर्ण सीख प्रदान करती है:

सघर्ष के बिना सफलता नहीं मिलती – महान उपलब्धियाँ दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासों से ही संभव होती हैं।

नवाचार प्रगति को प्रेरित करता है – तकनीकी और अंतःविषय दृष्टिकोण अपनाने से शिक्षा अधिक प्रासंगिक बनी रहती है।

शिक्षा सभी के लिए होनी चाहिए – समाज की प्रगति तभी संभव है जब शिक्षा हर वर्ग तक पहुँचे।

सहयोग से प्रभाव बढ़ता है – उद्योग, सरकार और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ साझेदारी से शिक्षा प्रणाली में समग्र सुधार संभव होता है।

नेतृत्व केवल अधिकार नहीं, बदलाव लाने की क्षमता है – सच्चा नेतृत्व दूसरों को प्रेरित करने, अवसर देने और ऐसी संस्थाएँ बनाने में है जो लंबे समय तक समाज की सेवा करें।

निष्कर्ष: विजय और प्रेरणा की स्थायी विरासत

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की यात्रा ज्ञान, नेतृत्व और संघर्ष की शक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने चुनौतियों का सामना कर उन्हें अवसरों में बदला, सुधारों को बढ़ावा दिया और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का एक अमिट चिह्न छोड़ा।

उनका दृष्टिकोण केवल वर्तमान में सुधार लाने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी शिक्षा, अनुसंधान और नीति-निर्माण की नई राहें खोलने का प्रयास कर रहे हैं।

जैसे-जैसे उनकी यात्रा आगे बढ़ती है, उनकी दूरदृष्टि और नेतृत्व भविष्य के लिए एक आशा और प्रेरणा बनी रहेगी।

अध्याय 14: भविष्य के लिए प्रेरणा - युवा पीढ़ी के लिए संदेश

सच्चे नेतृत्व का सार न केवल व्यक्तिगत सफलता प्राप्त करने में निहित है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त करने में भी है। प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने एक शिक्षाविद्, शोधकर्ता और प्रशासक के रूप में अपने करियर को युवा व्यक्तियों के मानसिक विकास को आकार देने के लिए समर्पित किया है। उनका संदेश ज्ञान, नेतृत्व, नवाचार और दृढ़ता की उनकी गहरी समझ को दर्शाता है।

परिवर्तन के लिए शिक्षा की शक्ति

प्रो. डॉ. के. पी. यादव मानते हैं कि शिक्षा जीवन और समाज को बदलने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि सीखने की प्रक्रिया केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे वास्तविक दुनिया में लागू किया जाना चाहिए।

- **डिग्री से परे शिक्षा** – वे युवाओं को सलाह देते हैं कि वे शिक्षा को एक सतत प्रक्रिया के रूप में अपनाएँ, न कि केवल एक गंतव्य के रूप में। *"ज्ञान की खोज कभी समाप्त नहीं होनी चाहिए; सीखना जीवन भर चलने वाली यात्रा है।"*
- **अंतरविषयक अधिगम** – वे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और मानविकी को एक साथ जोड़ने की वकालत करते हैं ताकि वैश्विक चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

- **याद करने की बजाय कौशल विकास** – वे छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर निर्भर रहने के बजाय तार्किक विश्लेषण, समस्या-समाधान और संचार कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देते हैं।

दृढ़ता और लचीलापन: सफलता की कुंजी

युवाओं के लिए असफलताएँ अपरिहार्य हैं, लेकिन प्रो. डॉ. यादव मानते हैं कि चुनौतियों को अवसर के रूप में देखना चाहिए।

- *"सफलता असफलताओं पर आधारित होती है। हर असफलता एक पाठ पढ़ाती है, और हर संघर्ष चरित्र को मजबूत करता है।"*
- वे छात्रों को याद दिलाते हैं कि असफलता से सीखना और अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों पर केंद्रित रहना आवश्यक है।
- वे सलाह देते हैं कि कठिनाइयों को एक बाधा के रूप में नहीं, बल्कि एक सीखने के अनुभव के रूप में अपनाना चाहिए।

नेतृत्व आत्म-अनुशासन से शुरू होता है

प्रो. डॉ. यादव का मानना है कि नेतृत्व का अर्थ केवल पद प्राप्त करना नहीं, बल्कि जिम्मेदारी लेना है।

- *"नेतृत्व आत्म-अनुशासन और आत्म-जागरूकता से शुरू होता है।"*
- वे युवाओं को सलाह देते हैं कि वे अवसरों की प्रतीक्षा करने के बजाय पहल करें।

- वे नैतिक नेतृत्व के महत्व पर जोर देते हैं, जिसमें सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और जिम्मेदारी की भावना आवश्यक है।

भविष्य के लिए प्रौद्योगिकी और नवाचार का उपयोग

एक शिक्षाविद् और तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में, प्रो. डॉ. यादव मानते हैं कि तकनीकी प्रगति को अपनाना आधुनिक युग में अनिवार्य है।

- दुनिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्वांटम कंप्यूटिंग और ब्लॉकचेन के युग में प्रवेश कर रही है। वे छात्रों को नवीनतम तकनीकों से अवगत रहने और सतत सीखने की मानसिकता अपनाने की सलाह देते हैं।
- *"नवाचार प्रगति की कुंजी है।"* वे छात्रों को समस्या-समाधान की मानसिकता विकसित करने और आधुनिक चुनौतियों के रचनात्मक समाधान खोजने के लिए प्रेरित करते हैं।
- वे युवाओं से आग्रह करते हैं कि वे केवल तकनीक के उपभोक्ता न बनें, बल्कि इसके निर्माता, नवप्रवर्तक और उद्यमी बनें।

ज्ञान और सेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण

प्रो. डॉ. यादव का मानना है कि युवाओं की राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे उन्हें शिक्षा, उद्यमिता और समाज सेवा के माध्यम से देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं।

- *"हर युवा मस्तिष्क में इतिहास को बदलने की शक्ति होती है। खुद पर विश्वास करें और व्यापक हित में कार्य करें।"*

- वे छात्रों को केवल व्यक्तिगत सफलता की खोज करने के बजाय समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने की सलाह देते हैं।
- उनकी शैक्षिक सुधारों, संस्थागत नेतृत्व और अनुसंधान नवाचारों में की गई मेहनत यह दर्शाती है कि समर्पित व्यक्ति अपने राष्ट्र के लिए कितना कुछ कर सकते हैं।

वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करना, लेकिन सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहना

ग्लोबलाइजेशन ने अनगिनत अवसरों के द्वार खोल दिए हैं, और प्रो. डॉ. यादव इस बात पर जोर देते हैं कि वैश्विक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है, लेकिन अपनी सांस्कृतिक जड़ों को कभी नहीं भूलना चाहिए।

- *"दुनिया से सीखें, लेकिन अपनी जड़ों को न भूलें।"* वे युवाओं को विविधता को अपनाने और अंतर-सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देने की सलाह देते हैं।
- वे भारतीय मूल्यों, नैतिकता और दर्शन की महत्ता पर बल देते हैं, क्योंकि ये व्यक्ति के चरित्र और उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन का मार्गदर्शन करने में सहायक होते हैं।
- वे मानते हैं कि युवा अपने क्षितिज का विस्तार करें, लेकिन साथ ही भारत के विकास और समृद्धि में योगदान भी दें।

अंतिम संदेश: सपने देखें, साहस करें और प्राप्त करें

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की यात्रा ज्ञान, नेतृत्व और नवाचार की प्रेरणादायक कहानी है। उनका संदेश तीन मुख्य सिद्धांतों में संक्षिप्त किया जा सकता है:

1. **बड़े सपने देखें**
    - *"आपके सपने आपके भविष्य को परिभाषित करते हैं। कभी भी सीमाओं को अपने विकास में बाधा न बनने दें।"*
2. **जोखिम उठाने का साहस करें**
    - *"नवाचार और सफलता तब प्राप्त होती है जब आप अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलते हैं।"*
3. **ईमानदारी और नैतिकता के साथ सफलता प्राप्त करें**
    - *"सच्ची सफलता वही है जो सत्यनिष्ठा, नैतिकता और समाज सेवा पर आधारित हो।"*

युवाओं की असीम संभावनाओं में उनका अटूट विश्वास उन्हें आने वाली पीढ़ियों को ज्ञान, नवाचार और समर्पण के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। उनकी विरासत केवल उन संस्थानों में नहीं है जिन्हें उन्होंने आकार दिया है, बल्कि उन असंख्य युवा मस्तिष्कों में भी है, जिन्हें उन्होंने उज्जवल भविष्य की ओर प्रेरित किया है।

अध्याय 15: एक स्थायी विरासत - उनके आदर्शों का भविष्य

एक सच्चे नेता का मूल्यांकन केवल उनके जीवनकाल में प्राप्त उपलब्धियों से नहीं किया जाता, बल्कि उनके दृष्टिकोण, मूल्यों और आदर्शों के भविष्य की पीढ़ियों पर पड़ने वाले प्रभाव से किया जाता है। प्रो. डॉ. के. पी. यादव, जो अकादमिक, अनुसंधान और नेतृत्व के क्षेत्र में एक दिग्गज हैं, ने एक ऐसी स्थायी छाप छोड़ी है जो आने वाले दशकों तक शिक्षा प्रणाली को आकार देती रहेगी। उनका नवाचार, शैक्षणिक उत्कृष्टता, सामाजिक समानता और वैश्विक सहयोग पर आधारित दृष्टिकोण भविष्य के शिक्षकों, विद्वानों, नीति-निर्माताओं और छात्रों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत बने रहेंगे।

शैक्षिक उत्कृष्टता की दृष्टि को आगे बढ़ाना

प्रो. डॉ. यादव की विरासत का एक प्रमुख पहलू शिक्षा के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता है। उनके दृष्टिकोण ने संस्थानों को शिक्षण, अध्ययन और अनुसंधान के तरीके पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

1. उच्च शिक्षा संस्थानों को मजबूत बनाना

उन्होंने विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को बेहतर बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए:

- बहु-विषयक अध्ययन को प्रोत्साहित करना, जिसमें प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और मानविकी का एकीकरण हो।

- मान्यता और रैंकिंग को सख्त गुणवत्ता मानकों के माध्यम से उन्नत करना।
- व्यावहारिक और परियोजना-आधारित शिक्षण जैसी नवाचार शिक्षण विधियों को बढ़ावा देना।
- भारतीय और वैश्विक शिक्षा मानकों के बीच की खाई को पाटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।
- छात्रों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर करें।

भविष्य के शिक्षाविद् और विश्वविद्यालय प्रशासक इन रणनीतियों को लागू करते रहेंगे ताकि शैक्षणिक संस्थान प्रतिस्पर्धात्मक और वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक बने रहें।

2. अनुसंधान और नवाचार में क्रांति लाना

अनुसंधान और विकास प्रो. डॉ. यादव के अकादमिक योगदान की आधारशिला रहे हैं। वे मानते थे कि अनुसंधान समाधान-उन्मुख, बहु-विषयक और प्रभावशाली होना चाहिए।

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डेटा साइंस, साइबर सुरक्षा और सतत विकास में उनके योगदान ने भविष्य के अनुसंधान के लिए आधारशिला रखी।
- उनके द्वारा स्थापित उत्कृष्टता केंद्र युवा शोधकर्ताओं और नवाचारकर्ताओं को आगे बढ़ाने का कार्य करते रहेंगे।

- AI, IoT और ब्लॉकचेन को अनुसंधान में एकीकृत करने के उनके प्रयास नई तकनीकी प्रगति को प्रेरित करेंगे।

भविष्य के विद्वान और वैज्ञानिक इन नींवों पर निर्माण करेंगे, यह सुनिश्चित करते हुए कि भारत वैज्ञानिक खोज और तकनीकी नवाचार में अग्रणी बना रहे।

शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समानता को बढ़ावा देना

शैक्षणिक दुनिया से परे, प्रो. डॉ. यादव शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखने वाले एक दृढ़ समर्थक हैं। । उनके प्रयासों का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों को समान अवसर प्रदान करना हैं। ।

1. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच बढ़ाना

शिक्षा में असमानताओं को पहचानते हुए, उन्होंने सक्रिय रूप से काम किया:

- वंचित छात्रों के लिए छात्रवृत्ति कार्यक्रम बनाने में।
- आरक्षण और समावेशी नीतियों की वकालत करने में।
- ग्रामीण छात्रों को रोजगार योग्य कौशल प्रदान करने के लिए कौशल-आधारित शिक्षा शुरू करने में।

उनके प्रयास नीति-निर्माताओं, परोपकारी लोगों और शिक्षकों को एक अधिक समान शिक्षा प्रणाली की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

2. छात्रों में नेतृत्व कौशल विकसित करना

प्रो. डॉ. यादव की विरासत का एक महत्वपूर्ण पहलू उनके मार्गदर्शन में विकसित हुए नेता हैं। उनके नेतृत्व सिद्धांत आने वाली पीढ़ियों के शिक्षकों, शोधकर्ताओं और प्रशासकों को प्रेरित करते रहेंगे।

- छात्र-केंद्रित शिक्षण मॉडल भविष्य के शिक्षकों को महत्वपूर्ण सोच और समस्या-समाधान को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करेंगे।
- उनके परामर्श कार्यक्रमों ने एक प्रभावशाली श्रृंखला प्रतिक्रिया बनाई है, जिससे उनके शिष्य भी अब नए छात्रों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।
- उनका समग्र शिक्षा पर जोर छात्रों को संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के अवसर प्रदान करता रहेगा।

वैश्विक पहचान और शैक्षिक नीतियों पर प्रभाव

प्रो. डॉ. यादव का कार्य न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी शैक्षिक नीतियों को प्रभावित करने वाला रहा है।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों को आकार देना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में उनके योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण थे, जिनमें शामिल हैं:

- छात्रों के लिए लचीले अध्ययन मार्गों को बढ़ावा देना।
- बहु-विषयक शिक्षा को प्रोत्साहित करना।
- अनुसंधान-उन्मुख पाठ्यक्रम को मजबूत करना।

उनका योगदान यह सुनिश्चित करेगा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली लगातार विकसित होती रहे और बदलती दुनिया की जरूरतों के अनुकूल बनी रहे।

2. भारत की वैश्विक शैक्षिक प्रतिष्ठा को मजबूत बनाना

प्रो. डॉ. यादव ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई:

- वैश्विक विश्वविद्यालयों के साथ अनुसंधान और छात्र विनिमय कार्यक्रमों में साझेदारी की।
- सीमा-पार शैक्षिक पहलों को प्रोत्साहित किया।
- अंतरराष्ट्रीय अकादमिक और अनुसंधान मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व किया।

उनकी पहल भविष्य के शैक्षिक सुधारों के लिए एक मॉडल के रूप में काम करेगी, यह सुनिश्चित करते हुए कि भारत ज्ञान-संचालित राष्ट्र के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखे।

उनके आदर्शों का भविष्य: आगे क्या?

प्रो. यादव की अत्यधिक व्यस्तता के कारण उनसे मिलना काफी मुश्किल होता है। हालाँकि उनके आदर्श और सिद्धांत , उनके योगदान, उनके शिष्यों और जिन संस्थानों को उन्होंने आकार दिया, उनके माध्यम से जीवित रहेंगे।

1. उनके शैक्षिक सुधारों का विस्तार

- अधिक शैक्षणिक संस्थानों को उनकी तकनीकी-एकीकृत शिक्षा मॉडल को अपनाना चाहिए।
- सरकार को उनकी मान्यता और गुणवत्ता मूल्यांकन की सिफारिशों को लागू करना चाहिए।
- विश्वविद्यालयों को उनके कार्य से प्रेरित अनुसंधान केंद्रों का और अधिक विकास करना चाहिए।

2. उभरते क्षेत्रों में अनुसंधान जारी रखना

- भावी विद्वानों को AI, साइबर सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता में उनके क्रांतिकारी कार्य को जारी रखना चाहिए।
- शैक्षणिक संस्थानों को उनके बहु-विषयक अनुसंधान दृष्टिकोण से मेल खाने वाले परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए।

3. परामर्श और नेतृत्व कार्यक्रमों को मजबूत करना

- युवा प्रोफेसरों और प्रशासकों को उनकी सत्यनिष्ठा, दृढ़ता और समावेशिता की मूल्यों को बनाए रखना चाहिए।
- वरिष्ठ शिक्षाविदों को उनके मार्गदर्शन की परंपरा को जारी रखते हुए, भविष्य के शिक्षकों और शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष: एक कालातीत विरासत

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की कहानी केवल एक व्यक्ति की जीवनी नहीं है; यह ज्ञान, दृष्टि और नेतृत्व की शक्ति का प्रमाण है। शिक्षा, अनुसंधान और नीति-निर्माण में उनके योगदान ने भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक मजबूत नींव रखी है।

जैसे-जैसे संस्थान, नीति-निर्माता और विद्वान उनके आदर्शों को आगे बढ़ाते रहेंगे, उनका नाम उन सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा जो उत्कृष्टता के लिए प्रयासरत हैं।

उनकी स्थायी विरासत केवल पुस्तकों या पुरस्कारों तक सीमित नहीं है; यह उन अनगिनत व्यक्तियों के मन में जीवित है जिनका उन्होंने मार्गदर्शन किया, जिन संस्थानों को उन्होंने रूपांतरित किया, और जिन लोगों को उन्होंने प्रेरित किया। उनके आदर्शों का भविष्य उज्ज्वल बना रहेगा, यह सुनिश्चित करते हुए कि शिक्षा और समाज पर उनका प्रभाव आने वाली पीढ़ियों तक बना रहेगा।

"एक सच्चे नेता की विरासत उनके द्वारा प्राप्त उपलब्धियों में नहीं होती, बल्कि इसमें होती है कि वे दूसरों को क्या प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।" - **प्रो. डॉ. के. पी. यादव**

"एक व्यक्ति का योगदान तब पूर्ण होता है जब वह समाज के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बन जाता है।"

("A person’s contribution is complete when they become a source of inspiration for society.")

📝 "असली सम्मान पुरस्कारों में नहीं, बल्कि उन जीवनों में होता है जिन्हें हमने छुआ है।"

("True recognition is not in awards but in the lives we have impacted.")

अनुभाग 5: क्रियान्वित विरासत

"एक व्यक्ति का योगदान तब पूर्ण होता है जब वह समाज के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बन जाता है।"

("A person’s contribution is complete when they become a source of inspiration for society.")

"असली सम्मान पुरस्कारों में नहीं, बल्कि उन जीवनों में होता है जिन्हें हमने छुआ है।"

("True recognition is not in awards but in the lives we have impacted.")

उत्कृष्टता की दृश्य गाथा: उपलब्धियाँ और मील के पत्थर

यह अनुभाग **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** की विरासत को एक **दृश्य श्रद्धांजलि** के रूप में प्रस्तुत करेगा, जिसमें उनके जीवन के प्रमुख उपलब्धियों, मील के पत्थरों और वैश्विक मान्यताओं का फोटोग्राफिक दस्तावेज़ीकरण शामिल होगा। इसमें निम्नलिखित भाग होंगे:

1. पुरस्कार और सम्मान की छवियाँ

- प्राप्त **राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों** की तस्वीरें।
- **सम्मान समारोहों के प्रमुख क्षण**, जिसमें लीडरशिप अवार्ड्स शामिल हैं।

2. संस्थागत योगदान की झलकियाँ

- **शोध केंद्रों, शैक्षणिक सहयोगों और विश्वविद्यालय कार्यक्रमों** के उद्घाटन की तस्वीरें।
- **कुलपति और शैक्षणिक नेता** के रूप में कार्यकाल के महत्वपूर्ण क्षण।

3. अनुसंधान और विकास पहलों की तस्वीरें

- **पेटेंट और अनुसंधान प्रकाशनों** का दृश्य प्रतिनिधित्व।
- **विद्वानों और अनुसंधान समितियों** के साथ बैठकें, जो भविष्य के विकास पर केंद्रित हैं।

4. समाचार कतरनें और मीडिया विशेषताएँ

- **शिक्षा नीति, प्रौद्योगिकी और नेतृत्व** में उनके योगदान को उजागर करने वाले लेख।
- **प्रसिद्ध पत्रिकाओं और पत्रों में प्रकाशित साक्षात्कार और विचार लेख**।

5. छात्रों के साथ यादगार बातचीत और मार्गदर्शन सत्र

- **कार्यशालाओं, व्याख्यानों और छात्र परामर्श कार्यक्रमों** के अनौपचारिक क्षण।
- **छात्रों और शिक्षकों के प्रशंसापत्र**, जो उनकी प्रेरणादायक भूमिका को दर्शाते हैं।

6. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और मान्यता

- **वैश्विक सम्मेलनों, शैक्षणिक साझेदारी और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय यात्राओं** की तस्वीरें।
- **सरकारी निकायों, अनुसंधान संगठनों और शैक्षणिक परिषदों** से प्राप्त मान्यता।

यह अनुभाग पाठकों को **प्रो. डॉ. के. पी. यादव** के **शिक्षा, अनुसंधान और राष्ट्रीय विकास में गहरे प्रभाव** को **दृश्य अनुभव** के माध्यम से प्रस्तुत करेगा।

अगर आपको **संरचना में कोई और सुधार या अतिरिक्त संशोधन** चाहिए, तो कृपया बताएं!

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से भेंट

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से भेंट

प्रो. डॉ. के. पी. यादव, कुलपति, मैट्स विश्वविद्यालय, को राष्ट्रपति भवन में भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से भेंट करने का गौरव प्राप्त हुआ। इस चर्चा का केंद्र उच्च शिक्षा सुधार, नीतिगत प्रगति, और भारत के शैक्षणिक एवं अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को सशक्त बनाने की पहल रही। यह बैठक शिक्षा और शासन के भविष्य को आकार देने में उनकी प्रभावशाली भूमिका को दर्शाती है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों का सम्मान किया

प्रो. डॉ. के. पी. यादव, कुलपति, मैट्स विश्वविद्यालय, ने एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम में गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए उन्हें पुष्पगुच्छ भेंट किया। यह क्षण अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने, शिक्षा में नेतृत्व स्थापित करने और शासन एवं शिक्षाजगत के प्रमुख हितधारकों के साथ संस्थागत संबंधों को सशक्त बनाने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने एक प्रतिष्ठित नेता को अपनी पुस्तकें भेंट कीं

प्रो. डॉ. के. पी. यादव, कुलपति, मैट्स विश्वविद्यालय, ने अपनी लिखित पुस्तकें एक प्रतिष्ठित नेता को भेंट कीं, जो उनकी अकादमिक उत्कृष्टता और साहित्यिक योगदान का प्रतीक है। यह अवसर शिक्षा, अनुसंधान और राष्ट्र निर्माण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है, जो बौद्धिक विमर्श और नीतिगत प्रगति को दिशा देने में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को पुष्पांजलि देकर सम्मानित किया गया

प्रो. डॉ. के. पी. यादव का एक सुंदर पुष्पगुच्छ के साथ आत्मीय स्वागत किया गया, जो शिक्षा और नेतृत्व में उनके उल्लेखनीय योगदान के प्रति सराहना का प्रतीक है। अकादमिक उत्कृष्टता और नीतिगत नवाचार को बढ़ावा देने में उनकी सतत प्रयास संस्थानों और व्यक्तियों को प्रेरित करते रहते हैं।

राजभवन स्वागत समारोह में प्रो. डॉ. के. पी. यादव का सम्मान

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने राजभवन में आयोजित एक प्रतिष्ठित समारोह में तत्कालीन माननीय राज्यपाल एवं तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री को पुष्पगुच्छ भेंट किया। शिक्षा नीति और अकादमिक नेतृत्व में उनकी दूरदर्शिता को मान्यता देते हुए, इस महत्वपूर्ण आयोजन में उनकी उपस्थिति राष्ट्रीय विकास और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री को सप्रेम शुभकामनाएँ दीं

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने सम्मान और सहयोग के प्रतीक स्वरूप एक पुष्पगुच्छ भेंट किया, जिसमें शिक्षा, नीति सुधार और राष्ट्रीय प्रगति के महत्व पर विचार-विमर्श किया गया। उनका नेतृत्व शिक्षा और शासन के बीच सेतु का कार्य करता है, जिससे अकादमिक और नीतिगत सुधारों को एक नई दिशा मिलती है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव उच्च स्तरीय शैक्षणिक एवं नीतिगत चर्चा में भाग लेते हुए

प्रो. डॉ. के. पी. यादव प्रतिष्ठित शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के साथ एक रणनीतिक बैठक में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए शिक्षा सुधार, अनुसंधान प्रगति और संस्थागत उत्कृष्टता के लिए वैश्विक सहयोग पर अपने विशिष्ट विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। सन्दर्भ : नागालैंड केंद्रीय विश्वविद्यालय में एग्जीक्यूटिव कौंसिल मेंबर के रूप में जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए ।

नागालैंड विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में प्रो. डॉ. के. पी. यादव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव नागालैंड विश्वविद्यालय, लुमामी के छठे दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर शैक्षणिक उत्कृष्टता का उत्सव और स्नातकों को ज्ञान एवं नवाचार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी उपस्थिति उच्च शिक्षा और संस्थागत विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

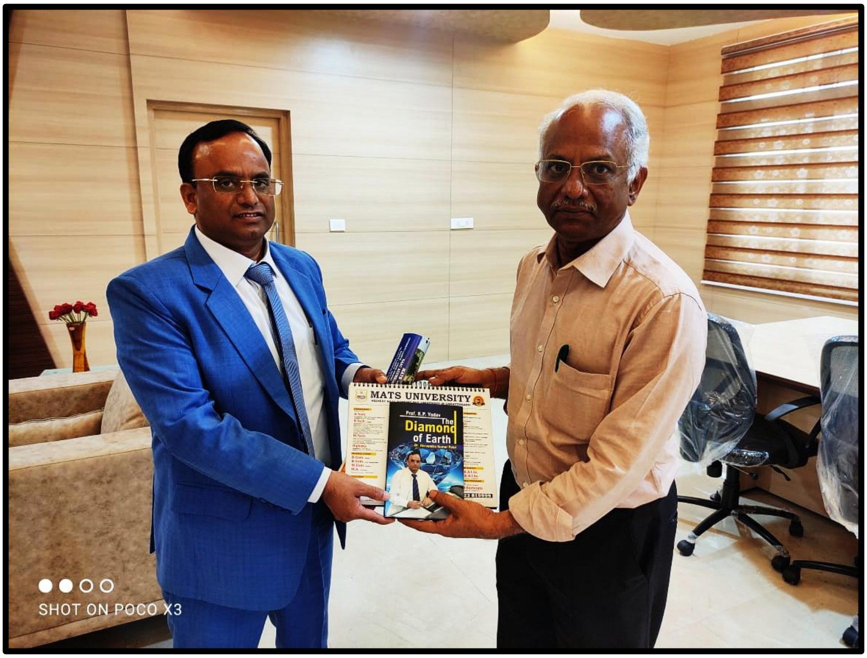

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने "द डायमंड ऑफ अर्थ" पुस्तक प्रस्तुत की

प्रो. डॉ. के. पी. यादव "द डायमंड ऑफ अर्थ" की एक प्रति तत्कालीन डायरेक्टर Inidan Institute of Information Technology, Trichi प्रोफ. शर्मा को प्रस्तुत करते हैं, जो शिक्षा, अनुसंधान और नेतृत्व में उनके अद्वितीय योगदान का प्रमाण है। उनका कार्य शिक्षा और नवाचार के भविष्य को प्रेरित और आकार देता रहेगा। यह पुस्तक स्वं प्रोफ. के पी यादव के ऊपर लिखी गयी है ।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के साथ

प्रो. डॉ. के. पी. यादव प्रतिष्ठित IITs, IIITs, and NITs शिक्षाविदों और विशेषज्ञों के साथ खड़े हैं, जहां शिक्षा, अनुसंधान और संस्थागत विकास पर विचार-विमर्श हो रहा है। उच्च शिक्षा में नवाचार और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने में उनका नेतृत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विश्व दुग्ध दिवस समारोह में प्रो. डॉ. के. पी. यादव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने विश्व दुग्ध दिवस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया, जहां उन्होंने डेयरी और खाद्य प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया। मुख्य अतिथि के रूप में उन्होंने डेयरी टेक्नोलॉजी में छात्रों के भविष्य पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन किया ।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने माननीय राज्यपाल अनुसुइया उइके को सम्मानित किया

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने माननीय राज्यपाल अनुसुइया उइके को श्रद्धा स्वरूप पुष्पगुच्छ भेंट किया, शासन और सामाजिक विकास में उनके महत्वपूर्ण योगदान को सम्मानित करते हुए। यह भेंट शिक्षा, प्रशासन और नीतिनिर्माण के बीच सेतु निर्माण के प्रति उनकी निरंतर प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जो राष्ट्रीय प्रगति को सशक्त बनाता है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने माननीय राज्यपाल अनुसुइया उइके को सम्मानित किया

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने छत्तीसगढ़ की माननीय राज्यपाल श्रीमती अनुसुइया उइके को प्रशंसा स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट किया, उनके सफल तीन वर्षीय कार्यकाल के सम्मान में। यह कार्यक्रम नेतृत्व की मान्यता का एक महत्वपूर्ण क्षण है, जो शासन और शिक्षा में उनके योगदान को उजागर करता है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को IEEE ग्लोबल कॉन्फ्रेंस में सम्मानित किया गया : Elite Academician Award

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को 2022 IEEE ग्लोबल कॉन्फ्रेंस ऑन पावर एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली में प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुआ। इस अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उनके शोध और शिक्षाविदों में योगदान को मान्यता दी गई, जिससे तकनीकी प्रगति पर उनके प्रभाव को और सुदृढ़ किया गया।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को उच्च शिक्षा और शोध में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशंसा प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया। उनकी नेतृत्व क्षमता शैक्षणिक उत्कृष्टता और संस्थागत विकास को निरंतर प्रेरित कर रही है।

NAAC A+ मान्यता प्राप्त करने वाली पहली निजी विश्वविद्यालय बनी मेट्स यूनिवर्सिटी

मेट्स यूनिवर्सिटी ने शैक्षणिक उत्कृष्टता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए प्रतिष्ठित NAAC A+ मान्यता प्राप्त करने वाली पहली निजी विश्वविद्यालय का गौरव प्राप्त किया है।यह प्रमाणपत्र माननीय राज्यपाल श्री रामेन डेका को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री गजराज पगारिया, कुलपति प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव और महानिदेशक श्री प्रीेश पगारिया द्वारा भेंट किया गया। राज्यपाल महोदय ने गुणवत्ता युक्त शिक्षा और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता की सराहना की।

Press Clippings

बहु आयामी प्रतिभा के धनी हैं प्रो. के. पी. यादव

Prof. K.P. Yadav
The Diamond of Earth

प्रोफेसर करूणेश प्रताप यादव विश्व विख्यात शिक्षाविद के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने शिक्षकों की नई पीढ़ी के बीच एक प्रमुख स्थान अर्जित किया है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर के सरकारी कॉलेज से बी.टेक की डिग्री की है। बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी झारखंड से एम.टेक किये है। डॉ. यादव ने आईआईएम रोहतक से परियोजना प्रबंधन में विशेषज्ञता किये है। उन्होंने भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर (राजस्थान) से पीएचडी और पोस्ट डॉक्टोरल डी. एससी. एनआईटी जयपुर एवं ओ पी जे अस विश्वविद्यालय और डी. लिट. अमेरिका के केंद्रीय विश्वविद्यालय, बोलीविया से किये है। वर्तमान में प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) में कुलपति के पद पर कार्यरत है। साथ ही ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन, नई दिल्ली (भारतसरकार) के मार्गदर्शक के तौर पर भी नियुक्त है, जिसके अंतर्गत इन्हें राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा तथा एसएसपी आईटीएम रायपुर के मार्गदर्शक भी नियुक्त किये गए हैं। साथ ही राजस्थान स्टेट की हिन्दी साहित्य भारती में भी मार्गदर्शक है। वह कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया, इंडियन एसोसिएशन इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्कॉलर्स के आजीवन सदस्य हैं,और इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रानिक्स इंजीनीयर्स (आई ई ई ई) यूएसए, इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ इंजीनीयर्स (आई ए ई) हांगकांग जैसे कुछ अन्य अंतरराष्ट्रीय समाजो में सदस्य हैं। प्रोफेसर यादव को चेयर प्रोफेसर, बेस्ट डायरेक्टर एनसीआर, लाइफ -टाईम रिसर्च अचीवमेंट अवार्ड, एमेरिटस एक्सीलेंस अवार्ड, इंटरनेशनल साइंटिस्ट अवार्ड 2020 ऑन इंजीनियरिंग साइंस मेडिसिन, मोस्ट इन्फ्लुएंसिव वाइस इा चांसलर अवार्ड के रूप में सम्मानित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2020 व 2021 में कलेक्टर नामांकित, छतीसगढ़ सरकार द्वारा एनईपी 2020 की योजना एवं क्रियान्वयन हेतु कुलपति समिति सदस्य, गुणवत्ता प्रशासन और गुणवता ज्ञान वितरण में उत्कृष्ट नेतृत्व के लिए अंतरराष्ट्रीय विमानन खेल बोर्ड के मुख्य न्यायाधीश नई दिल्ली, राष्ट्रीय शिक्षा उत्कृष्टता पुरस्कार छतीसगढ़ सरकार में उच्च शिक्षा के सार्वजनिक निजी भागीदारी पीपीपी मॉडल लिए के लिए समिति में विशेष आमंत्रित सदस्य, 2022 संयुक्त राज्य अमेरिका और नेपाल से विश्वगुरु। वैश्विक गुरु पुरस्कार 2021, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए आजीवन अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार 2022, AS-SOCHAM (भारत सरकार) अकादमिक और अनुसंधान नवाचार 2022 में उत्कृष्टता का पुरस्कार, वर्ष 2022 का सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक और प्रशासनिक LeÔdership Award 2022 , शिक्षक कल्यान फाउंडेशन के राष्ट्रीय सचिव साथ-साथ उन पर एक शोध मूर्त से अमूर्त तक : प्रो. के पी यादव पहले ही प्रकाशित हो चुका है। उन्हें शिक्षण, अनुसंधान, प्रशासन और उद्योग में 27 वर्षों का अनुभव है। प्रो. यादव एनसीआर दिल्ली क्षेत्र मे विभिन्न इंजीनियरिंग/ प्रबंधन संस्थानों में 8 साल तक निदेशक थे और संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान के पूर्व कुलपति एवं प्रेसिडेंट रहे हैं। उनकी विशेषज्ञता एनआईआरएफ/ आईसीएआर, बीसीआई, क्यूएस स्टार इंटरनेशनल जैसे एक्रीडिटेशन और रैंकिंग सिस्टम है। प्रो. यादव, एक महान शिक्षाविद, मैनेजमेंट गुरु और विज्ञान एवं हेल्थ साइंस उनके जीवन दर्शन के आधार है। कुलपति प्रो. केपी यादव के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है: पवित्रता के साथ बालक का शारीरिक और मानसिक विकास, इंद्रियों का विकास, नैतिकता का विकास, विवेक का विकास, अध्यात्म के साथ वैज्ञानिक सोच '

उन्होंने बी.टेक, एम.टेक के छात्रों के लिए कंप्यूटर, इलेक्ट्रानिक्स एवं पर्यावरण क्षेत्र में 21 पुस्तकें और 4 पुस्तक अध्याय लिखे हैं। साथ ही उन्होंने 4 विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह आयोजित किए। उन्होंने प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं और सेमिनारों में 160+ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। उनके निर्देशन में 14 पीएच.डी., 3 पोस्ट डॉक्टरेट फेलो और 4 पोस्ट डॉक्टरेट डी. एससी. उत्तीर्ण हुए। प्रो. के पी यादव का मानना है कि नम्र बनो, भले ही तुम राष्ट्र के मुखिया हो। वह इस बात पर जोर देते है कि अपने विनम्र स्वभाव को कभी न खोएं, ज़िंदगी आपको कहीं भी ले जाए । यह जरूरी है कि आप हमेशा जमीन से जुड़े रहें और हर समय विनम्रता बनाए रखें। वह हमेशा कड़ी मेहनत और स्मार्ट वर्क को सफलता का पहला कदम मानते हैं। उनका मानना है कि कड़ी मेहनत से हम अनुभव प्राप्त करते हैं। यह अनुभव हमें एक महत्वपूर्ण समस्या को हल करने और सफलता प्राप्त करने के लिए उस दिशा में सोचने में सक्षम बनाता है। प्रो. के. पी. यादव राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अनुभव के साथ-साथ बहुत गतिशील, सहयोगी, सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में से एक, बहुआयामी प्रतिभा के धनी , विशेषज्ञता वाले हैं। वह हमेशा समाज के लाभ के लिए शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार के लिए समर्पित है। उनका छात्र केंद्रित दृष्टिकोण बहुत ही सराहनीय है। प्रो. यादव हमेशा व्यवस्था की जमीनी हकीकत में विश्वास करते हैं। शिक्षा और समाज के प्रति उनकी ईमानदारी और समर्पण हमेशा दूसरों के लिए प्रेरक होता है। प्रो. यादव शिक्षा व्यवस्था में पारस पत्थर की तरह प्रतीत होते है क्योंकि उनसे जुड़कर समाज, अकादमिक माहौल और शोध हीरे की तरह चमकते है। वह छात्रों के सर्वांगीण विकास में विश्वास रखते हैं।

21 फरवरी 2023। द फोर्थ मिरर

प्रो. डॉ. के. पी. यादव: शिक्षा जगत में एक दूरदर्शी नेता

यह द फोर्थ पिलर (21 फरवरी, 2023) की समाचार कटिंग प्रो. डॉ. के. पी. यादव के शिक्षा, अनुसंधान और नेतृत्व में असाधारण योगदान को उजागर करती है। नवाचार सुधारों और शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए पहचाने गए, उन्हें संस्थानों के विकास और नवाचार को प्रोत्साहित करने में प्रभावशाली भूमिका निभाने के लिए लीडरशिप अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया।

फसल से मार्केट के लिए प्रोडक्ट बनाना और मार्केटिंग सिखाई जाएगी

प्रदेश में पहली बार एग्री बिजनेस और पोस्ट हार्वेस्ट के लिए अलग से खुलेंगे कॉलेज

एजुकेशन रिपोर्टर | रायपुर

हार्टीकल्चर की पढ़ाई से संबंधित प्रदेश में चार नए गवर्नमेंट कॉलेज खुलेंगे। इन कॉलेजों में फसल से मार्केट के लिए प्रोडक्ट बनाने से लेकर मार्केटिंग तक की पढ़ाई होगी। एग्री बिजनेस मैनेजमेंट कॉलेज जशपुर, पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी कॉलेज सनावल रामानुजगंज के साथ ही अंबिकापुर व रायगढ़ में एक-एक हार्टीकल्चर कॉलेज खोले जा रहे हैं। यह सभी कॉलेज, प्रदेश के महात्मा गांधी हार्टीकल्चर यूनिवर्सिटी से संबद्ध रहेंगे। नए कॉलेजों को लेकर विवि से तैयारी की जा रही है।

जानकारों ने बताया कि पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी कॉलेज देश के कुछ ही राज्य जैसे, केरल, हिमाचल प्रदेश व अन्य में है। यहां हार्टीकल्चर के बेसिक सब्जेक्ट पढ़ाए जाएंगे। इसके अलावा फसल की कटाई के बाद उसके प्रिजर्वेशन पर आधारित कोर्स होगा। इनमें अभी स्नातक स्तर की पढ़ाई होगी। यह कोर्स चार साल का होगा। इस कोर्स में छात्रों को बीटेक इन फूड टेक्नोलॉजी की डिग्री मिलेगी। एग्री बिजनेस में बिजनेस मैनेजमेंट इन हार्टीकल्चर की डिग्री मिलेगी। एग्री बिजनेस में मार्केटिंग, फाइनेंस और मैनेजमेंट से संबंधित विषयों की पढ़ाई होगी। इंदिरा गांधी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी में एग्री बिजनेस की पढ़ाई पहले से हो रही है, इसके लिए यहां एक डिपार्टमेंट है। हालांकि, अब इस नाम से पूरा कॉलेज होगा। दो अन्य नए कॉलेज में बीएससी हार्टीकल्चर की डिग्री दी जाएगी।

नए सत्र से एडमिशन भी होंगे, 30-30 सीटें रहेंगी

महात्मा गांधी हार्टीकल्चर यूनिवर्सिटी से संबद्ध प्रदेश में कुल 19 कॉलेज हैं। इसमें 15 सरकारी और 4 प्राइवेट कॉलेज हैं। सभी कॉलेजों में 60-60 सीटें हैं। अब चार नए कॉलेज खुल रहे हैं। इन कॉलेजों में 30-30 सीटें रहेंगी। नए सत्र यानी 2024-25 से इनमें एडमिशन दिए जाएंगे। इसे लेकर तैयारी की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि दाखिले के लिए व्यापमं से होने वाली प्री एग्रीकल्चर टेस्ट यानी पीएटी को आधार बनाया जाएगा।

पीएटी व पीवीपीटी 9 जून को, प्रवेश पत्र जल्द

प्री एग्रीकल्चर टेस्ट (पीएटी) और प्री वेटनरी पॉलीटेक्निक टेस्ट (पीवीपीटी) 9 जून को आयोजित की जाएगी। इसे लेकर तैयारी की जा रही है। इस परीक्षा के लिए पिछले दिनों व्यापमं से आवेदन मंगाए गए थे। करीब 20 हजार से अधिक आवेदन मिले हैं। इस परीक्षा के माध्यम बीएससी एग्रीकल्चर, बीएससी हार्टीकल्चर के अलावा वेटनरी और फिशरीज के डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश दिए जाएंगे।

बीएससी एग्रीकल्चर की सीटें बढ़ेंगी, नया गवर्नमेंट कॉलेज

बीएससी एग्रीकल्चर की पढ़ाई प्रदेश के 34 कॉलेजों में हो रही है। इसमें 28 गवर्नमेंट कॉलेज हैं। इनमें करीब ढ़ाई हजार सीटें हैं। नए सत्र में सीटों की संख्या बढ़ेगी। दरअसल, सुरजपुर में एग्रीकल्चर का एक नया गवर्नमेंट शुरू होगा। इसे लेकर तैयारी की जा रही है। यहां बीएससी एग्रीकल्चर की 24 सीटें रहेंगी। नए सत्र से इनमें दाखिले भी होंगे। पिछले कुछ वर्षों में सरकारी कृषि कॉलेजों की संख्या बढ़ी है। पिछली बार तीन कॉलेज खुले थे। इसमें पंखाजुर (कांकेर), शंकरगढ़ (बलरामपुर) और प्रतापपुर (सुरजपुर) शामिल है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने राज्य में एग्री-बिजनेस और पोस्ट-हार्वेस्ट शिक्षा की नींव रखी

छत्तीसगढ़ में पहली बार एग्री-बिजनेस और पोस्ट-हार्वेस्ट कॉलेजों की स्थापना: दैनिक भास्कर में प्रकाशित यह रिपोर्ट प्रो. डॉ. के. पी. यादव की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती है, जिन्होंने राज्य में विशेष शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई। उनका यह प्रयास कृषि शिक्षा और प्रसंस्करण उद्योग को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

CMYK

दैनिक लोकजीवन

प्रोफेसर के.पी. यादव को ए.आई.सी.टी.ई. ने मार्गदर्शक मनोनीत किया

लोकजीवन न्यूज सर्विस, भीलवाड़ा

संगम यूनिवर्सिटी भीलवाडा के वाईस चान्सलर प्रोफेसर के.पी. यादव को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद नई दिल्ली के नॉर्दन रीजन में मार्गदर्शन योजना के तहत मार्गदर्शी के रूप में नामित किया गया है, वह अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद से अनुमोदित नॉर्दन रीजन के सभी अभियांत्रिकी महाविद्यालय में बतौर मार्गदर्शी अपनी सेवाएं देंगे। इससे पूर्व प्रोफेसर यादव नेशनल बोर्ड ऑफ असेसमेंट एंड एक्रीडिटेशन काउंसिल (नैक), बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बी.सी.आई.), पब्लिक सर्विस कमीशन तर्था आइ.सी.ए.आर. के पैनल में शामिल हैं, भीलवा?ा के लिए यह गर्व की बात है की प्रोफेसर यादव को ए.आई.सी.टी.ई. ने मार्गदर्शक के रुप में नामित किया है। आने वाले समय में सभी उच्च शैक्षणिक संस्थानों के लिए नैक एक्रीडिटेशन तथा तकनिकी महाविद्यालय के लिए एन.बी.ए. एक्रीडिटेशन आवश्यक है, यह प्रक्रिया दिन में दिन जटिल होती जा रही है तथा उचित मार्गदर्शन के अभाव में नैक व एन.बी.ए. एक्रीडिटेशन किसी संस्था द्वारा प्राप्त करना काफी मुश्किल होता है ऐसे में प्रोफेसर यादव के कार्य अनुभव तथा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए एआईसीटीई ने नॉर्दन रीजन के सभी अभियांत्रिकी महाविद्यालय में मार्गदर्शन के लिए नियुक्त किया है जिनेके र्मागदर्शन मे एक्रीडिटेशन प्रक्रिया के साथ तकनिकी शिक्षा, उच्च शिक्षा के साथ शोध कार्यो मे गुणवत्ता मे सुधार होगा।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव: शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए एआईसीटीई मार्गदर्शक के रूप में मान्यता प्राप्त

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को एआईसीटीई मार्गदर्शक कार्यक्रम (Margdarshak Program) के तहत संस्थागत मार्गदर्शक (Mentor) के रूप में नियुक्त किया गया है। उनके मार्गदर्शन में विभिन्न संस्थान शैक्षणिक उत्कृष्टता, प्रत्यायन (Accreditation) और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुधार प्राप्त करने की दिशा में कार्य किया है । उनकी यह नेतृत्वकारी भूमिका उत्तर भारत के तकनीकी शिक्षा संस्थानों और फैकल्टी विकास (Faculty Development) को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव: शिक्षा के क्षेत्र में एक दूरदर्शी नेता

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने TEN NEWS LIVE डिबेट में भाग लिया, जिसमें उन्होंने कोविड-19 महामारी के दौरान आत्मनिर्भर भारत में शिक्षा की भूमिका पर चर्चा की। संगम विश्वविद्यालय के कुलपति और एक प्रतिष्ठित अकादमिक नेता के रूप में, उन्होंने शिक्षा के रूपांतरणीय प्रभाव, तकनीकी प्रगति और नीतिगत सुधारों पर प्रकाश डाला।

उनकी अंतर्दृष्टि ने निम्नलिखित पहलुओं पर जोर दिया:

- डिजिटल लर्निंग का महत्व
- शैक्षिक लचीलापन और शोध-आधारित रणनीतियाँ
- तकनीकी नवाचार जो उच्च शिक्षा के भविष्य को आकार देंगे

उनकी भागीदारी आत्मनिर्भर भारत में शिक्षा की भूमिका को मजबूत करने और उच्च शिक्षा क्षेत्र में नीति सुधारों को गति देने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

भीलवाड़ा 23 जुलाई 2020, गुरुवार

यसबन्ड यूनिवर्सिटी साउथ अफ्रीका के छात्रों ने सिखें बिज़नेस कम्यूनिकेशन के गुर

भीलवाड़ा। संगम यूनिर्वसीटी व यसबन्ड यूनिवर्सिटी जाम्बिया के मध्य फेकल्टी स्टुडेन्ट एक्सचेन्ज व नॉलेज शेयरिंग कार्यक्रम के तहत एमओयू साइन किया गया हैं इसी क्रम मे संगम यूनिर्वसीटी के वाईस चान्सलर प्रोफेसर के.पी. यादव ने यसबन्ड यूनिर्वसीटी जाम्बिया के वरिष्ठ संकाय सदस्यों को इन्नोवेशन टेक्नोलोजी तथा छात्रों को बिज़नेस कम्यूनिकेशन विषय पर पर विस्तार से चर्चा करते हुए आनलाईन व्याख्यान दिया। इस प्रकार के कार्यक्रम भविष्य में भी यसबन्ड यूनिवर्सिटी साउथ अफ्रीका द्वारा आयोजित किए जाएंगे जिसमें यसबन्ड यूनिवर्सिटी के वरिष्ठ संकाय सदस्य संगम यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों को व्याख्याताओं को संबोधित करेंगे।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव का वैश्विक अकादमिक सहयोग के प्रति दृष्टिकोण

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने संगम विश्वविद्यालय और येसबड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका के बीच एक शैक्षणिक सहयोग की पहल की, जिसका उद्देश्य छात्रों में व्यावसायिक संचार कौशल को बढ़ाना है।

उनकी नेतृत्व क्षमता अंतरराष्ट्रीय भागीदारी को बढ़ावा देती है, जिससे वैश्विक शिक्षा और ज्ञान विनिमय के नए अवसर सृजित हो रहे हैं।

संगम के 276 स्टूडेंट को मिली उपाधि

भास्कर संवाददाता | भीलवाड़ा

संगम यूनिवर्सिटी का 7वां दीक्षांत समारोह ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से हुआ। शुभारंभ मुख्य अतिथि इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज गौतम चौधरी ने किया। उन्होंने कि अधिकार प्लस कर्तव्य बराबर सफल व्यक्तित्व होता है। संगम समूह के चेयरमैन रामपाल सोनी, ईआईएम उड़ीसा के निदेशक प्रो. महादेव आदि ने भी संबोधित किया। वाइस चांसलर प्रो. केपी यादव ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। समारोह में कुल 276 विद्यार्थियों को डिग्री दी गई। विशिष्ट अतिथि संतोष कुमार यादव आईएएस ज्वाइंट सेक्रेट्री मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, विशेष अतिथि प्रोफेसर डॉ. महादेव जयसवाल, निदेशक इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, उड़ीसा, कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट डॉ. शिवप्रसाद नकाते, डॉ. हरेंद्र कुमार डीसीपी जयपुर, देवेंद्र प्रताप जागावत डीएफओ, मुकेश मीणा एसडीएम हमीरगढ़, संगम उद्योग समूह के चेयरमैन एवं संगम यूनिवर्सिटी के चेयर पर्सन रामपाल सोनी, संगम उद्योग समूह के प्रबंध निदेशक एसएन मोदानी, यूनिवर्सिटी के बोर्ड मेंबर अनुराग सोनी आदि ने शिरकत की।

संगम यूनिवर्सिटी में सातवें दीक्षांत समारोह में उपस्थित अतिथि व अन्य।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव: शिक्षा में उत्कृष्टता को सम्मानित करते हुए

संगम विश्वविद्यालय के 7वें दीक्षांत समारोह के दौरान, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने 276 छात्रों को डिग्री प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनकी शिक्षा, शोध और संस्थागत विकास की दृष्टि भविष्य के नेताओं को तैयार करने में लगातार योगदान दे रही है।

1836 में मानव शरीर की संरचना का अहम गूढ़ रहस्यों को खोज निकाला।

भीलवाड़ा

अजमेर, रविवार, 10 जनवरी 2021 7

संगम यूनिवर्सिटी दीक्षांत समारोह

कलक्टर नकाते को मानद उपाधि से नवाजा

न्यूज सर्विस/नवज्योति, भीलवाड़ा

संगम यूनिवर्सिटी भीलवाड़ा में सातवाँ दीक्षांत समारोह का आयोजन आनलाईन व आफलाईन माध्यम से किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जस्टिस गौतम चौधरी इलाहाबाद हाई कोर्ट, विशिष्ट अतिथि संतोष कुमार यादव आईएएस ज्वाइंट सेक्रेट्री मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, विशेष अतिथि प्रोफेसर डॉ. महादेव जयसवाल, निदेशक इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, उड़ीसा, जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट डॉ. शिवप्रसाद नकाते, डॉ. हरेंद्र कुमार आई.पी.एस., डी.सी.पी. जयपुर, देवेंद्र प्रताप जागावत डी.एफ.ओ. भीलवाड़ा, मुकेश मीणा एस.डी.एम. हमीरगढ़, संगम उद्योग समूह के चेयरमैन व संगम यूनिवर्सिटी के चेयर पर्सन रामपाल सोनी, संगम उद्योग समूह के प्रबंध निदेशक एस. एन. मोदानी, संगम यूनिवर्सिटी के बोर्ड मेंबर अनुराग सोनी एकेडमिक काउंसिल के सदस्यों व रजिस्ट्रार डॉ. राजीव महता द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। संगम उद्योग समूह के चेयरमैन सोनी ने बताया कि डिग्री की वैल्यू तभी तक है जब आपको नॉलेज है इसलिए अपने आपको अपडेटेड रखना सबसे ज्यादा जरूरी है। इस वर्ष आयोजित दीक्षांत समारोह में कुल 276 विद्यार्थियों को डिग्री दी गई जिनमें एक डॉक्टरेट ऑफ साइन्स (डी.एस.सी.) चार पी.एच.डी की डिग्री शामिल है। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा चार मानद उपाधियां भी इस वर्ष प्रदान की गई जिसमें डॉ महादेव जयसवाल को डॉक्टरेट ऑफ साइंस की मानद उपाधि, शिवप्रसाद मदन नकाते को मानद पीएचडी न्यूट्रिशन थ्रु न्यूट्री गार्डन इन आंगनवाड़ी स्कूल्स एंड हॉस्पिटल के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों केलिए, गौतम चौधरी को मानद पीएचडी सरल सुलभ सर्वव्यापी न्याय व्यवस्था में योगदान हेतु, संतोष कुमार यादव को मानद पीएचडी सोसाइटल डेवलपमेंट एंड एडमिनिस्ट्रेशन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु से मानद उपाधियो से सम्मानित किया गया।

भीलवाड़ा के संगम विवि में आयोजित दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते जिला कलक्टर नकाते। -नवज्योति

प्रो. डॉ. के. पी. यादव: संगम विश्वविद्यालय के 7वें दीक्षांत समारोह में उत्कृष्टता का सम्मान

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा के 7वें दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की, जहाँ उन्होंने उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों को मान्यता दी।

यह आयोजन स्नातकों के सम्मान और प्रख्यात व्यक्तित्वों के सत्कार के साथ संपन्न हुआ, जिससे उनकी शैक्षिक उत्कृष्टता और उच्च शिक्षा में नेतृत्व के प्रति प्रतिबद्धता और अधिक सशक्त हुई।

भारतीय मुद्रा में उठा पटक जारी रहने का अंदेशा -एक विश्लेषण

प्रो. (डॉ.) के.पी. यादव
www.aatmakijwala.com

भीलवाड़ा। रुपया यूएस डॉलर के मुकाबले 73.31 रुपये पर कारोबार कर रहा है जो एक साल पहले के 71.16 की कीमत से 3.02 प्रतिशत का नकारात्मक बदलाव है। मार्च 2020 में रुपया 75.32 पर फिसल गया जोकि 2020 में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 5.3 प्रतिशत से अधिक की गिरावट है, इसमें से 4.1 प्रतिशत गिरावट तो सिर्फ मार्च 2020 में ही आयी । इस गिरावट की मुख्य वजह थी इन्वेस्टर्स की कोविद 19 को लेकर गहरी चिंता। कोविद -19 महामारी के आर्थिक नतीजे से डरते हुए वैश्विक निवेशकों ने भारत और दूसरी उभरती हुए बाजार में हिस्सेदारी बहुत कम कर दी और उस पैसे को नकदी और डॉलर्स के रूप में सुरक्षित कर लिया। इसके अलावा, तेल की कीमत, जो भारत के आयात बिल का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, ने मार्च, 2020 में नाटकीय रूप से गिरावट दर्ज की है, जिसमें ब्रेंट क्रूड ऑयल वायदा 20 मार्च को 46 प्रतिशत से डॉलर 26.98 से अधिक हो गया है। हालांकि कच्चे तेल की कीमत जनवरी, 2021 में धीरे-धीरे बढ़कर 55.76 डॉलर तक पहुंच गया, इसने भारत को अपने चालू खाते के घाटे को अपेक्षाकृत कम रखने और रुपए को लुढ़कने से बचाये रखने में मदद की है। आरबीआई ने ब्याज दरों में कटौती की है। यह एक ऐसा कदम है जो इस समय इस डूबती हुई अर्थव्यवस्था का समर्थन तो करता है मगर संभावित रूप से फिर से रुपये पर दबाव को बढ़ा सकता है। आरबीआई गवर्नर ने 22 मई 2020 को मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक में महत्वपूर्ण नीतिगत दरों में कटौती की घोषणा की। रेपो रेट 4.40 प्रतिशत से नीचे 4.00 प्रतिशत पर सेट किया गया था। यह दर आज जनवरी 2021 तक कायम है। भारतीय रुपया मार्च, 2021 तक फिर से कोरोना के पहले वाले स्तर पर वापिस आ सकता है। इस उम्मीद के मुख्य कारण है की इस समय चालू खाते के अधिशेष और उम्मीद है कि केंद्रीय बैंक एक मजबूत मुद्रा के प्रति अधिक सहिष्णु हो सकता है। विशेषज्ञों को उम्मीद है कि मार्च - 2021 के अंत में रुपया फिर से फरवरी 2020 के स्तर पर आ सकता है।

भारतीय मुद्रा क्यों कमजोर हो रही है?

जैसा कि 2008 में ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस (जी.एफ.सी) के दौरान हुआ था, नवीनतम कोविद -19 के प्रकोप से व्यापक आर्थिक अनिश्चितता ने दुनिया भर के अधिकांश निवेशकों और व्यवसायों को संकट के समय सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति का संरक्षण करने के लिए मजबूर किया है: नकद और अधिक विशेष रूप से अमेरिकी डॉलर। 2008 में, यूरो के मुकाबले डॉलर लगभग 22 प्रतिशत मजबूत हुआ, विशेष रूप से दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था ने यू.एस. मुद्रा को जमा किया। मार्च, 2020 की शुरुआत के बाद से, विदेशी निवेशकों ने 2013 के टेपर टैंट्रम के बाद से नहीं देखे गए पैमाने पर भारतीय ई टी और ऋण को बेच दिया। 20 मार्च को, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शेयरों और बॉन्डों की 95,485 करोड़ रुपये यानी 12 अरब डॉलर से अधिक की बिक्री की थी। यह व्यवहार इक्विटी बाजार की तेज गिरावट के साथ मेल खाता है।

रुपया यहाँ से कहाँ जायेगा ?

यह देखते हुए कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी की ओर बढ़ने की संभावना है, रुपये सहित अन्य मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की बढ़त संभावित है। भारतीय मुद्रा के लिए आगे स्पष्ट रूप से अधिक दर्द है। इसे इस तथ्य से जोड़िए कि भारत की अपनी घरेलू अर्थव्यवस्था एक विस्तारित सुस्ती को उलटने के लिए संघर्ष कर रही है - निजी उपभोग और निवेश दोनों ही में कोई बढ़ोतरी के संकेत नहीं मिल रहे हैं। इस मंदी के दौर को देखते हुए रुपया का निकट भविष्य में उठ पाना काफी हद तक मुश्किल लग रहा है।
हालांकि, कुछ कारक बस थोड़ा सा आराम प्रदान करते हैं। एक तो यह की भारत का विदेशी मुद्रा भंडार अभी भी काफी मजबूत स्तर पर है और 1 जनवरी, 2021 को कुल मिलाकर लगभग 586 बिलियन डॉलर की राशि है। रिजर्व बैंक विदेशी मुद्रा बाजार में अस्थिरता को कम करने के लिए जरूरत पड़ने पर बाजार में कदम रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि डॉलर की आपूर्ति में अचानक कमी रुपये को कहीं कमजोर न कर दे।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव: आर्थिक और नीतिगत विश्लेषण में एक दूरदर्शी

यह लेख प्रो. डॉ. के. पी. यादव को केंद्र में रखते हुए भारतीय मुद्रा में उतार-चढ़ाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

उन्होंने आर्थिक प्रवृत्तियों और भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा करते हुए वित्तीय नीति और आर्थिक स्थिरता में अपनी विशेषज्ञता को उजागर किया।

इस लेख में उन्होंने रुपये की स्थिरता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों पर प्रकाश डाला है, जो उनके आर्थिक दृष्टिकोण और नीतिगत विश्लेषण की गहराई को दर्शाता है।

7

भारतीय मुद्रा में उठा पटक जारी रहने का अंदेशा

रुपया यूएस डॉलर के मुकाबले 73.31 रुपये पर कारोबार कर रहा है जो एक साल पहले के 71.16 की कीमत से 3.02 प्रतिशत का नकारात्मक बदलाव है। मार्च 2020 में रुपया 75.32 पर फिसल गया जोकि 2020 में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 5.3 प्रतिशत से अधिक की गिरावट है, इसमें से 4.1 प्रतिशत गिरावट तो सिर्फ मार्च 2020 में ही आयी। इस गिरावट की मुख्य वजह थी इन्वेस्टर्स की कोविद 19 को लेकर गहरी चिंता। कोविद -19 महामारी के आर्थिक नतीजे से डरते हुए वैश्विक निवेशकों ने भारत और दूसरी उभरती हुए बाजार में हिस्सेदारी बहुत कम कर दी और उस पैसे को नकदी और डॉलर्स के रूप में सुरक्षित कर लिया।

भारतीय मुद्रा क्यों कमजोर हो रही है?

जैसा कि 2008 में ग्लोबल फाइनेंशियल ? इसिस (जी.एफ.सी) के दौरान हुआ था, नवीनतम कोविद -19 के प्रकोप से व्यापक आर्थिक अनिश्चितता ने दुनिया भर के अधिकांश निवेशको और व्यवसायों को संकट के समय सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति का संरक्षण करने के लिए मजबूर किया हैरू नकद और अधिक विशेष रूप से अमेरिकी डॉलर। 2008 में, यूरो के मुकाबले डॉलर लगभग 22 प्रतिशत मजबूत हुआ, विशेष रूप से दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था ने यू.एस. मुद्रा को जमा किया।

मार्च, 2020 की शुरुआत के बाद से, विदेशी निवेशकों ने 2013 के टेपर टैंट्रम के बाद से नहीं देखे गए पैमाने पर भारतीय इक्विटी और ऋण को बेच दिया। 20 मार्च को, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शेयरों और बॉन्डों की 95,485 करोड़ रुपये यानी 12 अरब डॉलर से अधिक की बिर ी की थी। यह व्यवहार इक्विटी बाजार की तेज गिरावट के साथ मेल खाता है।

रुपया यहाँ से कहाँ जायेगा?

यह देखते हुए कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी की ओर बढ़ने की संभावना है, रुपये सहित अन्य मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की बढ़त संभावित है। भारतीय मुद्रा के लिए आगे स्पष्ट रूप से अधिक दर्द है। इसे इस तथ्य से जोड़िए कि भारत की अपनी घरेलू अर्थव्यवस्था एक विस्तारित सुस्ती को उलटने के लिए संघर्ष कर रही है - निजी उपभोग और निवेश दोनों ही में कोई बढ़ोतरी के संकेत नहीं मिल रहे हैं। इस मंदी के दौर को देखते हुए रुपया का निकट भविष्य में उठ पाना काफी हद तक मुश्किल लग रहा है।

हालांकि, कुछ कारक बस थोड़ा सा आराम प्रदान करते हैं। एक तो यह की भारत का विदेशी मुद्रा भंडार अभी भी काफी मजबूत स्तर पर है और 1 जनवरी, 2021 को कुल मिलाकर लगभग 586 बिलियन डॉलर की राशि है। रिजर्व बैंक विदेशी मुद्रा बाजार में अस्थिरता को कम करने के लिए जरूरत पड़ने पर बाजार में कदम रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि डॉलर की आपूर्ति में अचानक कमी रुपये को कहीं कमजोर न कर दे।

इसके अलावा, तेल की कीमत, जो भारत के आयात बिल का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, ने मार्च, 2020 में नाटकीय रूप से गिरावट दर्ज की है, जिसमें ब्रेंट क्रूड ऑयल वायदा 20 मार्च को 46 प्रतिशत से डॉलर 26.98 से अधिक हो गया है। हालांकि कच्चे तेल की कीमत जनवरी, 2021 में धीरे-धीरे बढ़कर 55.76 डॉलर तक पहुंच गया, इसने भारत को अपने चालू खाते के घाटे को अपेक्षाकृत कम रखने और रुपए को लुढ़कने से बचाये रखने में मदद की है।

आरबीआई ने ब्याज दरों में कटौती की है। यह एक ऐसा कदम है जो इस समय इस डूबती हुई अर्थव्यवस्था का समर्थन तो करता है मगर संभावित रूप से फिर से रुपये पर दबाव को बढ़ा सकता है। आरबीआई गवर्नर ने 22 मई 2020 को मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक में महत्वपूर्ण नीतिगत दरों में कटौती की घोषणा की। रेपो रेट 4.40 प्रतिशत से नीचे 4.00 प्रतिशत पर सेट किया गया था। यह दर आज जनवरी 2021 तक कायम है।

भारतीय रुपया मार्च, 2021 तक फिर से कोरोना के पहले वाले स्तर पर वापिस आ सकता है। इस उम्मीद के मुख्य कारण हैं की इस समय चालू खाते के अधिशेष और उम्मीद है कि केंद्रीय बैंक एक मजबूत मुद्रा के प्रति अधिक सहिष्णु हो सकता है। विशेषज्ञों को उम्मीद है कि मार्च - 2021 के अंत में रुपया फिर से फरवरी 2020 के स्तर पर आ सकता है।

प्रो. (डॉ.) के.पी. यादव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने विशेष लेख में मुद्रा प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने भारतीय मुद्रा में उतार-चढ़ाव पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने आर्थिक प्रवृत्तियों, वैश्विक प्रभावों और संभावित वित्तीय प्रभावों पर चर्चा की।

उनकी विशेषज्ञ राय, जो एक प्रमुख वित्तीय कॉलम में प्रकाशित हुई, मुद्रा अस्थिरता में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों और भविष्य की संभावनाओं को उजागर करती है।

मैट्स के कुलपति केपी यादव को विश्वगुरु की उपाधि

रायपुर | मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. केपी यादव को किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, (केएलसीयू) साउथ कैरोलीना, यूएसए ने विश्वगुरु का सम्मान प्रदान किया है। कुलपति प्रो. यादव भारत सहित नाइजीरिया, टोगो, घाना, केन्या के शोधार्थियों को अमेरिका की किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी के बैनर तले आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में शोध की बारीकियों से निरंतर अवगत करा रहे हैं। केएलसीयू ने प्रो. यादव को उनके कार्यों की सराहना करते हुए सम्मान-पत्र प्रदान किया एवं विश्वगुरु की उपाधि दी। केएलसीयू की शाखाएं तथा कैम्पस टेक्सास व साउथ अफ्रिका जैसे देशों में भी है। प्रो. यादव यसबड यूनिवर्सिटी, जाम्बिया, साउथ अफ्रिका के शोधार्थियों को भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को "विश्वगुरु" की उपाधि से सम्मानित किया गया

एमएटीएस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. के. पी. यादव को किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, साउथ कैरोलाइना, यूएसए द्वारा प्रतिष्ठित "विश्वगुरु" की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

उन्हें यह सम्मान शिक्षा और अनुसंधान में उनके असाधारण योगदान के लिए प्रदान किया गया। उनका प्रभाव भारत से परे नाइजीरिया, केन्या और अन्य देशों के विद्वानों तक फैला हुआ है, जहाँ वे निरंतर शैक्षणिक मार्गदर्शन और मेंटरशिप प्रदान कर रहे हैं।

मैट्स के कुलपति प्रो. के.पी. यादव को अमेरिका ने दी विश्वगुरु की उपाधि

भारत सहित विश्व के अनेक देशों के शोधार्थियों को ऑनलाइन सिखा रहे शोध की बारीकियां

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य व देश के लिए यह गौरव का विषय है कि मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के.पी. यादव को किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, (के.एल.सी.यू.) साउथ कैरोलीना, यूएसए ने विश्वगुरु का सम्मान प्रदान किया है। विश्वविद्यालय परिवार ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया है।

मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर के कुलपति प्रो. के.पी. यादव भारत सहित नाइजीरिया, टोगो, घाना, केन्या के शोधार्थियों को अमेरिका की किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी के बैनर तले आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में शोध की बारीकियों से निरंतर अवगत करा रहे हैं। केएलसीयू ने 5 अक्टूबर को प्रो. के.पी. यादव को उनके कार्यों की सराहना करते हुए सम्मान-पत्र प्रदान किया एवं विश्वगुरु की उपाधि दी। के.एल.सी.यू की शाखाएँ तथा कैम्पस टेक्सास व साउथ अफ्रिका जैसे देशों में भी है। प्रो. यादव यसबड यूनिवर्सिटी, जाम्बिया, साउथ अफ्रिक्रा के शोधार्थियों को भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। प्रो. यादव विद्यार्थियों को कम्यूनिटी रिसर्च सहित शोध प्राक्कल्पना, शोध साहित्य का पूर्वावलोकन, शोध पद्धति, डाटा विश्लेषण, रिसर्च डिस्कशन एवं शोध परिणाम की बारीकियों से अवगत कराते हैं। कुलपति प्रो. के.पी. यादव द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ राज्य एवं भारत का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के.पी. यादव राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नेक), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, एआईसीटीई (भारत सरकार), आईसीएआर, बार काउंसिल ऑफ इंडिया तथा लोक सेवा आयोग की विशेषज्ञ समिति के सदस्य के रूप में भी अपनी सेवाएँ देते रहे हैं। उन्होंने कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक्स, पर्यावरण के क्षेत्र में अब तक 19 किताबें लिखी हैं तथा राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 140 से भी ज्यादा शोध पत्र प्रकाशित व प्रस्तुत किये हैं। उन्हें 12 पेटेंट व कॉपीराइट प्राप्त हुए हैं।

भारत सरकार के विश्वगुरु की परिकल्पना के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण कदम है। इतिहास के पन्नो में भारत को विश्वगुरु यानी की विश्व को पढ़ाने वाला अथवा पूरी दुनिया का शिक्षक कहा जाता था, क्योंकि भारत के लोगों का ज्ञान इतना समृद्ध था कि पूर्व से लेकर पश्चिम तक सभी देश भारत के कायल थे। प्रो. के.पी. यादव जी की इस उपलब्धि पर मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति श्री गजराज पगारिया, महानिदेशक श्री प्रियेश पगारिया, उपकुलपति डॉ. दीपिका ढांढ, कुलसचिव श्री गोकुलानंदा पंडा सहित विश्वविद्यालय परिवार ने हर्ष व्यक्त कर अपनी शुभकामनाएँ दी हैं।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, नं.- 421 सेक्टर-सी, उरला, इंडस्ट्रीयल एरिया, रायपुर से मुद्रित एवं (विश्व परिवार निजालय) निकट शंकर

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को प्रतिष्ठित "विश्वगुरु" उपाधि से सम्मानित किया गया

शिक्षा और अनुसंधान में उनके असाधारण योगदान के सम्मान में, एमएटीएस विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. के. पी. यादव को किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, साउथ कैरोलाइना, यूएसए द्वारा प्रतिष्ठित "विश्वगुरु" उपाधि से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान उच्च शिक्षा में नवाचार, अकादमिक उत्कृष्टता, और विभिन्न विषयों में विद्वानों के मार्गदर्शन के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मैट्स के कुलपति प्रो केपी यादव को अमेरिका ने दी विश्वगुरु की उपाधि

भारत सहित विश्व के अनेक देशों के शोधार्थियों को ऑनलाइन सिखा रहे शोध की बारीकियां

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य व देश के लिए यह गौरव का विषय है कि मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के.पी. यादव को किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, (के.एल.सी.यू.) साउथ कैरोलीना, यूएसए ने विश्वगुरु का सम्मान प्रदान किया है। विश्वविद्यालय परिवार ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया है।

मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर के कुलपति प्रो. के.पी. यादव भारत सहित नाइजीरिया, टोगो, घाना, केन्या के शोधार्थियों को अमेरिका की किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी के बैनर तले आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में शोध की बारीकियों से निरंतर अवगत करा रहे हैं। केएलसीयू ने 5 अक्टूबर को प्रो. के.पी. यादव को उनके कार्यों की सराहना करते हुए सम्मान-पत्र प्रदान किया एवं विश्वगुरु की उपाधि दी। के.एल.सी.यू की शाखाएँ तथा कैम्पस टेक्सास व साउथ अफ्रिका जैसे देशों में भी है। प्रो. यादव यसबड यूनिवर्सिटी, जाम्बिया, साउथ अफ्रिका के शोधार्थियों को भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

प्रो. यादव विद्यार्थियों को कम्यूनिटी रिसर्च सहित शोध प्राक्कल्पना, शोध साहित्य का पूर्वावलोकन, शोध पद्धति, डाटा विश्लेषण, रिसर्च डिस्कशन एवं शोध परिणाम की बारीकियों से अवगत कराते हैं। कुलपति प्रो. के.पी. यादव द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसग? राज्य एवं भारत का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के.पी. यादव राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नेक), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, एआईसीटीई (भारत सरकार), आईसीएआर, बार काउंसिल ऑफ इंडिया तथा लोक सेवा आयोग की विशेषज्ञ समिति के सदस्य के रूप में भी अपनी सेवाएँ देते रहे हैं।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को अमेरिकी विश्वविद्यालय द्वारा 'विश्वगुरु' उपाधि से सम्मानित किया गया

एमएटीएस विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. डॉ. के. पी. यादव को किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, साउथ कैरोलाइना, यूएसए द्वारा प्रतिष्ठित 'विश्वगुरु' उपाधि से सम्मानित किया गया।

यह सम्मान वैश्विक शिक्षा, अनुसंधान और अकादमिक नेतृत्व में उनके असाधारण योगदान को मान्यता देता है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोगों के माध्यम से, उन्होंने भारत, नाइजीरिया, टोगो, घाना, केन्या और कई अन्य देशों के विद्वानों को मार्गदर्शन प्रदान किया है, जिससे उन्होंने विश्वभर में उच्च शिक्षा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव: ड्रोन डांस प्रतियोगिता के मुख्य निर्णायक

एमएटीएस विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने इंटरनेशनल एविएशन गेम्स बोर्ड, इंडिया द्वारा आयोजित सेंट्रल इंडिया रैंकर्स ड्रोन डांस प्रतियोगिता में मुख्य निर्णायक की भूमिका निभाई।

उनकी शैक्षणिक और तकनीकी नेतृत्व क्षमता आधुनिक शिक्षा में नवाचार को प्रेरित करती है, जिससे युवा प्रतिभाओं को नई तकनीकों के प्रति प्रोत्साहन मिलता है।

Literary consortium on Indian Literature: Evolution and Impact held

Raipur, Jan 29: The Department of English, MATS School of Arts and Humanities, under the flagship of 'International MATS Forum for Promotion of Languages, Literature And Media Studies' (IMFPLMS) On Saturday organized a national literary consortium on "Indian Literature: Evolution and Impact".

Dr. Deepika Dhand traced the impact of colonization in the development of English language education worldwide. VC Professor K.P. Yadav commended the recent promotion and establishment of English medium schools in Chhattisgarh. He emphasized on the various complexities of Indian Literatures owing to its linguistic diversity and cultural plurality. He also suggested the developments of special centres for the growth of Indian Regional Literatures.

The keynote speaker Prof.Kalpana Paul sketched out the evolution of Indian Writings in English from the colonial period till date. She emphasized on the indispensable position of Indian Literature in World Literatures today, owing to the rich literary scholarship of prominent Indians from the likes of Rabindranath Tagore, Swami Vivekananda, Dr. B.R. Ambedkar to contemporary writers like Salman Rushdie, Arundhati Roy and many more. Dr. Paul also acknowledged the limitations of Indian English Literature, especially its development at the cost of the marginalization of indigenous vernacular literatures.

Renowned scholar Dr. Maske Siddharth Shrihari analyzed the emergence of public spheres in Maharashtra and how these spatial structures contributed to the oppression and social exclusion of women and Dalits. Dr. Maske delineated the role of marginal literatures in the voicing of oppressed voices and breaking the silence against gender and caste discrimination in India. The concluding session of the day was presided over by scholar Dr. Prashant Ingole whose discussion centered around the growing fields of Translation Studies, Comparative Literature, Cinema and Media Studies. Dr. Ingole examined the influences of Oral Literature in the growth of cinema studies. He explained the importance of cinema studies in changing the discourse around caste, untouchability and gender studies in India today.

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने राष्ट्रीय संघ में साहित्यिक प्रगति की सराहना की

एमएटीएस विश्वविद्यालय में आयोजित "भारतीय साहित्य: विकास और प्रभाव" विषयक साहित्यिक संघ के दौरान, प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने छत्तीसगढ़ में अंग्रेजी माध्यम शिक्षा में हुई प्रगति की सराहना की।

उनके विचारों ने साहित्य की भूमिका को सांस्कृतिक विविधता और अकादमिक विकास को बढ़ावा देने के महत्वपूर्ण कारक के रूप में रेखांकित किया, जिससे क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर समृद्ध चर्चा को प्रेरणा मिली।

City भास्कर

रायपुर, मंगलवार 22 फरवरी, 2022

मैट्स यूनिवर्सिटी का दूसरा दीक्षांत समारोह, 40 स्टूडेंट को बांटे गोल्ड और सिल्वर मेडल
राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डॉ. अजीत डोभाल ने बतौर मुख्य वक्ता छात्रों को किया संबोधित

आजादी का संघर्ष, देश की सुरक्षा, आर्थिक उन्नति सभी के केन्द्र में रहे हैं युवाः डोभाल

सिटी रिपोर्टर, रायपुर

मैट्स यूनिवर्सिटी ने आरंग स्थित परिसर में दूसरा दीक्षांत समारोह रखा। समारोह में अलग-अलग स्ट्रीम के 40 स्टूडेंट्स को गोल्ड और सिल्वर मेडल से नवाजा गया। बतौर मुख्य वक्ता आमंत्रित राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डॉ. अजीत डोभाल ने वीडियो मैसेज से स्टूडेंट्स को संबोधित किया। उनकी स्पीच पूरी तरह युवाओं को समर्पित रही। उन्होंने कहा, विश्व निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने कई सामाजिक, आर्थिक चुनौतियों को जन्म दिया है। देश के युवाओं ने चुनौतियों को अवसरों में परिवर्तित कर दिखाया। कम समय में कोरोना वैक्सीन की खोज, बड़ी संख्या में टीकाकरण, नवीन तकनीकी का उपयोग कर व्यवसाय, शिक्षा आदि क्षेत्रों में चुनौतियों का सामना करना युवा शक्ति का उदाहरण है।

उन्होंने कहा, किसी भी राष्ट्र में बदलाव का आधार युवा शक्ति होती है। आजादी का संघर्ष हो, देश की सुरक्षा का विषय हो, आर्थिक उन्नति या समाजिक परिवर्तन हो, युवा ही केंद्र-बिन्दु रहा है। भारत में बड़ा हिस्सा युवाओं का है। अगले 30-35 सालों में चीन, अमेरिका, जापान जैसे देश उम्रदराज होती जनसंख्या से जूझ रहे होंगे वहीं युवा शक्ति हमारे लिए जनसांख्यिकी लाभांश का एक महत्वपूर्ण बिन्दु रहेगी।

राज्यपाल अनुसुइया उइके और मंत्री उमेश पटेल ने बांटी डिग्री।

छात्रों को बेहतर इंसान बनाएं संस्थानः राज्यपाल

दीक्षांत समारोह की मुख्य अतिथि राज्यपाल अनुसुइया उइके ने कहा, स्टूडेंट्स को किताबी ज्ञान और उपाधि देना ही शिक्षक-धर्म नहीं है, बल्कि उनमें नव-चेतना का जागरण कर उनका सर्वांगीण विकास करना है। हर शैक्षणिक संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए कि देश के छात्रों को बेहतर और संपूर्ण इंसान बनाएं। समारोह में शामिल उच्च शिक्षा, तकनीकी, रोजगार कौशल मंत्री उमेश नंदकुमार पटेल ने कहा, छत्तीसगढ़ राज्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन की जरूरत है। हमें समय के साथ तकनीकों में भी बदलाव करने होंगे। इसके लिए योजना बनाई जा रही हैं। इसमें निजी शैक्षणिक संस्थाओं की भी भागीदारी होगी।

जीवन में जो भी राह चुनें समाज व राष्ट्रहित में हो

डॉ. अजीत डोभाल ने कहा, आप सभी युवाओं को भारत की उन्नति के लिए सक्रिय प्रतिभागी बनना होगा। आप सभी जीवन के अगले पड़ाव में कदम रखने जा रहे है। जीवन में कोई भी राह चुनें, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो भी निर्णय लें, जो भी कार्य करें वह आपके व्यक्तिगत हितों के साथ-साथ सामाजिक व राष्ट्र हित में होना आवश्यक है। आज मुझे अपने छात्र जीवन का स्मरण हो रहा है। विश्वविद्यालय न सिर्फ शैक्षणिक ज्ञान व कौशल प्रदान करता है बल्कि व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समारोह में छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के अध्यक्ष डॉ. शिववरण शुक्ल, मैट्स विवि के कुलाधिपति गजराज पगारिया, कुलपति प्रो. केपी यादव, प्रियेश पगारिया, डॉ. दीपिका ढांड, कुलसचिव गोकुलनंदा पंडा सहित अन्य मौजूद रहे।

एमएटीएस विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह में प्रो. डॉ. के. पी. यादव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव ने एमएटीएस विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह में भाग लिया, जहां 40 छात्रों को स्वर्ण और रजत पदक प्रदान किए गए।

इस विशेष अवसर पर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डॉ. अजीत डोभाल ने सभा को संबोधित किया और युवाओं की भूमिका को राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और प्रगति में महत्वपूर्ण बताया।

प्रो. यादव ने स्नातकों की उपलब्धियों और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की सराहना की, उन्हें भविष्य में राष्ट्रनिर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

Become powerful source in the task of nation-building: Ajit Doval

Governor highlights importance of good value system, study of various branches of learning

Convocation of MATS University held

Raipur, Feb 21: The keynote speaker, Ajit Doval, National Security Advisor to the Prime Minister of India and Kirtichakra while congratulating the students said that he was reminded of his student days. Knowing yourself is wisdom he said and gave a motivating speech calling the students to become a powerful source in the task of nation building where the youth needs to play an important role.

Her Excellency, Shushri Anusuiya Uikey in her convocation address expressed her happiness in the fact that MATS University had invited a great and inspiring personality like Shri Ajit Doval ji to speak to the graduating batch. She highlighted the importance of a good value system along with the study of various branches of learning. She also praised the works done in Gullu the village adopted by MATS University . The Governor also released the MATS University Booklet.

The keynote speaker was Ajit Kumar Doval, National Security Advisor to the Prime Minister of India and the Chief Guest was Ms Anusuiya Uikey, the Governor of Chhattisgarh who is also the Visitor of MATS University. The other esteemed guests included, Umesh Nandkumar Patel, the Higher Education Minister of Chhattisgarh as the Guest of Honour Gajraj Pagariya , the Chancellor, Dr. Shiv Varan Shukl, the Chairman of the Chhattisgarh Private Universities Rugulatory Commission, Dr. K P Yadav , the Vice - Chancellor, Priyesh Pagarira, the Director General of the university, Dr. Deepika Dhand, the Pro- Vice Chancellor, Gokulananda Panda, the Registrar, members of the Governing Body and the members of the Academic Council.

The day began with the ceremonial procession of the guests to the Convocation Hall where the national anthem marked the beginning of this solemn ceremony. This was followed by the lighting of the lamp, the rendering of the Saraswati Vandana, and the felicitation of the guests with books , a tradition of MATS University. The entire ceremony was conducted by the Registrar, Shri Gokulnanda Panda.

After the procession and the inauguration of the convocation, the Vice Chancellor in his welcome address and requested Her Excellency, the Governor of Chhattisgarh to declare the convocation open. In his welcome address, the Vice Chancellor, Professor Dr.K P Yadav welcomed everyone to join in the celebrations of the achievements of the batch of 2020-2021. He spoke about how this batch completed its studies during the pandemic and how the university was quick to change to the online mode of teaching, learning and evaluation. As the Governor declared the convocation open, the respected Chancellor, Shri Gajraj Pgariya, administered the oath to all the graduating students.

The students pledged to use their knowledge for the honour and dignity of their country and to endeavour to bring about the glory of the university. After this the Vice Chancellor admitted the students to get their degrees in the streams of Education, Commerce, Management, Science, Information Technology, Library Science, Arts, Humanities, Engineering, Physical Education and Law. The degree certificates and gold medals were awarded by the Governor, Shushri Anusuiya Uikey and the Minister for Higher Education of Chhattisgarh, Shri Umesh Nandkumar Patel.

After the award of the degrees, the Honourable Chancellor Gajraj Pagariya, addressed the audience . In his address he expressed the joy of meeting students of the university years after they have passed out and are successful in their fields of research. He also spoke about how MATS University supports the less privileged students in their pursuit of higher education by offering them scholarships and by taking care to enhance their skills.

Shiv Varan Shukl, the Chairman of Private University Regulatory Commission, Government of Chhattisgarh addressed the convocation. He said that learning does not end with this convocation but continues lifelong. The Guest of Honour Umesh Nandkumar Patel, Minister for Higher Education of Chhattisgarh was the next to speak. He said that we need to update our education system so that higher education would be accessible to all. He also promised new policies that would be introduced very soon by the government.

Mementos were presented to all the dignitaries. After the Vote of Thanks by the Registrar he also requested the Governor to close the Convocation . As she did the same, the national anthem was sung once more and the procession led by the Governor left the Convocation Hall.

This marked the end of the celebrations of the academic achievements of the students and a beginning of a new chapter of their life's journey which will take them to a larger campus of the world.

The 21st of February, 2022 was a landmark day for the class of 2020 -2021 of MATS University. The day marked the Convocation Ceremony of the University in which 848 graduates, 319 post graduates, 7 MPhil, and 28 PhD degrees were conferred. 59 students received gold medals for their outstanding performance. The class of 20-21 has been a special batch. They were the first to adapt to the online mode of teaching and write exams in the same mode. The pandemic did effect their learning experience, denied them the joys of classroom learning and the rich experiences of campus life, but they were quick to adapt themselves to the sudden changes and did their best with whatever the changed times brought about. In recognition of their achievements, the convocation ceremony was held at the rural campus of the university at Gullu, Arang.

एमएटीएस विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में प्रो. डॉ. के. पी. यादव और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डॉ. अजीत डोभाल

प्रो. डॉ. के. पी. यादव, एमएटीएस विश्वविद्यालय के कुलपति, ने दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की, जहां राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डॉ. अजीत डोभाल ने छात्रों को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में स्नातकों को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया, जिसमें ज्ञान, नैतिकता और राष्ट्र सेवा के मूल्यों पर जोर दिया गया।

प्रो. यादव ने एमएटीएस विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता और नेतृत्व विकास के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित किया, जिससे छात्रों को भविष्य में प्रभावशाली लीडर बनने के लिए प्रेरणा मिली।

TheHitavada
Raipur City Line | 2022-02-22 | Page- 4
ehitavada.com

Convocation Ceremony held at Mats University

■ Staff Reporter
RAIPUR, Feb 21

THE 21st of February was a landmark day for the academic session 2020-21 of Mats University. The day marked the Convocation Ceremony in which 848 graduates, 319 Post Graduates, 7 M Phil and 28 PhD degrees were conferred.

A total of 59 students received gold medals for their outstanding performance. Governor Anusuiya Uikey graced the ceremony as chief guest while National Security Advisor to the Prime Minister was the keynote speaker. The students conferred with degree were the first to adapt to the online mode of teaching and exams. In recognition of their achievements, the convocation ceremony was held at the rural campus of the university at Gullu, Arang.

Governor Anusuiya Uikey and Higher Education Minister Umesh Nandkumar Patel presenting degree certificate to a student during the convocation ceremony.

Higher Education Minister Umesh Nandkumar Patel was the Guest of Honour. Chancellor of the varsity Gajraj Pagariya, Chairman of the Chhattisgarh Private Universities Regulatory Commission Dr Shiv Varan Shukl, Vice Chancellor Dr K P Yadav, Director General Priyesh Pagariya, Pro-Vice Chancellor Dr Deepika Dhand, Registrar Gokulananda Panda along with members of the Governing Body and the Academic Council were also present on the occasion.

The ceremony commenced with ceremonial procession of the guests to the Convocation Hall. This was followed by lighting of the lamp, rendering of Saraswati Vandana and the felicitation of the guests with presentation of books. The entire ceremony was conducted by Registrar Gokulananda Panda.

In his welcome address, the Vice Chancellor Professor Dr K P Yadav welcomed everyone to join the celebrations.

As the Governor Anusuiya Uikey declared the convocation open, Chancellor Gajraj Pagariya administered the oath to all the graduating students.

Later Governor Anusuiya Uikey and Higher Education Minister Umesh Nandkumar Patel awarded degree and gold medals to the successful students. It was followed with address by the Chancellor Gajraj Pagariya.

It was followed by the virtual speech by Security Advisor to Prime Minister Ajit Doval. Mementos were presented to all the dignitaries followed with a vote of thanks.

एमएटीएस विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में प्रो. डॉ. के. पी. यादव

प्रो. डॉ. के. पी. यादव, एमएटीएस विश्वविद्यालय के कुलपति, ने दीक्षांत समारोह का नेतृत्व किया, जिसमें गवर्नर अनुसुइया उइके और उच्च शिक्षा मंत्री उमेश नंदकुमार पटेल की उपस्थिति में 848 स्नातकों को डिग्रियां प्रदान की गईं।

इस समारोह में शैक्षणिक उत्कृष्टता का उत्सव मनाया गया, जिसमें 59 छात्रों को स्वर्ण पदक उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए प्रदान किए गए।

प्रो. यादव ने शिक्षा के राष्ट्र निर्माण और भविष्य के नेताओं को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया और विश्वविद्यालय की गुणवत्ता शिक्षा और प्रगतिशील विकास के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

एजुकेशन प्लस

मैट्स यूनिवर्सिटी को मिली NAAC A+ की मान्यता

रायपुर | मैट्स यूनिवर्सिटी ने नैक ए-प्लस मान्यता प्राप्त करने वाला पहला निजी विश्वविद्यालय बनकर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। संस्थान के मुताबिक यह मान्यता शिक्षा में उत्कृष्टता के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। नैक ने विश्वविद्यालय का कठोर निरीक्षण किया, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम, प्रक्रिया, अनुसंधान, बुनियादी ढांचा और शासन सहित विभिन्न मानदंडों पर इसके प्रदर्शन का मूल्यांकन किया गया। मान्यता प्रक्रिया गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान और सामुदायिक जुड़ाव के मानकों को पूरा करने की संस्थान की क्षमता का आकलन करती है। नैक ए-प्लस प्रमाणपत्र आधिकारिक तौर पर कुलाधिपति गजराज पगारिया, कुलपति प्रो. केपी यादव और महानिदेशक प्रियेश पगारिया ने राज्यपाल रमेन डेका को प्रदान किया। राज्यपाल ने इस अवसर पर मैट्स विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की प्रशंसा की।

मेट्स यूनिवर्सिटी को प्रतिष्ठित NAAC A+ मान्यता प्राप्त

मेट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव ने गर्वपूर्वक घोषणा की कि विश्वविद्यालय को प्रतिष्ठित NAAC A+ मान्यता प्रदान की गई है—जो शैक्षणिक उत्कृष्टता की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

इस मान्यता के साथ, मेट्स यूनिवर्सिटी राज्य की पहली निजी विश्वविद्यालयों में से एक बन गई है जिसे यह सम्मानजनक ग्रेड प्राप्त हुआ है।

प्रकाशित पुस्तकें - चयनित सूची

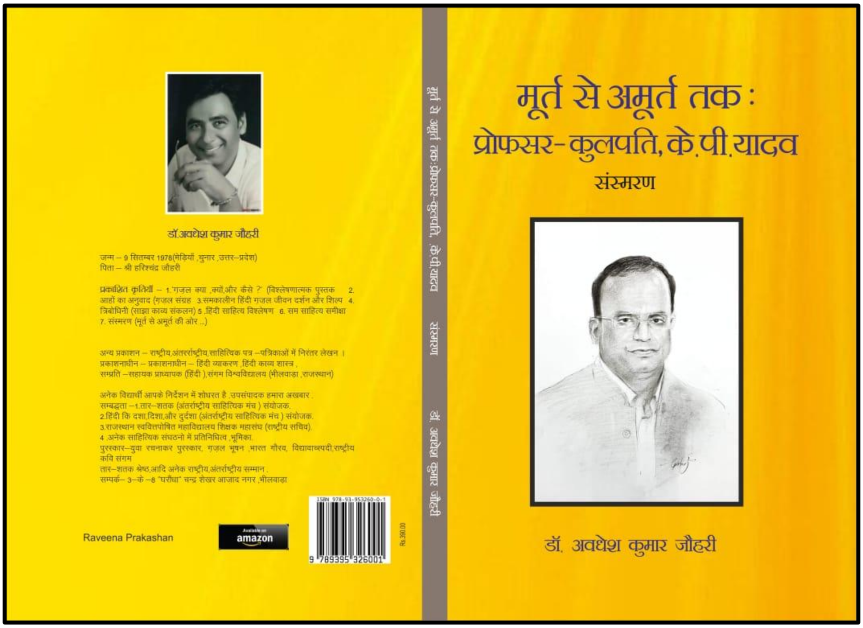

मूर्त से अमूर्त तक: प्रो. डॉ. के. पी. यादव को समर्पित

पुस्तक "मूर्त से अमूर्त तक", डॉ. अवधेश कुमार जौहरी द्वारा लिखित, प्रो. डॉ. के. पी. यादव के जीवन और विरासत को दर्शाती है। यह उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों, कुलपति के रूप में उनके नेतृत्व, और उच्च शिक्षा एवं शोध पर उनके प्रभाव को रेखांकित करती है। रवीना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक अब अमेज़न पर उपलब्ध है, जिससे पाठक प्रो. यादव की अद्वितीय यात्रा और योगदान को विस्तार से जान सकते हैं।

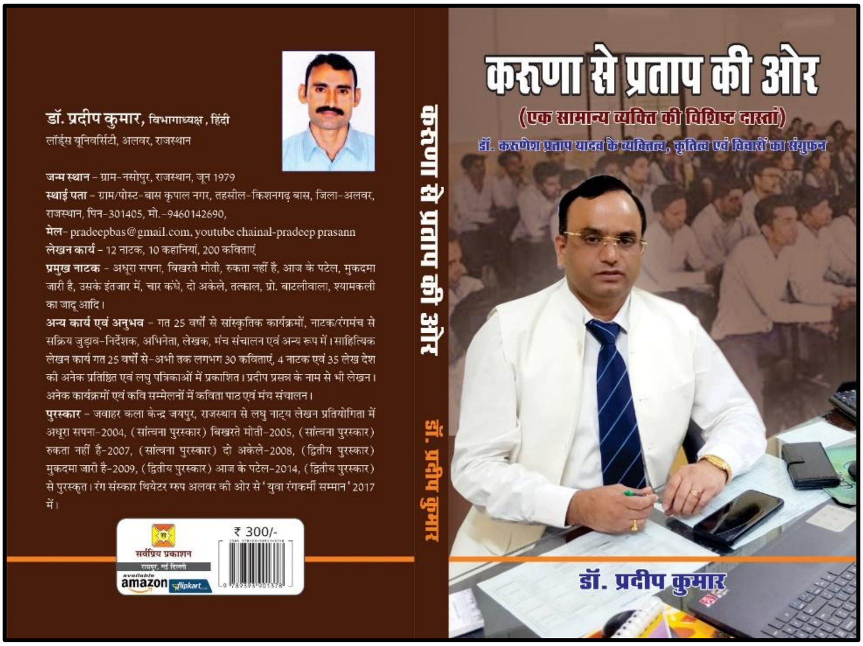

"करुणा से प्रताप की ओर: प्रो. डॉ. के. पी. यादव को समर्पित"

डॉ. प्रदीप कुमार द्वारा लिखित "करुणा से प्रताप की ओर" प्रो. डॉ. के. पी. यादव की प्रेरणादायक यात्रा का वर्णन करती है। यह पुस्तक उनकी शैक्षणिक नेतृत्व क्षमता, ज्ञान के प्रति प्रतिबद्धता, और शिक्षा एवं समाज में योगदान को उजागर करती है। यह उनकी दूरदृष्टि और समर्पण को समर्पित एक प्रेरणादायक श्रद्धांजलि है। अमेज़न और फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध यह पुस्तक पाठकों को उनकी प्रभावशाली विरासत को गहराई से समझने का अवसर प्रदान करती है।

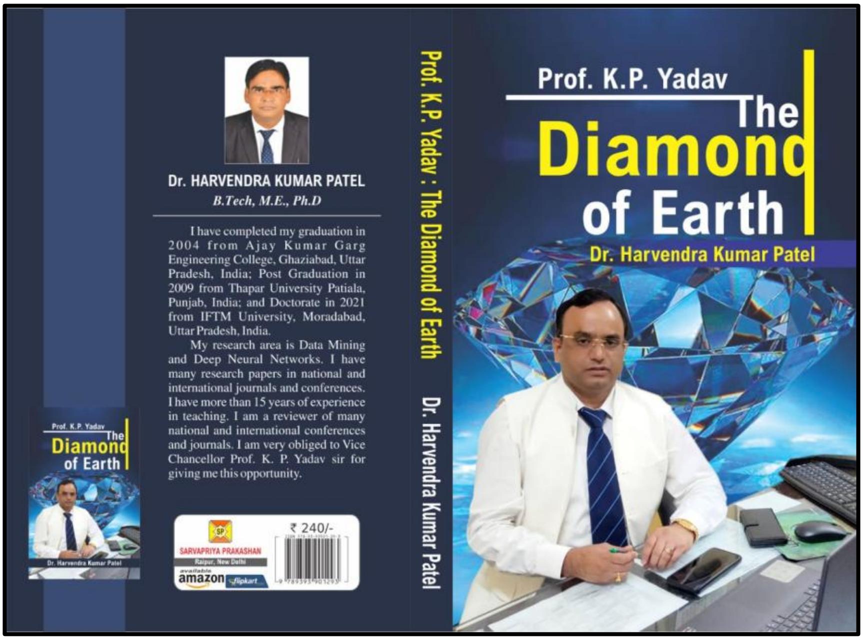

"प्रो. के. पी. यादव: द डायमंड ऑफ अर्थ – एक दूरदर्शी नेता को नमन "

डॉ. हरवेंद्र कुमार पटेल द्वारा लिखित "द डायमंड ऑफ अर्थ" प्रो. के. पी. यादव को समर्पित एक प्रेरणादायक श्रद्धांजलि है। यह पुस्तक शिक्षा, शोध और नेतृत्व में उनके असाधारण योगदान को रेखांकित करती है। उच्च शिक्षा और तकनीकी नवाचारों के क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हुए, यह पुस्तक उन सभी के लिए पठनीय है जो उनकी दूरदृष्टि और समर्पण से प्रेरित हैं। यह पुस्तक उनके नेतृत्व और सहयोग - समर्पण को दर्शाती है जिससे उनके साथ जुड़ा कोई भी साधारण ब्यक्ति, असाधारण प्रगति कर सकता है ।

अमेज़न और फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध।

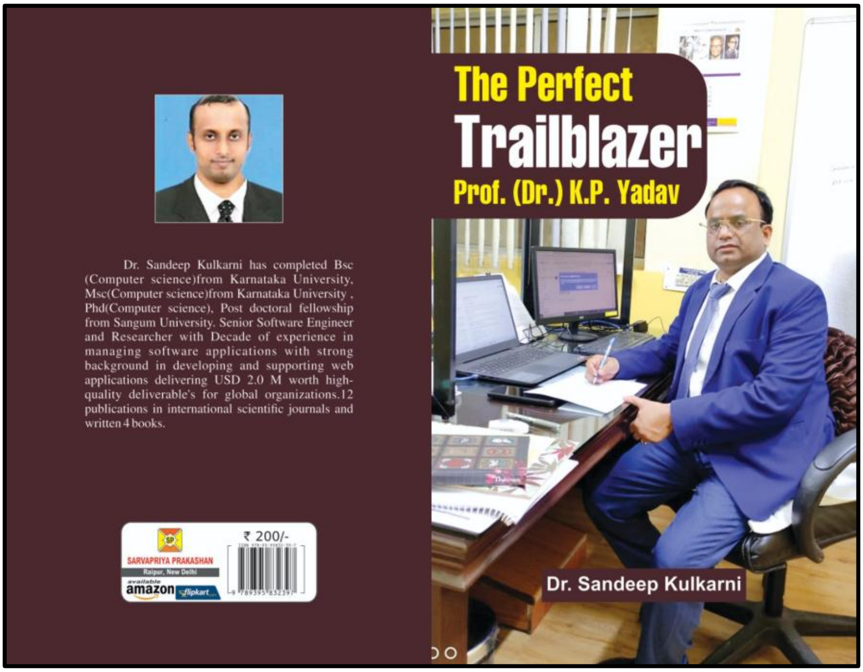

"द परफेक्ट ट्रेलब्लेज़र: प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव की विरासत को सम्मान"

डॉ. संदीप कुलकर्णी द्वारा लिखित "द परफेक्ट ट्रेलब्लेज़र" प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव के असाधारण नेतृत्व, शैक्षणिक योगदान और प्रभावशाली शोध को उजागर करती है। यह पुस्तक उच्च शिक्षा, तकनीकी नवाचारों और मार्गदर्शन में उनकी अग्रणी भूमिका का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है।

जो लोग उनकी दूरदृष्टि और समर्पण से प्रेरित हैं, उनके लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ने योग्य है।

अमेज़न और फ्लिपकार्ट पर अब उपलब्ध।

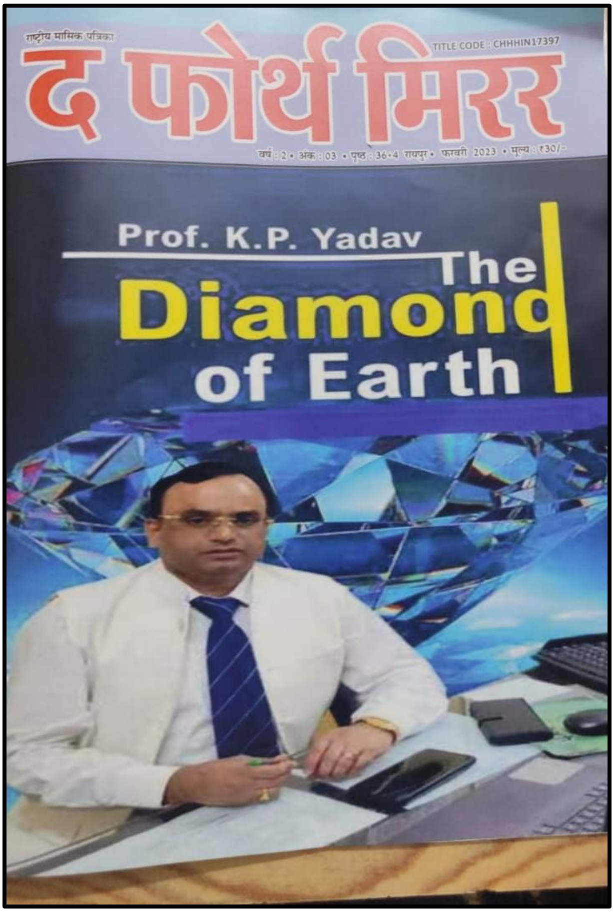

"प्रो. के. पी. यादव: द डायमंड ऑफ अर्थ – 'द फोर्थ मिरर' में फीचर्ड"

प्रो. के. पी. यादव को "द डायमंड ऑफ अर्थ" के रूप में The Fourth Mirror में सम्मानित किया गया है, जो शैक्षणिक जगत, शोध और नेतृत्व में उनके अप्रतिम योगदान का उत्सव मनाता है।

उनकी दूरदर्शी सोच और शिक्षा एवं नवाचार के प्रति समर्पण आज भी वैश्विक स्तर पर विद्वानों को प्रेरित कर रहा है।

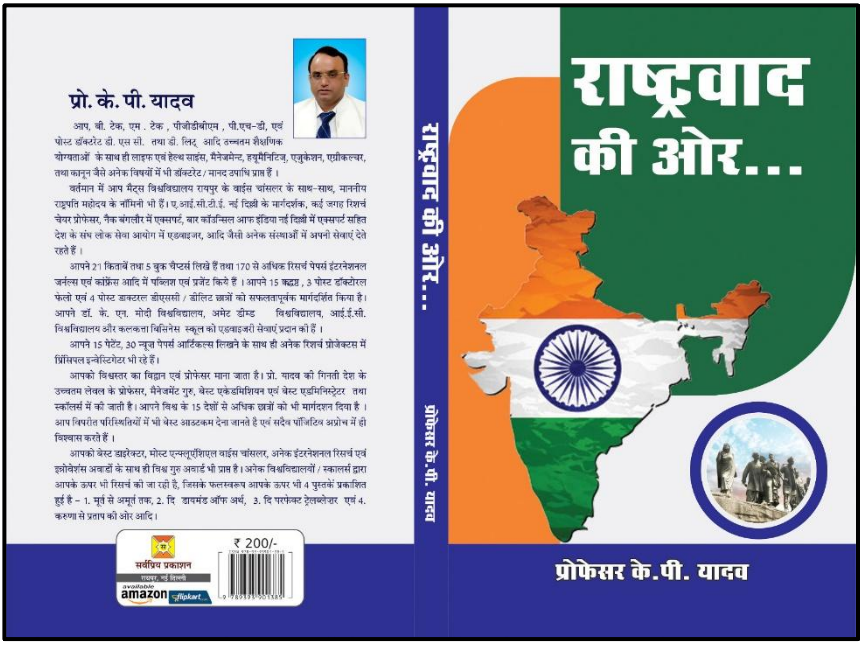

"प्रो. के. पी. यादव की राष्ट्रवाद की दृष्टि – 'राष्ट्रवाद की ओर...'"

प्रो. के. पी. यादव की पुस्तक "राष्ट्रवाद की ओर..." राष्ट्रवाद के सार को गहराई से समझाती है, जिसमें भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक पहलुओं को प्रमुखता दी गई है।

अपने विद्वत्तापूर्ण विचारों के माध्यम से, वे देशभक्ति, शासन व्यवस्था और युवाओं की भूमिका पर जोर देते हैं, जो एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में सहायक है।

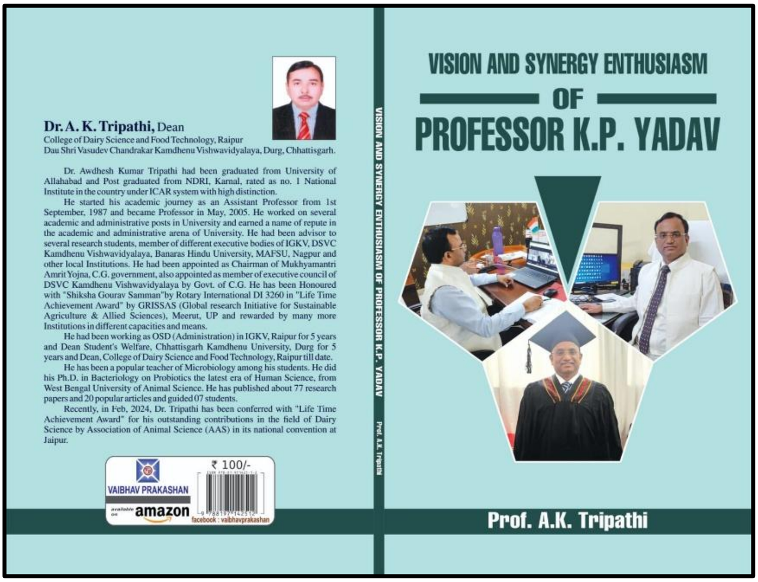

"विजन एंड सिनर्जी एंथुसियाज्म ऑफ प्रोफेसर के. पी. यादव" - एक परिवर्तनकारी नेता को समर्पित श्रद्धांजलि

प्रो. ए. के. त्रिपाठी द्वारा लिखित, "Vision and Synergy Enthusiasm of Professor K. P. Yadav" पुस्तक शिक्षा और अनुसंधान में प्रो. के. पी. यादव के असाधारण योगदान और नेतृत्व को उजागर करती है।

यह पुस्तक उनकी रणनीतिक दृष्टि, शिक्षा के प्रति समर्पण और संस्थागत विकास में प्रभाव को विस्तार से प्रस्तुत करती है।

अनुसंधान को बढ़ावा देने, विद्वानों का मार्गदर्शन करने और उच्च शिक्षा में नवाचार को प्रेरित करने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को इसमें विभिन्न अनुभवों और प्रेरणादायक घटनाओं के माध्यम से दर्शाया गया है।

यह पुस्तक छात्रों, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती है, यह दर्शाते हुए कि प्रो. यादव का प्रभावशाली नेतृत्व आज भी शिक्षा जगत के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

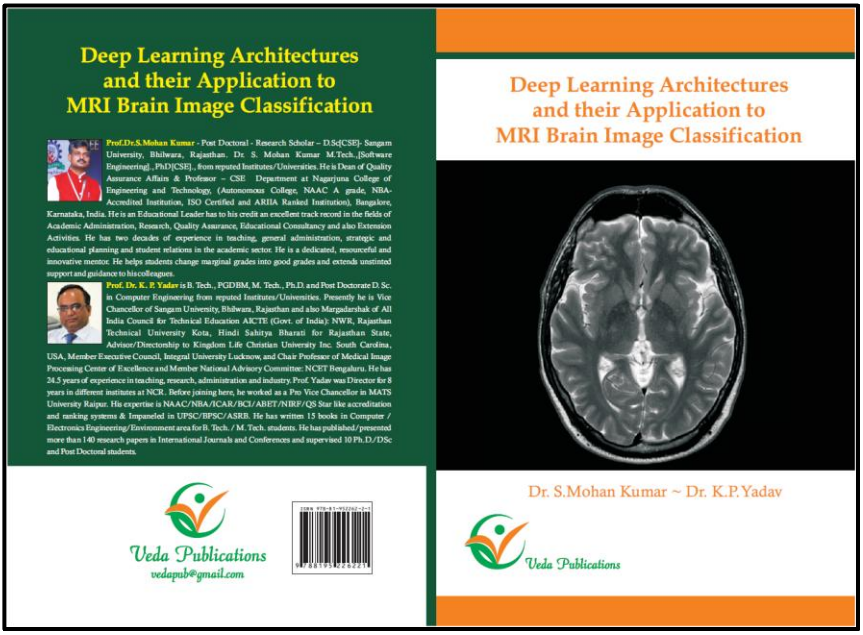

"डीप लर्निंग आर्किटेक्चर्स और एमआरआई ब्रेन इमेज क्लासिफिकेशन में उनका अनुप्रयोग" - मेडिकल एआई में एक क्रांतिकारी योगदान

डॉ. एस. मोहन कुमार और डॉ. के. पी. यादव द्वारा लिखित, यह पुस्तक डीप लर्निंग और मेडिकल इमेजिंग के संगम को गहराई से विश्लेषित करती है, विशेष रूप से एमआरआई-आधारित मस्तिष्क छवि वर्गीकरण पर केंद्रित है। दोनों लेखक कंप्यूटर विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मेडिकल इमेजिंग में वर्षों के अनुभव के साथ एक मजबूत शैक्षणिक आधार प्रस्तुत करते हैं।

यह पुस्तक अनुसंधानकर्ताओं, शिक्षाविदों और एआई-संचालित स्वास्थ्य देखभाल समाधानों में रुचि रखने वाले पेशेवरों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है, जो चिकित्सा क्षेत्र में डीप लर्निंग की संभावनाओं को उजागर करती है।

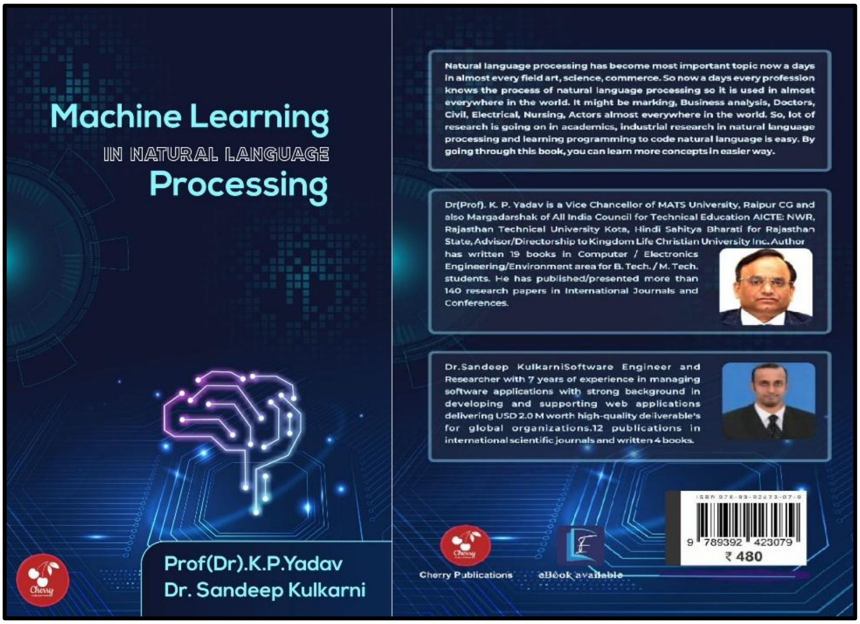

"नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग में मशीन लर्निंग" – एआई उत्साही लोगों के लिए एक क्रांतिकारी मार्गदर्शिका

प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव और डॉ. संदीप कुलकर्णी द्वारा लिखित, यह पुस्तक मशीन लर्निंग और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) के बीच की शक्तिशाली संगति की गहराई से पड़ताल करती है।

आज के एआई-संचालित नवाचारों में यह क्षेत्र एक महत्वपूर्ण आधारस्तंभ बन गया है। यह पुस्तक अनुसंधानकर्ताओं, शिक्षाविदों और एआई पेशेवरों के लिए एक आवश्यक अध्ययन सामग्री है, जो सैद्धांतिक अवधारणाओं और व्यावहारिक अनुप्रयोगों के बीच की खाई को पाटती है।

भाषाविज्ञान, स्वचालन और एआई-संचालित टेक्स्ट विश्लेषण में रुचि रखने वालों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है, जो मशीन लर्निंग को प्राकृतिक भाषा की समझ में बदलने की तकनीकों को विस्तार से समझाती है।

Awards & Accolades - Selective

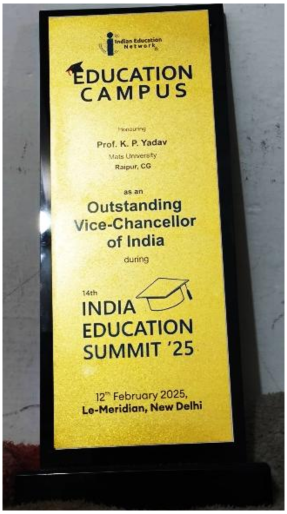

प्रो. के. पी. यादव "भारत के उत्कृष्ट कुलपति" सम्मान से सम्मानित!

भारतीय शिक्षा नेटवर्क द्वारा आयोजित इस प्रतिष्ठित सम्मान समारोह में, मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. डॉ. के. पी. यादव को उच्च शिक्षा, संस्थागत विकास और अकादमिक उत्कृष्टता में असाधारण योगदान के लिए "भारत के उत्कृष्ट कुलपति" के रूप में सम्मानित किया गया।

उनके नेतृत्व में, मैट्स यूनिवर्सिटी ने अनुसंधान, नवाचार और वैश्विक सहभागिता के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रो. यादव ने इस सम्मान को अपनी टीम, छात्रों और विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को समर्पित किया।

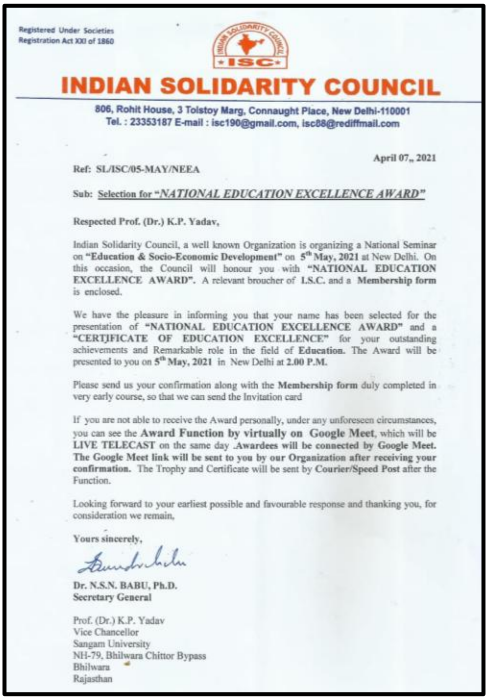

Registered Under Societies
Registration Act XXI of 1860

ISC

INDIAN SOLIDARITY COUNCIL

806, Rohit House, 3 Tolstoy Marg, Connaught Place, New Delhi-110001
Tel. : 23353187 E-mail : isc190@gmail.com, isc88@rediffmail.com

April 07,, 2021

Ref: SL/ISC/05-MAY/NEEA

Sub: Selection for "*NATIONAL EDUCATION EXCELLENCE AWARD*"

Respected Prof. (Dr.) K.P. Yadav,

Indian Solidarity Council, a well known Organization is organizing a National Seminar on **"Education & Socio-Economic Development"** on **5th May, 2021** at New Delhi. On this occasion, the Council will honour you with **"NATIONAL EDUCATION EXCELLENCE AWARD"**. A relevant broucher of **I.S.C.** and a **Membership form** is enclosed.

We have the pleasure in informing you that your name has been selected for the presentation of **"NATIONAL EDUCATION EXCELLENCE AWARD"** and a **"CERTIFICATE OF EDUCATION EXCELLENCE"** for your outstanding achievements and Remarkable role in the field of **Education.** The Award will be presented to you on **5th May, 2021** in New Delhi at **2.00 P.M.**

Please send us your confirmation along with the **Membership form** duly completed in very early course, so that we can send the Invitation card

If you are not able to receive the Award personally, under any unforeseen circumstances, you can see the **Award Function by virtually on Google Meet**, which will be **LIVE TELECAST** on the same day .**Awardees will be connected by Google Meet. The Google Meet link will be sent to you by our Organization after receiving your confirmation.** The Trophy and Certificate will be sent by **Courier/Speed Post** after the Function.

Looking forward to your earliest possible and favourable response and thanking you, for consideration we remain,

Yours sincerely,

Dr. N.S.N. BABU, Ph.D.
Secretary General

Prof. (Dr.) K.P. Yadav
Vice Chancellor
Sangam University
NH-79, Bhilwara Chittor Bypass
Bhilwara
Rajasthan

प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को "राष्ट्रीय शिक्षा उत्कृष्टता पुरस्कार" से सम्मानित किया गया!

इंडियन सॉलिडेरिटी काउंसिल ने शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को "नेशनल एजुकेशन एक्सीलेंस अवार्ड" से सम्मानित किया है। यह प्रतिष्ठित सम्मान उन्हें 5 मई 2021 को नई दिल्ली में आयोजित एक राष्ट्रीय सेमिनार में प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रो. यादव को एक एजुकेशन एक्सीलेंस प्रमाण-पत्र दान किया गया।

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को नेशनल एजुकेशन एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित

राजस्थान के भीलवाड़ा स्थित संगम यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए इंडियन सॉलिडैरिटी काउंसिल द्वारा "नेशनल एजुकेशन एक्सीलेंस अवार्ड" से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उनके शैक्षणिक नेतृत्व और शैक्षिक प्रगति में उल्लेखनीय भूमिका की सराहना करता है। यह सम्मान समारोह नई दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किया गया, जिसमें शिक्षा जगत के अनेक विशिष्ट विद्वानों और गणमान्य हस्तियों ने भाग लिया।

KINGDOM LIFE CHRISTIAN UNIVERSITY INC.
Membership: United Nations Academic Impact (UNAI),
United Nations Global Compact (UNGC)
Email: info@klcu.org Website: www.klcu.org
World Headquarters: 1133 Cambridge Oaks Dr. Columbia, SC 29223

05 October, 2021

To,
Prof. K P Yadav
VC Mats University
Raipur CG, India

Sub: Award and Recognition as
Global Guru/World Guru/Vishwa Guru/Teacher

Dear Sir,

On the basis of your profile and work/contribution done globally in the Research and Academic field, the organization is giving you above mentioned award/recognition.

With best wishes,

Dr. Godwin Osung
Founder

प्रो. डॉ. के. पी. यादव को किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी द्वारा "विश्व गुरु" सम्मान से नवाज़ा गया

वाशिंगटन डीसी, 5 अक्टूबर 2021:

एक प्रतिष्ठित वैश्विक सम्मान के रूप में, रायपुर के मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को अमेरिका स्थित किंगडम लाइफ क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी द्वारा "ग्लोबल गुरु/वर्ल्ड गुरु/विश्व गुरु/शिक्षक" पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनके शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया है। इस सम्मान के ज़रिये शिक्षा और शोध में उनकी अभूतपूर्व भूमिका और वैश्विक प्रभाव को स्वीकार किया गया है।

प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को ASSOCHAM समिट में अकादमिक एवं शोध नवाचार में उत्कृष्टता हेतु सम्मानित किया गया

नई दिल्ली, 13 मई 2022: 15वें अंतरराष्ट्रीय शिक्षा नेतृत्व एवं कौशल विकास शिखर सम्मेलन में रायपुर स्थित मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को अकादमिक एवं शोध नवाचार में उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार ASSOCHAM द्वारा शिक्षा एवं अनुसंधान में उद्योग-जगत के सहयोग से अभिनव नवाचारों तथा उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह आयोजन नई दिल्ली में आयोजित हुआ, जिसमें प्रतिष्ठित शिक्षाविदों और नीति-निर्माताओं की उपस्थिति रही।

प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को उच्च शिक्षा शिखर सम्मेलन में "वाइस चांसलर ऑफ द ईयर 2022" से सम्मानित किया गया।

नई दिल्ली, 27 अगस्त 2022:

दूसरे उच्च शिक्षा नवाचार एवं प्रौद्योगिकी शिखर सम्मेलन में रायपुर स्थित मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव को "वाइस चांसलर ऑफ द ईयर 2022" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें उच्च शिक्षा, तकनीकी नवाचार और शैक्षणिक उत्कृष्टता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रो. यादव की उच्च शिक्षा में उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता का परिचायक है।

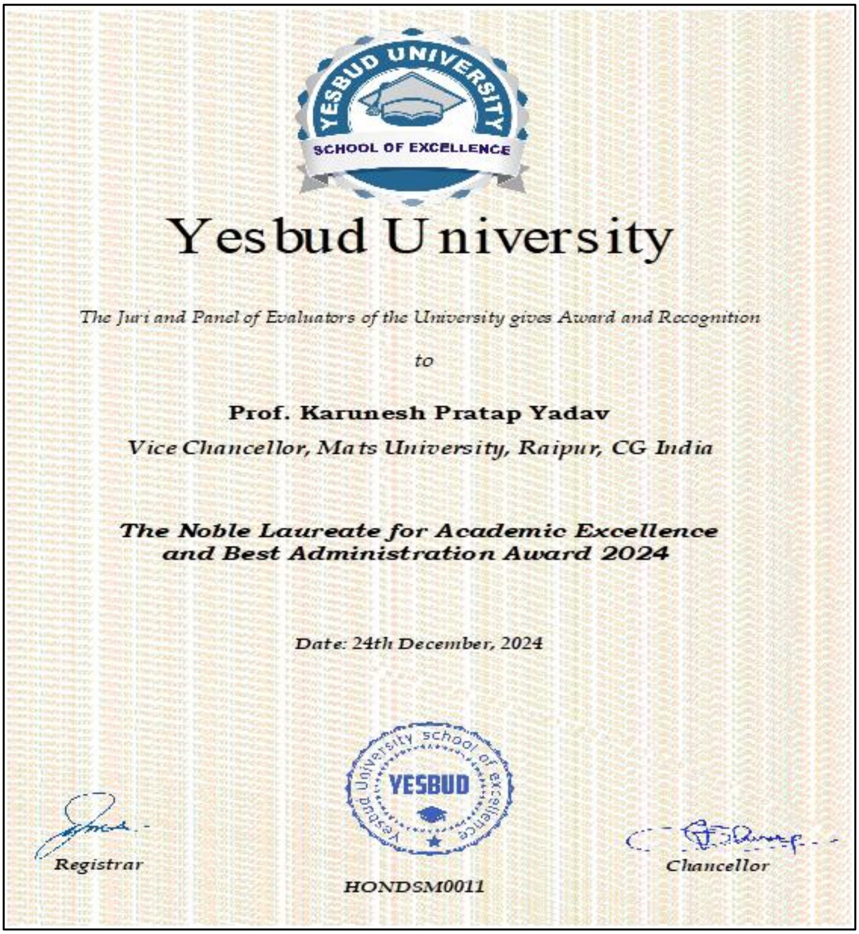

प्रोफ. के पी यादव को Yesbud यूनिवर्सिटी द्वारा विश्व प्रतिष्ठित नोबल लॉरिएट 2024 पुरस्कार से नवाजा गया |

"एक सच्ची विरासत वह होती है जो आने वाली पीढ़ियों को अपने सपनों की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करे।"

("A true legacy is one that inspires future generations to reach the heights of their dreams.")

चिंतन और भविष्य की दिशा

प्रो. डॉ. के. पी. यादव का जीवन और कार्य एक दूरदर्शी शिक्षाविद्, संस्थान निर्माता, सुधारक और सबसे बढ़कर एक सच्चे राष्ट्रभक्त की यात्रा को प्रतिबिंबित करता है, जिनकी "राष्ट्र प्रथम" की प्रतिबद्धता उनके समग्र अकादमिक और प्रशासनिक जीवन में अडिग रही है। यह यात्रा केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों की कहानी नहीं है, बल्कि यह शिक्षा को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, सामाजिक उत्थान और वैश्विक सहयोग के प्रभावी साधन में बदलने की एक रूपरेखा प्रस्तुत करती है।

1. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण

प्रो. यादव का सदैव यह विश्वास रहा है कि शिक्षा किसी भी समृद्ध राष्ट्र की रीढ़ होती है। उनके अकादमिक सुधार, संस्थागत विकास, और समावेशी शिक्षा के प्रति अटल समर्पण ने भारत के राष्ट्र निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। MATS विश्वविद्यालय और संगम विश्वविद्यालय में उनकी नेतृत्वकारी भूमिका के साथ-साथ माननीय राष्ट्रपति द्वारा नामांकित होकर वे देश की प्रमुख शैक्षणिक संस्थाओं में परिवर्तन के वाहक बने।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसमें बहुविषयक शिक्षा, अनुसंधान एकीकरण और अनुभवजन्य अधिगम पर बल दिया गया। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण, डिजिटल अधिगम प्रणाली, और स्मार्ट कक्षा जैसी अवधारणाओं के प्रति उनकी प्रतिबद्धता भारत के युवाओं को 21वीं सदी की वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करने के उनके भविष्यद्रष्टा दृष्टिकोण को दर्शाती है।

2. संस्थागत उन्नयन और वैश्विक मानकों की स्थापना

प्रो. यादव के शैक्षणिक सुधारों ने शैक्षणिक संस्थानों को "उत्कृष्टता केंद्र" में रूपांतरित कर दिया है। उन्होंने पाठ्यक्रम और अनुसंधान में AI, ब्लॉकचेन, और IoT जैसे उन्नत तकनीकी विषयों को शामिल कर भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाया। NAAC, NBA, NIRF जैसी मान्यताओं को प्राप्त करते हुए उन्होंने विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय रैंकिंग में भी उल्लेखनीय सुधार लाया।

संरचनात्मक विकास से परे, उन्होंने अकादमिक जीवन में नवाचार, नैतिकता और उद्देश्य की भावना को समाहित किया—ऐसे संस्थान निर्मित किए जो केवल शिक्षा नहीं देते, बल्कि प्रेरणा का स्रोत भी बनते हैं। उनका समग्र विकास का दृष्टिकोण—जहां आधारभूत संरचना, बौद्धिक पूंजी और नवाचार का सामंजस्य होता है—आज भी प्रशासकों और नीति-निर्माताओं का मार्गदर्शन कर रहा है।

3. सामाजिक समानता और समावेशी विकास के प्रबल समर्थक

प्रो. यादव ने यह भलीभांति समझा है कि सच्ची प्रगति सामाजिक समानता के बिना संभव नहीं है। उन्होंने ग्रामीण शिक्षा, वंचित छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजनाएं, और कौशल विकास कार्यक्रमों जैसी पहलों के माध्यम से समाज के हाशिये पर खड़े वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया है। STEM क्षेत्रों में महिला भागीदारी को बढ़ावा देना और शिक्षकों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम उनके परिवर्तनकारी दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

उन्होंने शिक्षा को एक ऐसा माध्यम बनाया है जिससे ग्रामीण और शहरी, संपन्न और निर्धन, पारंपरिक और आधुनिक के बीच की खाई पाटी जा सके। उनके मार्गदर्शन ने न केवल विद्वानों और शोधकर्ताओं को आकार दिया, बल्कि ऐसे

परिवर्तनकर्मी भी उत्पन्न किए जो एक न्यायसंगत और समावेशी भारत के उनके स्वप्न को साकार कर रहे हैं।

4. वैश्विक शिक्षा क्षेत्र में भारत की उपस्थिति को सशक्त बनाना

प्रो. यादव की उपलब्धियाँ केवल भारत तक सीमित नहीं हैं। उन्होंने अमेरिका, कनाडा, अफ्रीका और यूरोप की कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी कर भारतीय शिक्षा को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया है। भारत में Yesbud University (South Africa) के कंट्री हेड और Kingdom Life Christian University (USA) के सलाहकार के रूप में उनकी भूमिका उल्लेखनीय रही है।

“Global Guru,” “Vishwa Guru,” और “International Excellence” जैसे अंतरराष्ट्रीय सम्मान उनके प्रयासों की पुष्टि करते हैं। वैश्विक शिखर सम्मेलनों, नीति विमर्शों, और अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक पहलों में उनकी सक्रिय भागीदारी ने उन्हें भारतीय ज्ञान प्रणाली के सच्चे वैश्विक प्रतिनिधि के रूप में स्थापित किया है।

5. राष्ट्र प्रथम – एक प्रेरणादायक विचारधारा

उनकी यात्रा का मूल सूत्र है—**राष्ट्र प्रथम**। उनके द्वारा लागू की गई प्रत्येक नीति, प्रत्येक शैक्षणिक सुधार, और प्रत्येक छात्र whom they mentored, एक ही उद्देश्य को दर्शाता है—राष्ट्र की सेवा। उन्होंने शिक्षा को सतत विकास, ग्रामीण सशक्तिकरण, और प्रौद्योगिकी-आधारित शासन से जोड़ा है।

वे सदैव यह मानते रहे हैं कि भारत के विश्वविद्यालय मात्र ज्ञान के मंदिर न होकर समाज और राष्ट्र की आकांक्षाओं से जुड़े जीवंत संस्थान होने चाहिए। उनका यह विचार कि "एक मजबूत राष्ट्र कक्षा में बनता है" आज भी छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

6. एक जीवंत विरासत – आगे की राह

प्रो. डॉ. के. पी. यादव की विरासत पुरस्कारों और सम्मानों तक सीमित नहीं है—यह जीवित, विकसित होती और गतिशील विरासत है जो उनके द्वारा निर्मित संस्थानों, प्रशिक्षित विद्यार्थियों, और बनाई गई नीतियों के माध्यम से आगे बढ़ रही है। शैक्षणिक नवाचार, नैतिक नेतृत्व, वैश्विक सहयोग और समावेशी विकास उनके आदर्श रहे हैं, जो आज पहले से अधिक प्रासंगिक हैं।

जैसे-जैसे भारत "विश्वगुरु" की ओर अग्रसर हो रहा है, शिक्षा के अग्रदूत प्रो. यादव के जीवन से प्रेरणा लेते रहेंगे। उनका कार्य यह सिखाता है कि जब शिक्षा को दृष्टिकोण और मूल्य-आधारित बनाया जाए, तब वह राष्ट्रीय परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन सकती है।

निष्कर्ष

प्रो. यादव केवल एक शैक्षणिक नेता नहीं हैं—वे आधुनिक भारतीय शिक्षा के वास्तुकार हैं। उनका चिंतन भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है, और उनका मार्ग साहस, नैतिकता, और उत्कृष्टता की सतत खोज का आह्वान करता है। उनके दृष्टिकोण ने अनगिनत छात्रों, विद्वानों और प्रशासकों के मन में गहरी छाप छोड़ी है—जिससे भारत की शिक्षा प्रणाली का भविष्य प्रेरणादायक और सुरक्षित है।

उनका भविष्य के युवाओं के लिए संदेश है:

"उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व करें, उत्साहपूर्वक सीखें, और गर्व के साथ राष्ट्र की सेवा करें—क्योंकि आपका ज्ञान ही आपके देश की सबसे बड़ी शक्ति है।"

अनुभाग 6:
संदर्भ ग्रंथ सूची

"जो ज्ञान दूसरों के विकास के लिए साझा न किया जाए, वह मात्र एक संचित संपत्ति है।"

("Knowledge that is not shared for the growth of others is merely hoarded wealth.")

"अगर आपकी उपलब्धियां केवल आपके जीवनकाल तक सीमित हैं, तो वह विरासत नहीं, केवल सफर है।"

("If your achievements last only within your lifetime, they are just a journey, not a legacy.")

Bibliography

1. AICTE. (2018). Technology policy and research initiatives in India. Indian Science Review, 19(6), 150-175.

2. AICTE. (2023). Accreditation and Leadership Contributions of Prof. K. P. Yadav in Higher Education Reforms. Retrieved from https://www.aicte-india.org

3. AICTE. (2023). Outcome-based education and accreditation guidelines for Indian universities. All India Council for Technical Education.

4. Amazon Books. (2025). Pioneering the Future in Quantum Computing: An Advance Application Perspective (Second Series of Quantum Computing) by Prof. (Dr.) Bhavana Narain and Prof. (Dr.) K. P. Yadav. Retrieved from Amazon India

5. Association of Indian Universities (AIU). (2021). India's Role in Global Education: Policy and Institutional Reforms. Retrieved from https://www.aiu.ac.in

6. Beg, T., & Krishnan, K. P. (2017). *Indo-Arab Relations: Partnership in Development*. Hardcover.

7. Bonner, S. M. (2020). The role of active learning in higher education: Best practices for engaging students. Routledge.

8. Brookfield, S. D. (2017). Becoming a critically reflective teacher. Jossey-Bass.

9. Central University of America, Bolivia. (2021). Honorary award recipients in management and technology. University Research Bulletin, 29(4), 98-115.

10. Central University of America, Bolivia. (2021). Honorary Doctorate Awardees. University Press.

11. Chandrakar, O., & Yadav, K. P. (2024). *Transforming India through NEP 2020: A Comprehensive Exploration of the National Education Policy*. Kindle Edition.

12. Collins, A., & Halverson, R. (2018). Rethinking education in the digital age: A new framework for learning. Harvard University Press.

13. Dweck, C. S. (2016). Mindset: The new psychology of success. Random House.

14. European Cybersecurity Conference. (2022). Keynote address by Prof. K. P. Yadav on digital security challenges. Conference Reports, 18(3), 220-245.

15. Google Scholar. (n.d.). Publications and Research Citations of Prof. (Dr.) K. P. Yadav. Retrieved from https://scholar.google.co.in/citations?hl=en&user=gN84CV0AAAAJ

16. Government of India, Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Retrieved from https://www.education.gov.in/nep2020

17. Government of India, Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Retrieved from https://www.education.gov.in

18. Govil, M. C., & Singh, D. (2017). Wireless communication security: Future challenges and solutions. Journal of Wireless Systems, 25(3), 112-130.

19. Govil, M. C., & Singh, D. (2021). Next-generation research in AI and its global impact. Research Advances in AI, 27(2), 122-150.

20. Graham, C. R., Henrie, C. R., & Gibbons, A. S. (2021). Blended learning systems: Definition, current trends, and future directions. Journal of Research on Technology in Education, 49(2), 134-156.

21. IEEE India. (2022). International Elite Academician Award for Excellence in Research and Innovation - Prof. Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://www.ieee.org

22. IEEE. (2015). Wireless communication: A global perspective. IEEE Wireless Communications, 22(7), 190-215.

23. IEEE. (2019). Machine learning and artificial intelligence: Future prospects. IEEE Machine Learning Journal, 21(6), 155-180.

24. IEEE. (2022). *International Elite Academician Award: Prof. Dr. K. P. Yadav*.

25. IEEE. (2023). Innovative Leadership in Education: The Role of Technology and Research Integration. IEEE Transactions on Education, 66(1), 34-49.

26. IEEE. (2023). Wireless networking innovations by leading researchers. Wireless Engineering Journal, 30(2), 89-110.

27. IIS University. (2016). Seminar on 'Core Metrics in Software Engineering' by Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://csit.iisuniv.ac.in/seminar-core-metrics-software-engineering-dr-k-p-yadav-0

28. Indian Institute of Information Technology (IIIT) Tiruchirapalli. (2023). Executive Council Members. Retrieved from https://www.iiitt.ac.in

29. Indian Institute of Information Technology (IIIT). (2016, September 3). Seminar on Core Metrics in Software Engineering by Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://csit.iisuniv.ac.in/seminar-core-metrics-software-engineering-dr-k-p-yadav-0

30. InSc Awards. (n.d.). Research Excellence and Achievements of Prof. (Dr.) K. P. Yadav. Retrieved from https://www.insc.in/awards/singleinfo.php?tid=2276

31. Institution of Engineers (India). (2024). Recognizing Excellence: Awards in Education and Research Leadership. Retrieved from https://www.ieindia.org

32. Institution of Engineers India. (2024). Excellence in Leadership Award 2024 - Prof. K. P. Yadav. Retrieved from https://www.ieindia.org

33. International Computing Society. (2020). Most influential researchers in computer science. Computing Research Reports, 35(2), 100-135.

34. International Conference on AI and Cybersecurity. (2023). Keynote lecture by Prof. K. P. Yadav on future security challenges. Conference Proceedings, 5(2), 250-265.

35. International Journal of Computing. (2020). Prof. K. P. Yadav's contributions to cybersecurity and artificial intelligence. Special Issue on AI Security, 15(2), 120-140.

36. Jauhari, A. K. (2022). Murt Se Amurt Tak: Prof. K. P. Yadav. Lucknow, India: Pratap Publications.

37. Khabar Gali. (2022). Vice Chancellor of MATS University, Prof. K. P. Yadav Honored for Contributions to Education and Research. Retrieved from https://khabargali.com/index.php/tags/vice-chancellor-mats-university-prof-kp-yadav

38. Khabargali News. (2022, July 11). Vice Chancellor of MATS University Prof. K. P. Yadav: Citizen Rights and Complete Freedom are Still Expected – Prof. Yadav. Retrieved from https://khabargali.com/index.php/tags/vice-chancellor-mats-university-prof-kp-yadav

39. Kumar, S. (2023). The role of academic leaders in shaping policy and research-driven education: A case study on Prof. K. P. Yadav. Higher Education Policy Review, 8(2), 55-72.

40. Kumar, V., & Sharma, D. (2019). The impact of project-based learning on student engagement and knowledge retention. IEEE Transactions on Education, 66(1), 145-160.

41. LinkedIn. (n.d.). Professional Profile of Prof. Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://in.linkedin.com/in/prof-dr-k-p-yadav-7197b5178

42. MATS University. (2022). Academic achievements and recognitions of Prof. K. P. Yadav. University Archives.

43. MATS University. (2024). Academic excellence and research impact: The contributions of Vice Chancellor Prof. K. P. Yadav. University Research Bulletin, 12(1), 30-50.

44. MATS University. (2024). Academic Leadership and Institutional Development by Prof. K. P. Yadav. Retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=WT8MR4tfqQY

45. MATS University. (2024). Brief Profile: Prof. (Dr.) K. P. Yadav (Vishwa Guru). Retrieved from https://matsuniversity.ac.in/image/biodata.pdf

46. MATS University. (2024). *Prof. Dr. K. P. Yadav: A Life of Academic Excellence*. Retrieved from https://matsuniversity.ac.in/image/biodata.pdf

47. MATS University. (2024). Vice Chancellor's Vision for Higher Education. Retrieved from https://www.matsuniversity.ac.in

48. MATS University. (n.d.). Vice Chancellor's Profile – Prof. Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://matsuniversity.ac.in/image/biodata.pdf

49. Mishra, P., & Koehler, M. J. (2020). Technological pedagogical content knowledge (TPACK): Advancing digital learning strategies. Educational Technology Research and Development, 68(4), 305-323.

50. Narain, B., & Yadav, K. P. (2024). *Women Empowerment Then and Now: The Glimpses of Signora*. Kindle Edition.

51. Narain, B., & Yadav, K. P. (2025). Pioneering the Future in Quantum Computing: An Advance Application Perspective (Second Series of Quantum Computing). Kindle Edition.

52. National Board of Accreditation (NBA). (2022). Accreditation Standards and Quality Benchmarking in Higher Education. Retrieved from https://www.nbaind.org

53. National Education Policy. (2020). National Education Policy 2020: A framework for educational transformation in India. Ministry of Education, Government of India.

54. Pandey, S. C., & Tripathi, S. N. M. (2018). *Bharat Ke Aparampragat Suraksha: Chunautiyan Aur Vikalp*. Paperback.

55. Patel, H. K. (2023). Prof. K. P. Yadav: The Diamond of Earth. Jaipur, India: Global Research Publications.

56. Prof. Dr. K. P. Yadav. (2023). *A Visionary in Education and Research* [Blog post]. Retrieved from https://profkpyadav.blogspot.com/2023/01/am-prof.html

57. Prof. K. P. Yadav Blog. (2023). Personal Achievements and Recognitions of Prof. Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://profkpyadav.blogspot.com/2023/01/am-prof.html

58. Rajesh, R. (2018). Building bridges between academia and industry: A case study on curriculum alignment. International Journal of Higher Education Development, 9(3), 74-89.

59. Sharma, N., & Gupta, A. (2021). Transforming pedagogy through AI-driven digital learning environments. Educational Technology & Society, 25(2), 58-79.

60. Sharma, R. & Verma, P. (2022). Value-based learning and leadership in education: Perspectives from India. International Journal of Educational Ethics, 7(2), 90-108.

61. Shodh Samagam. (2023). A Man of Vision and Mission: Prof. Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://shodhsamagam.com/uploads/issues_tbl/1727507279-Man-of-Vision-and-Mission-Prof-Dr-K-P-Yadav.pdf

62. Singh, D., & Yadav, K. P. (2018). Building secure AI-driven ecosystems. AI and Security Journal, 7(4), 112-135.

63. Singh, R., & Yadav, K. P. (1993). Emerging trends in computer science education. Journal of Engineering Studies, 15(1), 30-42.

64. Singh, R., & Yadav, K. P. (2009). Algorithmic enhancements for complex system processing. Elsevier Journal of Computational Systems, 18(3), 92-110.

65. Singh, Y., & Yadav, K. P. (2012). Optimizing machine learning models for neural network applications. Machine Learning Journal, 8(2), 75-98.

66. Singh, Y., & Yadav, K. P. (2021). Artificial intelligence and automation: The next frontier. IEEE Automation Journal, 16(5), 89-112.

67. Tripathi, A. K. (2023). Social reconstructionism in Indian higher education: The impact of Prof. K. P. Yadav's leadership. Journal of Social & Educational Policy, 11(3), 66-85.

68. Tripathi, A. K. (2023). Vision and Synergy Enthusiasm of Prof. K. P. Yadav. New Delhi, India: Academic Excellence Publishers.

69. Tripathi. "MATS University Has Achieved a Remarkable Milestone by Becoming the First Private University to Receive NAAC A+ Accreditation. This Prestigious Recognition is a Testament to the University's

Commitment to Excellence in Education." *Clean Article*, 26 Mar. 2025, cleanarticle.com/mats-university-has-achieved-a-remarkable-milestone-by-becoming-the-first-private-university-to-receive-naac-a-accreditation-this-prestigious-recognition-is-a-testament-to-the-universitys-commitme/.

70. University Grants Commission (UGC). (2023). Impact of Leadership in Education: The Role of Prof. Dr. K. P. Yadav in Institutional Development. Retrieved from https://www.ugc.ac.in

71. University of California, Berkeley. (2020). Influential computer scientists of the decade. Academic Insights, 33(1), 88-102.

72. World Book of Records. (2021). *Certificate of Commitment Against COVID-19: Prof. Dr. K. P. Yadav*.

73. World Science Forum. (2021). Global contributions of Indian scientists in AI and cybersecurity. Science Journal, 24(7), 200-225.

74. WorldWide Peace Organization. (n.d.). Academic and Research Impact of Prof. (Dr.) K. P. Yadav. Retrieved from https://www.wwpo.org/assets/bios/guru.html

75. Yadav, K. P. (1996). Artificial intelligence applications in cybersecurity. IEEE Transactions on Cybersecurity, 14(4), 211-225.

76. Yadav, K. P. (2012). Advanced computational intelligence: Algorithms and system optimization. International Journal of Computer Science Research, 10(2), 45-59.

77. Yadav, K. P. (2016). Big data analytics and its role in predictive modeling. Big Data Journal, 14(3), 72-90.

78. Yadav, K. P. (2017). Integrating computational theories in modern AI-driven applications. Springer AI Review, 20(1), 55-72.

79. Yadav, K. P. (2017). *Philosophy of Geeta and Its Relevance in Indian Constitution*. Kindle Edition.

80. Yadav, K. P. (2018). The future of cloud computing and its impact on data security. Journal of Cloud Security, 11(5), 180-205.

81. Yadav, K. P. (2019). Inclusive and accessible education for a sustainable future. Global Journal of Educational Policy and Reform, 6(1), 15-29.

82. Yadav, K. P. (2019). Integrating research and teaching in higher education: A new paradigm for academic

excellence. Journal of Advanced Academic Studies, 7(1), 27-41.

83. Yadav, K. P. (2019). *Material Science and Engineering*. Kindle Edition.

84. Yadav, K. P. (2020). Neural network-based approaches in image recognition. Journal of AI and Robotics, 8(1), 100-120.

85. Yadav, K. P. (2021). Education and innovation: Fostering entrepreneurial mindsets in universities. Journal of Educational Leadership, 10(4), 78-94.

86. Yadav, K. P. (2022). Bridging the gap between academia and industry: A case study on curriculum development. International Journal of Education and Development, 6(4), 75-92.

87. Yadav, K. P. (2022). Bridging the gap: Industry-academia collaborations for a knowledge-based economy. International Journal of Higher Education Research, 15(3), 45-62.

88. Yadav, K. P. (2022). Cybercrime and security. VSRD Academic Publishing.

89. Yadav, K. P. (2022). Developing a research-oriented curriculum: Challenges and solutions in higher education

institutions. Journal of Advanced Academic Studies, 5(1), 29-48.

90. Yadav, K. P. (2022). Integrating research and teaching in higher education: A new paradigm for academic excellence. Journal of Advanced Academic Studies, 7(1), 27-41.

91. Yadav, K. P. (2022). Learning in natural language processing. Amazon Kindle Direct Publishing.

92. Yadav, K. P. (2022). Machine Learning in Natural Language Processing. Kindle Edition.

93. Yadav, K. P. (2022). Mentorship and Leadership in Higher Education: A Case Study on Transformative Teaching Approaches. International Journal of Higher Education Research, 18(2), 125-145.

94. Yadav, K. P. (2022). Strategies to prevent construction delays: A handbook on making strategic decisions in handling delays in construction projects. Amazon Kindle Direct Publishing.

95. Yadav, K. P. (2022). Study on empirical review of energy optimization in heterogeneous WSN. International Journal of Research in Engineering and Applied Sciences, 6(2), 50-65.

96. Yadav, K. P. (2022). The impact of AI-driven automation on modern economies. Economic Review, 17(5), 75-95.

97. Yadav, K. P. (2023). A Man of Vision and Mission: Prof. Dr. K. P. Yadav. Shodhsamagam. Retrieved from https://shodhsamagam.com/uploads/issues_tbl/1727507279-Man-of-Vision-and-Mission-Prof-Dr-K-P-Yadav.pdf

98. Yadav, K. P. (2023). Bridging Academia and Industry: A Transformative Approach to Higher Education Policy. New Delhi: Academic Press India.

99. Yadav, K. P. (2023). Transforming education through leadership and policy: A new paradigm for nation-building. MATS University Press.

100. Yadav, K. P. (2024). Brief Profile of Prof. (Dr.) K. P. Yadav (Vishwa Guru). MATS University. Retrieved from https://matsuniversity.ac.in/image/biodata.pdf

101. Yadav, K. P. (2024). *Machine Learning in Natural Language Processing*. Kindle Edition.

102. Yadav, K. P. (2025). *Pioneering the Future in Quantum Computing: An Advanced Application Perspective*. Bhavana Narain & K. P. Yadav. Kindle Edition.

103. Yadav, K. P., & Dhapekar, N. K. (2024). *Modeling of Recycled Aggregate Concrete Using Programming Languages*. Kindle Edition.

104. Yadav, K. P., & Govil, M. C. (2019). Cybersecurity and data protection in the digital age. Cybersecurity Journal, 26(4), 88-110.

105. Yadav, K. P., & Kulkarni, S. (2022). Machine Learning in Natural Language Processing. Kindle Edition.

106. Yadav, K. P., & Kulkarni, S. (2024). *Theory of Innovations*. Kindle Edition.

107. Yadav, K. P., & Sharma, P. (2015). Wireless security models and their applications. Security Review, 9(3), 130-152.

108. Yadav, K. P., & Shende, A. (2022). Artificial neural network (ANN) models for prediction of steel fibre-reinforced concrete strength. In Advances in Civil Engineering (pp. 123-134). Springer.

109. Yadav, K. P., & Shende, A. (2022). Exponential mathematical model for prediction of steel fibre reinforced concrete flexural strength by using three independent pi terms. International Journal of Engineering Research and Technology, 11(2), 44-58.

110. Yadav, K. P., & Shende, A. (2022). Prediction of steel fibre reinforced concrete (SFRC) strength using artificial neural network (ANN) models, response surface methodology (RSM) models and their comparative study. European Journal of Molecular & Clinical Medicine, 9(3), 42-55.

111. Yadav, K. P., & Singh, R. (2019). Bridging the gap between technology and management: A new paradigm. Journal of Management Innovations, 10(4), 56-78.

112. Yadav, K. P., & Singhal, A. K. (2021). *Strategies to Prevent Construction Delays: A Handbook on Strategic Decisions in Handling Delays in Construction Projects*. Kindle Edition.

113. Yesbud University. (2024). Country Head and Advisory Contributions of Prof. Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://www.yesbuduniversity.org

114. YouTube - Prof. Dr. K. P. Yadav. (2023). Awards and Recognitions Ceremony - Prof. Dr. K. P. Yadav. Retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=WT8MR4tfqQY

115. YouTube. (2023). Research and Technological Innovations by Prof. K. P. Yadav. Retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=WT8MR4tfqQY

116. YouTube. (2024). *Interview with Prof. Dr. K. P. Yadav on Innovation and Research Excellence* [Video]. Retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=WT8MR4tfqQY

117. YouTube. (2024). *Lecture by Prof. Dr. K. P. Yadav on AI in Education and Research* [Video]. Retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=RI51TKDkuVA

शिक्षक की विरासत उसके ज्ञान में नहीं, बल्कि उस प्रेरणा में होती है जो वह आने वाली पीढ़ियों में नेतृत्व, सेवा और राष्ट्र निर्माण के लिए छोड़ जाता है।"

"The true legacy of a great educator lies not in knowledge alone, but in the inspiration they leave behind to lead, serve, and build the nation”

Prof. (Dr.) S. MOHAN KUMAR
M.Tech.[Software Engineering].,
Ph.D [CSE-Medical Diagnosis CAD System].,
Ph.D [Medical Imaging -Machine Learning].,
Post Doctorate Degree D.Sc. [Engineering-Deep learning]., EPLM (IIM-Calcutta).,
D.Litt (Honorary)

FIIPE, FIFERP, Senior Member CSI, Senior Member IEEE (Comp. Soc & Edu. Soc), MIE, MIETE, MISTE, MIACSIT, MIAENG, MSSI, MACCS, Member Data Science Association

प्रो. (डॉ.) एस. मोहन कुमार एक विशिष्ट शिक्षाविद् और दूरदर्शी प्रशासक हैं, जिन्हें 20 वर्षों से अधिक का शिक्षण अनुभव प्राप्त है। वर्तमान में वे तमिलनाडु के इन्द्रा गणेशन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (स्वायत्त) में प्रोफेसर और डीन के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने इससे पहले सीनियर प्रोफेसर, डीन एवं रिसर्च और इनोवेशन तथा क्वालिटी एश्योरेंस के निदेशक, उद्योग संबंधों के प्रमुख और चेयर प्रोफेसर जैसे प्रमुख पदों पर कार्य किया है, साथ ही सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का नेतृत्व भी किया है।

शिक्षण पद्धति, अनुसंधान और शैक्षणिक प्रशासन में गहरी विशेषज्ञता रखने वाले डॉ. मोहन कुमार ने कई पीएच.डी., पोस्ट-डॉक्टोरल और डी.एससी. शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन किया है। वे एक माइक्रोसॉफ्ट सर्टिफाइड प्रोफेशनल हैं और आईआईएससी में प्रशिक्षित विशेषज्ञ हैं। उन्होंने NPTEL/SWAYAM के नौ लीडरशिप और तकनीकी पाठ्यक्रमों को एलाइट और सिल्वर सर्टिफिकेशन के साथ पूरा किया है।

उनके शैक्षणिक योगदान में 150 से अधिक शोध पत्र, 10 स्वीकृत पेटेंट और 12 पुस्तकों का लेखन शामिल है। उनके नेतृत्व में संस्थान ने NAAC A+, NBA, ISO, IAO, QS और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों तथा रैंकिंग में पहचान प्राप्त की है, साथ ही उन्हें 25 से अधिक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें "डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर एंड साइंटिस्ट अवार्ड (2025)" शामिल है।

वे QMS, EMS, ISMS-ISO मानकों में प्रमाणित लीड ऑडिटर भी हैं। उन्होंने 89 नीति दस्तावेज, 150 से अधिक एमओयू और अंतरराष्ट्रीय सहयोग सफलतापूर्वक लागू किए हैं, जिससे नवाचार और संस्थागत उत्कृष्टता को बढ़ावा मिला है।

DOI: 10.47715/978-93-86388-96-4
ISBN: 978-93-86388-96-4
Jupiter Publications Consortium
www.jpc.in.net

ISBN 978-93-86388-96-4
9 789386 388964